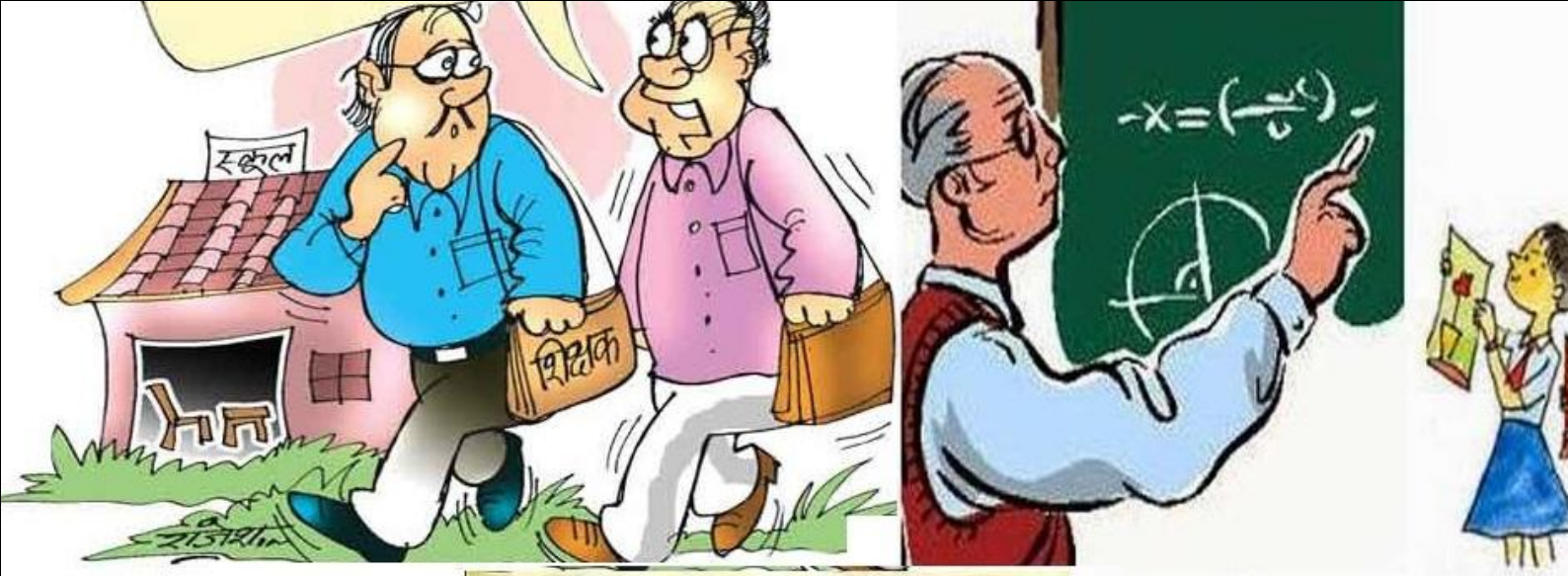

मुजरिम कौन ?

रघुवंश मिश्रा

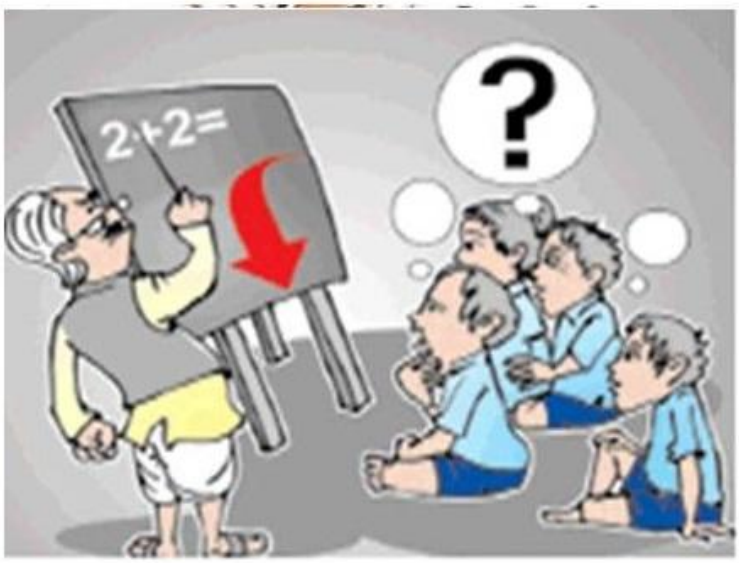

आलोक प्रकाशन

मुजरिम कौन ?

C - 2018 रघुवंश मिश्रा

आलोक प्रकाशन

प्रस्तावना

धीरज से आगे बढ़े

प्रिय शिक्षक मित्रों,

वर्तमान परिपेक्ष्य मे लर्निंग आउटकम्स पर अधिक जोर दिया जा रहा है। ऐसा नही है कि यह कोई अपरिचित या नया शब्द है जिसे शिक्षक समुदाय पहली बार सुन रहे हैं। नव परिवर्तन के साथ इसका अस्तित्व उसी दिन से बना हुआ है जिस दिन से शिक्षा का अस्तित्व हैं। हाँ इसके प्राप्त करने के तरीके और उस पर दिये जाने वाले जोर पर मात्रात्मक और गुणात्मक भिन्नता जरुर आई है। कक्षावार,विषयवार लर्निंग आउटकम्स को चिन्हांकित कर एक निश्चित समयावधि में प्राप्त करने का लक्ष्य शिक्षक समुदाय के मध्य रखा गया और यही शिक्षको के लिए चिंता का कारण बन गया हैं। अधिकांष शिक्षको के मन में इस बात को लेकर संषय है कि अगर ऐसा नही हुआ तो क्या होगा,इसके लिए जिम्मेंदार कौन होगा?

मैंने अपने इस पुस्तक मुजरिम कौन? में इन्ही प्रष्नो का उत्तर देने का प्रयास किया हैं। काल्पनिक परिस्थिति को आधार बनाते हुए कहानी के माध्यम से यह स्पष्ट करने की कोशिष की गई है कि लर्निंग आउटकम्स की प्राप्ति किन-किन कारको पर निर्भर करती है? और अगर एक शिक्षक को इसके लिए पूर्ण रुप से जिम्मेदार माना जाए तो उसके व्यक्तिगत, सामाजिक और पारिवारिक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ सकता है?

अंत में आप सभी से अनुरोध है कि बिना किसी संषय अथवा भय के,धैर्य के साथ आगे बढ़ते रहे और लर्निंग आउटकम्स की प्राप्ति में सहायक बनें।

धन्यवाद !

रघुवंश मिश्रा

(1)

मार्च महीने का दूसरा सप्ताह समाप्त होने को था। गर्मी ने भी धीरे धीरे दस्तक देना आरंभ कर दिया था। स्कूलों में सभी कक्षाओं की सभी विषयों की पढाई पूर्ण कर ली गई थी। सामान्य रूप से मार्च के महीने में रामनाथ शुक्लाजी जल्दी घर आ जाते थे। एक तो उनकी उम्र भी अब सेवानिवृत्त के करीब आ गई थी , बडे मुश्किल से 3-4 साल ही बचे थे और दूसरा घर से उनके स्कूल की दूरी लगभग 20 किमी की थी। लेकिन आज शुक्ला जी करीब शाम के छरू बजे तक घर नहीं पहुंचे तो उनकी पत्नी जानकी को चिन्ता सताने लगी। अपने मन में उठ रही तरह तरह की आशंकाओं के समाधान के लिये वह अपने बेटे मनीष से बोली. बेटा मनीष । जरा अपने पिताजी को फोन लगाकर पूछो तो अभी तक घर कैसे नहीं आया है? कहीं अपने किसी दोस्त के साथ शहर तो नहीं चला गया? अब धीरे धीरे अंधेरा भी छाने लगी है। आजकल तुम्हारे पिताजी को दिखाई भी कम दे रहा है। कब से बोल रही हूं कि डॉक्टर के पास जाकर दिखा आओ, पर सुनते ही कहां है। जब देखो अपने मन से करना है। और चिन्ता इस आदमी को बनी रहती है।

अपने मॉ के चुप होने पर मनीष बोला. अरे पिताजी को फोन करने से कुछ फायदा नहीं अम्मा। उधर से बस हैलो हैलो ही बोलते रहता है। मैं जब भी फोन लगाता हूं ऐसा ही होता है। इसी कारण अब तो फोन लगाना ही बंद कर दिया हूं।

ओ तो ठीक है बेटा। तुम्हारे पिताजी जहां पर रहते होंगे वहां कनेक्शन नहीं मिलता होगा और बेचारे को साफ-साफ सुनाई नहीं देता होगा। नहीं तो जो आदमी हैलो हैलो बोल सकता है क्या वह तुम्हारी बातों का जवाब नहीं देता- जानकी मनीष को समझाते हुये बोली।

मनीष. मैं मानता हूं अम्मा कि कनेक्शन नहीं रहने पर आवाज कट कट के आती है या सुनाई भी नहीं देता। पर ऐसा नहीं होता। लेकिन पिताजी के साथ यह हमेशा ही होता है और पिताजी है कि यह भी नहीं सोंचते कि चलो तो देखूं कौन.कौन लगा रहा था? किस कारण से लगा रहा था?

जानकी. क्या करोगे बेटा। तुम्हारे पिताजी कभी कभी मुझे बतलाते हैं कि आजकल स्कूल में इतना ज्यादा काम है कि किसी और काम के बारे में सोंचने का फुरसत ही नहीं मिलता। कभी कभी काम करते करते फोन आती हैए तब उठाने का भी मन नहीं करता।

मनीष. अम्मा। मैं यह भी बात मान लेता हूं कि कभी जब आवश्यक काम के बीच में फोन की घंटी बजती है तब अच्छा नहीं लगता। पर इसका यह मतलब तो नहीं है न अम्मा कि हम फोन की तरफ दोबारा देखे ही न। मेरे साथ भी ऐसा होता है। पर बाद में मैं फोन चेक कर लेता हूं और लगता है कि किसी अपने का फोन है तब रीकाल कर लेता हूं। पिताजी तो उतना भी नहीं करते।

जानकी. बेटा पहले फोन तो लगा फिर बांकी बातें बाद में कर लेंगे।

मनीष. हां अम्मा। ये लो अभी लगाता हूं।

मनीष अपना फोन लेकर कमरे से बाहर निकलता है और आंगन के एक किनारे पर खडे होकर अपने पिताजी को फोन लगाने लगता है। काफी देर तक डायल करने के बाद भी जब फोन नहीं लगता तब मनीष आकर अपनी अम्मा से कहता है. अम्मा लगता है पिताजी एक जगह पर नहीं है। ये देखो न मेरे मोबाईल पर तो पूरा कनेक्श्नल दिखा रहा हैए पर पिताजी ही कनेक्शन के आसपास नहीं होंगे या फिर मोबाईल को बंद करके रखे होंगे।

जानकी. ठीक है बेटा थोडी देर और देख लेते हैं। अगर नहीं आयेगा तो दीनबंधु तिवारी जी के यहां पता करने चल देना। शायद उनको पता हो कि छुटटी होने के बाद तुम्हारे पिताजी कहां जा सकते हैं।

मनीष. जी अम्मा । बहुत अच्छा। हम लोग 7 बजे तक देखते हैं। उसके बाद मैं तिवारी चाचा के यहां चला जाउंगा। दोनों मां.बेटे अभी इस तरह बातें कर ही रहे थे कि घर के बाहर मोटर सायकल रूकने की आवाज सुनाई दी। आवाज से जानकी पहचान गई कि यह उन्हीं के मोटरसायकल की आवाज है। तुरंत मनीष से बोली. बेटा। देख तो बाहर निकलकर तुम्हारे पिताजी आ गये हैं।

जानकी अभी मनीष से ऐसा बोल रही थी कि उसी समय शुक्लाजी मोटर सायकल को घर के बाहर गली में ही स्टैंड करके अंदर आ रहा था। सामान्य रूप से शुक्ला जी अपना गाडी खुद ही घर के अंदर लाकर खडी करता था। पर उनके द्वारा ऐसा न किया जाना जानकी और मनीष दोनों के लिये कुछ अजीब था। मनीष तो दरवाजा खोलने के बाद वहीं किनारे पर खडा होकर अपने पिताजी को बाहर गली में गाडी स्टैंड कर छोडते और अंदर घूसते हुये चुपचाप देखता रहा लेकिन जानकी बोली अरे मनीष के पिताजी आज क्या बात है गाडी बिना अंदर किये ही घर के अंदर चले आये।

जानकी की आवाज को सुनकर भी अनसुना करके शुक्ला जी थका हुआ सा जानकी को बिना जवाब दिये घर के अंदर बैठक कक्ष में रखे सोफे पर जाकर बैठ गये। सोफे पर बैठे.बैठे ही वह धीरे.धीरे अपना जूता मोजा और कपडा निकालकर वहीं पास के सोफे पर रखने लगे। अपने पिताजी को ऐसा करते देख मनीष कमरे में आया और अपने पिताजी के सामानों को निश्चित स्थान पर रखने लगे। इस बीच जानकी भी शुक्ला जी के लिये चाय और पानी लेकर आ गई। चाय.पानी शुक्ला जी को देते हुये जानकी बोली. मनीष के पिताजी क्या बात है आज किसी से कुछ कहा.सुनी हो गई है क्या एकदम गुमसुम से हो?

जानकी को दूसरे सोफे पर बैठने का ईशारा करके शुक्लाजी बोले. अरे जानकी। तुम भी कहां की बात को लेकर बैठी हो। अब यह उमर किसी के साथ लडने.झगडने को थोडी है।

जानकी. हां जानती हूं। आपका स्वभाव ही ऐसा नहीं है कि किसी के साथ लडाई झगडा या फिर कहा.सुनी हो। ओ तो आपको गुमसुम और थका हुआ देखकर ऐसे ही पूछ ली थी।

शुक्ला जी. हॉ जानकी। एक तो अब उमर भी हो रहा है और उस पर आजकल विभागीय काम भी इतना बढ गया है कि जवानों के भी काम कर.करके पसीने छूट रहे हैं।

जानकी. अरे मैं तो कब से बोल रही हूं कि आखिर कब तक नौकरी करोगे। अरे चार साल ही तो बचा है कौन सा चैदह साल बचा है जिसमें कमा लोगे। अपना एक ही तो बेटा है। उसके लिये पर्याप्त् है। छोडो लालच और नौकरी छोडो।

शुक्ला जी. तुम ठीक कहती हो जानकी। पर मैं सोंचता हू कि अगर मनीष भी अपने पैरों पर खडा हो जाता तब मेरा नौकरी छोडना उचित होता। बैठकर खाने से तो कुबेर का धन भी कम पड जाता है।

जानकी. आप भी कैसी बातें करते हैं मनीष के पिताजी। हमारा बेटा पढा लिखा है। अरे आज नहीं तो कल कोई न कोई नौकरी पा ही जायेगा। इसमें इतना चिन्ता करने की क्या जरूरत है।

शुक्ला जी. तुम नहीं जानती जानकी। आजकल के समय और हमारे समय में जमीन आसमान का फर्क आ गया है। एक हमारा समय था जिसमें विभाग वाले हमारे जैसे पढे.लिखे लडकों को गांव तक खोजते आते थे और उसमें भी उनको चाहिये रहता था पांच तो मिलते थे एक या कभी कभी तो एक भी नहीं मिलते थे और एक आजकल का समय है जिसमें एक

पद नौकरी के लिये एक लाख लडकों की लाईन लगी रहती है। इन्हीं सब परिस्थितियों को ध्यान में रखकर सोचता हूं कि मनीष का पहले कहीं व्यवस्था लग जाये उसके बाद ही नौकरी छोडना उचित होगा।

जानकी. अब इन सारी बारिकीयों को आप ही समझो। मुझे तो आप पर दया आ जाती है। इसी कारण बोल देती हूं। नहीं तो मेरा क्या। जब तक जी में जान है तब तक कमाओ।

शुक्लाजी. नहीं जानकी। ऐसा भी नहीं है कि मैं तुम्हारे मन की भावों को समझता नहीं। मैं तो चाहता हूं कि नौकरी जल्दी से छोड दूं या फिर मनीष के कहीं नौकरी पाते तक जितना भी समय नौकरी कर रहा हूं वह बिना किसी संकट या दाग लगे कट जाये।

शुक्लाजी के बोलने के बाद जानकी घर के अन्य काम निपटाने रसोई घर की ओर चली गई। शुक्लाजी हाथ पैर धोने बाथरूम की ओर जाने लगा तथा मनीष वहीं पर बैठकर टी वी देखने लगा।

0000000000000000000000000000000000000

(2)

दूसरे दिन सुबह जल्दी उठकर शुक्लाजी को तैयार होते देखकर जानकी बोली. अरे मनीष के पिताजी आज आप सुबह सुबह कहां जाने की तैयारी करने लगे। कहीं कोई प्रशिक्षण वगैरह में तो फिर से नहीं जा रहे हैं और अगर सुबह.सुबह जाना ही थ तो कल आते ही बतलाये क्यों नहीं। मैं भी यह सोंचकर की स्कूल ही तो जाना है और अपने समय पर जाना है जैसे रोज निकलते है 9 बजे तक सोंचकर आपके खाने के लिये कुछ बनाई भी नहीं हूं ठीक है कल नहीं बतलाये थे तो नहीं बतलाये कम से कम अभी बतला दो कितने बजे तक निकलना हैं उसके अनुसार कुछ हल्का फुल्का बना देती हूं।

जानकी को लगातार बोलते देखकर शुक्लाजी के मन में आया कि एक बार वह सारी बातें बतला दें जो कल उनको पता चला था। फिर मन में यह सोंचकर कि जानकी को बतलाने से इसका हल थोडे ही मिल जायेगा फिर इससे जानकी और ज्यादा चिंतित हो जायेगीं। शुक्लाजी ने बात को फिर हाल के लिये टालना ही उचित समझा और जानकी से बोला. अरे नहीं जानकी प्रशिक्षण वगैरह में कहीं नहीं जाना है। अब परीक्षा का दिन निकट आ रहा है ऐसे में भला प्रशिक्षण कहां होगा। अरे ओ दीनबंधु तिवारी बतला रहे थे कि हमारे विभाग के कुछ अधिकारियों का दल स्कूल मॉनिटरिंग के लिये निकलने वाले हैं। सो मैंने सोंचा कि बिना नहाये धोये तिवारी जी के यहां जाने से अच्छा हैं तैयार होकर जाया जाये। कोई महत्वपूर्ण और जरूरी बातें होगी तब घर आकर तुरंत स्कूल के लिये निकल जाउंगा और अगर ऐसी ही बात निकली तो फिर आराम से खा.पीकर जाउंगा। तब तक तुम दो चार रोटी बनाकर तैयार रखो।

जानकी बोली. आप भी न मनीष के पिताजी रहोगे पुराने जमाने के आदमी ही। अरे यह जो मोबाईल फोन निकला है वह क्या आरती उतारने के लिये है। मोबाईल लगाते और तिवारी जी से पूछ लेते कि तिवारी जी कौन आने

वाला है कब आने वाला है और क्यों आने वालो है? अब यही पूछने के लिये उनके घर जा रहे हो।

शुक्लाजी. आमने.सामने बैठकर बातें करने के प्रभाव को तुम नहीं समझोगी जानकी। तुम्हारे कहने के लिये तो हो गया कि तीन लाईन के प्रश्न पूछने के लिये उनके घर जा रहे हो पर कभी प्रश्न वैसा भी नहीं होता जैसा वह हमें सीधा सीधा दिखाई देता है और मूल प्रश्न से पूरक प्रश्न ही महत्वपूर्ण हो जाता है जो फोन से बात करते समय मन में आ ही नहीं पाता। फिर तुम तो जानती ही हो कि फोन में कनेक्शन का आना जाना तो वैसे ही लगा रहता है जैसे जून जुलाई के महीने में धूप और बादल का।

जानकी. लगता है यही सोंचकर घर का भी फोन नहीं उठाते। अब कल के ही बात को ले लीजिये। आपको आने में देर होता देखकर मैं मनीष से बोली. बेटा अपने पिताजी को फोन लगाकर पूछ तो आज कैसे देर हो रहा है। बेचारे ने कितना प्रयास किया पर कोई फायदा नहीं। और एक आप हैं कि मन में यह भी नहीं सोंचते कि चलो तो देर हो रहा है तो एक फोन करके बतला देता हूं।

शुक्लाजी. जानकी तुम क्या समझोगी। जब कभी भी घर आने का समय हो जाता है और किन्हीं कारणों से समय पर नहीं आ पाता तो मेरा मन भी बेचैन हो उठता है और ऐसा भी नहीं है कि मैं फोन लगाने का प्रयास नहीं करता। बार बार प्रयास करता हूं लेकिन कोई फायदा नहीं। कनेक्शन ही नहीं बतलाता। अरे सरकार और निजी कंपनी वाले जगह जगह टॉवर लगा रहे हैं। पर किसी के मन में यह नहीं आता कि चलो तो इस गांव और मेरे स्कूल वाले गांव के बीच भी कोई टॉवर लगा दे जिससे इन दोनों गांवों में रहने वाले लोगों को कनेक्शन से संबंधित कोई समस्या न आये।

जानकी. तो फिर फोन को रखने से क्या फायदा। अभी तिवारी के यहां तो जा ही रहे हैं बीच में कोई गडडा देखकर उसमें फेंक आना।

शुक्लाजी. फोन को केसे फेकूं जानकी। आजकल हमारे विभाग के तरफ से सभी शिक्षकों के लिये यह लिखित में निर्देश आया है कि कोई भी शिक्षक किसी भी समय अपना मोबाईल बंद करके नहीं रखेगा और अगर ऐसा पाया गया या मोबाईल से संपर्क ना होने के कारण विभाग के किसी काम में रूकावट आती है तो संबंधित शिक्षक के विरूध्द सख्त अनुशासनात्मक कार्यवाही की जायेगी।

जानकी. ओ तो ठीक है मनीष के पिताजी। मैं तो फेंकने के लिये इस कारण बोल रही हूं कि जब यहां से वहां तक कनेक्शन ही नहीं मिलता तो फिर घ्

घर से फोन जाये या आपके विभाग से मतलब तो एक ही है कोई फायदा नहीं।

शुक्लाजी. नहीं जानकी। मतलब एक ही नहीं है। हमारे स्कूल के स्टाफ रूम के कमरे में एक रोश्नदान है। यहां से स्कूल पहुंचने के बाद मैं अपने इस फोन को उस कनेक्शन के उपर रख देता हूं और जैसे ही घंटी बजती है फोन उठाकर बिल्कुल दीवार से चिपककर बात करने के बाद पुनः उसी स्थान पर रख देता हूं।

जानकी. वाह मनीष के पिताजी वाह। जो दिन.रात आपकी चिंता करे उसे आपकी चिंता नहीं रहती और जो चिंता पर चिंता देते रहते हैं उसकी इतनी फिकर।

शुक्लाजी. करना पडता है फिकर जानकी। तुम लोगों का या किसी रिश्तेदार का फोन आता है और बात नहीं हो पातीए तब मन में यह आता है कि मेरे मोबाईल में नहीं लगा तो घर के मोबाईल से लगाकर बात कर लिये होंगे या फिर कभी मिलना होगा तो सारी स्थिति के बारे में आराम से बात कर लेंगे। पर विभाग के बारे में ऐसा नहीं हो सकता। वहां का फोन आया तो बात होनी ही चाहिये चाहे उनके तरफ से हो या मेरे तरफ से अगर किसी कारण से

बात नहीं हुई तो अगल बगल के स्कूल के शिक्षक से जाकर पूछो और इतना भी न करो तो फिर भला बुरा सुनो।

जानकी. तो अच्छा भला.बुरा सुनना न पडे इस डर से अपना फोन स्कूल के रोशन दान में टांग कर रखे रहते हैं और हां घर में तो आपको कोई सुना भी नहीं सकता। फिर किस बात की डर और कैसा डर।

शुक्लाजी. नहीं जानकी ऐसी बात नहीं है। मुझे तुम्हारी और मनीष की ओर से पूरा मानसिक सहयोग मिलता हैए तभी तो यह नौकरी कर पा रहा हूं। मैंने तो देखा है कि ऐसे भी बहुत से शिक्षक हैं जिनके घरों में किसी न किसी कारण से आये दिन झक झक बाजी होते रहता है। ऐसे शिक्षकों को एक तो घर से तनाव और दूसरा विभाग के कामों का तनाव। बेचारों को सूझता भी नहीं होगा कि इसको छोडे या उसको छोडे।

जानकी. ओ तो सब ठीक है मनीष के पिताजी पर अब यह तो बतला दीजिये कि तिवारी जी के यहां आखिर जा क्यों रहे हो।

शुक्लाजी. जानकी दरअसल मुझे कल देर भी इसी कारण हुआ था। कल दोपहर बाद एक शिक्षक ने आकर मुझे बतलाया कि तिवारी के बगल वाले गांव के स्कूल में अधिकारियों का दल बच्चों में गुणवत्ता की जांच करने आये थे और वहां के बच्चे गुणवत्ता परीक्षण में खरे नहीं उतरे। बस और क्या था। अधिकारियों ने सीधा सीधा वहां के प्रधानपाठक का दो वेतनवृद्धि रोकने का आदेश जारी कर दिया। तिवारी मुझसे कल आते समय बोल रहे थे कि यह गुणवत्ता जांच सभी स्कूलों में होना है और निर्धारित मापदंड के विपरीत बच्चों की स्थिति पाये जाने पर वहां के प्रधानपाठक को जिम्मेदार ठहराते हुये सजा निर्धारित की जायेगी। मैं भी अपने स्कूल का प्रधानपाठक हूं और तिवारी जी भी। बस इसी बात पर विचार विमर्श के लिये तिवारी जी के यहां जाने के लिये तैयार हुआ था। तिवारी जी ने अपने स्त्रोत से यह भी पता लगाने का प्रयास

किया होगा कि अधिकारियों का दल हमारे स्कूल की ओर कब आ रहा है। जैसे वे आज ही आने वाले होंगे तब मैं सीधा तिवारीजी के साथ उन्हीं के घर से स्कूल चला जाउंगा और अगर दूसरे दिन आयेंगे तब पहले घर आउंगा और फिर खाना खाने के बाद स्कूल के लिये निकलूंगा।

जानकी. यह तो बडी कठिन स्थिति आने वाली है। इसी कारण बोलती हूं कि कुछ दाग लगने से पहले सेवानिृत्ति हो जाओ पर आप मानते ही नहीं है। अब निपटो खुद ही।

शुक्लाजी. अच्छा जानकी मैं तिवारीजी के यहां जा रहा हूं। यह तुम्हारे बातचीत के चक्कर में आधा घंटा यहीं लग गया। शुक्लाजी यह बोलते हुये जल्दी जल्दी तिवारीजी के घर की ओर जाने लगे।

0000000000000000000000000000000000000000000

(3)

शुक्ला जी अपने घर से निकलकर तिवारी जी के घर की ओर जाने लगे। अभी गांव के चैक पर स्थित गुप्ताजी के पान दुकान के पास से गुजर ही रहे थे कि वहीं पर खडा गांव का ही व्यक्ति मनोहर लाल यादव ने शुक्लाजी को रोकते हुये कहा. क्या बात है शुक्ला जी आज कहां जाने के लिये इतनी जल्दी तैयार हो गये हैं? हमारे गांव में आपके अतिरिक्त और भी शिक्षक हैं पर कसम खाकर कहता हूं कि अभी बिस्तर से उठे भी नहीं होंगे।

मनोहर की बातों को सुनकर वहां जितने भी लोग खडे थे सबके सब ठहाके मार के हंसने लगे। सभी लोगों का हंसना शुक्लाजी को अच्छा नहीं लगा और वह चाह भी रहा था कि मनोहर को कडा जवाब दें क्योंकि आये दिन वह शिक्षकों को लेकर ऐसे ही उटपुटांग बातें किया करता था। कभी उससे तो कभी और किसी से। पता नहीं उसे शिक्षकों से किस बात को लेकर चीढ थी। लेकिन शुक्ला जी मन में यह सोंचकर संयम धारण कर लिया कि वहां घर में जानकी से बातचीत करते देर हो गई थी और अगर यहां मनोहर को जवाब देने और फिर उसकी ओर से कुछ और कहे जाने पर उसका जवाब देने में दस पन्द्रह मिनट भी समय लगता है तो वह भारी पड जायेगा। शुक्लाजी मन में यह विचार कर वहां बिना रूके सीधा तिवारी जी के घर की ओर बढ गये।

अभी भी तिवारी जी के घर आने में कुछ दूरी शेष थी। शुक्ला जी अपना कदम जल्दी जल्दी बढा रहा था। गली से गुजरने वाले अन्य लोग भी शुक्लाजी को इस तरह नौजवानों की रप्तार में चलते देखकर आश्चर्य में थे क्योंकि शुक्ला जी शायद ही इससे पहले कभी इतनी रप्तार में चला हो। तभी सामने की ओर से आ रहे जुगलकिशोर श्रीवास शुक्लाजी टकराते टकराते बचता है। शुक्ला जी तो इतने पर भी उस समय कुछ बोलने के पक्ष में नहीं था क्योंकि उसका ध्यान

तो केवल तिवारी जी के घर पहुंचने में ही लगा हुआ था लेकिन जुगलकिशोर को कोई जल्दबाजी नहीं थी। वह तो अपने घर से निकला ही था समय पास करने के लिये और इससे अच्छा समय पास करने का अवसर उसे मिल नहीं सकता था। अतः उसने शुक्ला जी को रोकते हुये कहा गुरूजी- मैं कबसे आपसे अपने एक प्रश्न का उत्तर पूछ रहा हूं पर आप हर बार बाद में बतलाउंगा कहकर टाल देते हैं। आज तो आपको मेरे प्रश्न का उत्तर देना ही पडेगा।

शुक्लाजी - जुगलकिशोर की पुरानी जिदद को सुनकर झल्ला जाता है और नाराज होते हुये कहता है. जुगल किशोर आखिर मजाक करने की भी कोई हद होती है। अब तुम वह सारी हदें पार करते जा रहे हो। देख नहीं रहे हो कि मैं कितनी जल्दबाजी में हूं उसके बाद भी इस तरह की फालतू प्रश्न पूछते फिर रहे हो।

जुगलकिशोर को शुक्लाजी का इस तरह उस पर चिढना अच्छा लगता था। बचपन में दोनों माध्यमिक शाला तक साथ.साथ पढे थे और उसी समय से जब भी जुगलकिशोर को कोई भी अवसर मिलता शुक्लाजी को छेडे बिना नहीं रहता था। शुक्लाजी को जुगलकिशोर की बात तब भी अच्छा नहीं लगता था और आज भी अच्छा नहीं लगा। लेकिन हां आज से पहले इतनी बेरूखी से उसने जुगलकिशोर से कभी बात नहीं किया था और जुगल किशोर तो यह सब करता ही था मजा लेने के लिये तो आज इतनी सरलता से शुक्लाजी को कहां जाने देने वाला था। शुक्लाजी के छिडकी के बावजूद जुगलकिशोर हंसते हुये बोला. देखो गुरूजी अपने ज्ञान पर घमंड अच्छा नहीं होता। मेरी नजर में आप इस गांव के सबसे ज्यादा ज्ञानी व्यक्ति हो तब आपसे अपने प्रश्न का उत्तर न पूछूं तो किससे पूछूं।

शुक्ला जी जानता था इससे बात करना मतलब दस बीस मिनट को व्यर्थ जाया करना है और आज उनके पास एक.एक मिनट का कीमत है। फिर भी

उसने कुछ पल रूकते हुये कहा. क्यों जुगल इस गांव में एक मात्र मैं ही गुरूजी हूं जो ज्ञानी हूं और बाकी जो हैं उन्हें बिना पढाई लिखाई किये सरकार ने गुरूजी बना दिया है।

जुगलकिशोर भले से ज्यादा पढा.लिखा नहीं था लेकिन इधर.उधर घूमफिरकर और चार लोगों के बीच उठ.बैठकर उसे इतना अनुभव जरूर हो गया था कि अगरर आप किसी व्यक्ति को अपनी बातों में उलझाना चाहते हैं या यह चाहते कि वह आपके मनोनुकूल बातें करें तो उसकी सबसे मार्मिक भाव पर चोंट कर दें और जुगल किशोर ने यहां शुक्लाजी के उसी मार्मिक भाव ज्ञानी होने पर चोंट किया था। इसी कारण जैसे ही शुक्लाजी ने यह कहा कि सरकार ने बाकी लोगों को क्या बिना पढाई.लिखाई किये गुरूजी बना दिया है। वैसे ही जुगल किशोर ने कहा. हां गुरूजी किसी को लगे कि न लगे। मुझे तो यह जरूर लगता है कि उन्हें सरकार ने बिना पढाई.लिखाई किये ही गुरूजी बना दिया है। अगर ऐसा नहीं होता तो मुझे आज तक अपने प्रश्नों का उत्तर मिल नहीं गया होता। जितने बार भी उन लोगों से पूछा हूं हर बार वही जवाब कि भाई जुगल तुम्हारे इस प्रश्न का उत्तर कोई दे सकता है तो वह केवल शुक्ला जी ही है।

शुक्लाजी ने कहा. जगुल ऐसा नहीं है कि मैं तुम्हें आज से या अभी कुछ दिनों पहले से ही जान रहा हूं। मैं तो तुम्हें बचपन से जान रहा हूं। तुम्हारी नस.नस से वाकिफ हूं। हमेशा लोगों को उल.जुलूल की बातों में उलझाना और अपने को बडा बुद्धिमान सिद्ध करना यही काम रह गया है तुम्हारा। अरे दूसरों को फालतू के काम में उलझाने के बदले अपने काम पर ज्यादा ध्यान दिये रहते तो आज यूं गलियों में दिन भर घूमते फिरते नहीं रहते। कौन आदमी किस समय किस मन.स्थिति में है यह भी ध्यान नहीं रखते। जहां भी जब भी और किसी के साथ भी शुरू हो जाते हो। तुम्हें अपनी यह आदत बदलनी चाहिये। नहीं तो दूसरे को उलझाते.उलझाते खुद ऐसा उलझोगे की फिर बाहर आना मुश्किल हो जायेगा। शुक्ला जी की बातों से जुगल किशोर इतना तो समझ गया कि अभी

शुक्लाजी की मानसिक स्थिति तनावों से भरा हुआ है। ऐसा नहीं कि उसने शुक्लाजी को पहली बार ऐसी बात कही हो। इससे पहले भी कई बार वह कई बातों को लेकर शुक्लाजी से मजाक किया करता था। पर इससे पहले कभी भी शुक्लाजी ने इतनी सख्त बात उससे नहीं की थी। उसकी प्रश्नों का उत्तर या बातों का जवाब वह पहले भी नहीं देता था लेकिन उसका ढंग अलग होता था। परिस्थिति को भांप कर जुगलकिशोर ने मन में सोचा कि लगता है शुक्लाजी को निश्चित ही किसी बात की बडी चिंता है। नहीं तो वह ऐसा व्यक्ति नहीं है कि किसी को उसके मुंह उपर ही बुरा भला कह दें। स्थिति को संभालते हुये जुगलकिशोर ने कहा. नाराज मत हो शुक्लाजी। मैंने तो बस ऐसे ही पूछ दिया था।

शुक्लाजी . मुझे भी मालूम है जुगल कि तुमने ऐसे ही पूछा था और यह कोई आज बस की बात नहीं है। यह तो तुम्हारी बचपन की आदत है। मैं तो तुझसे केवल यह कहना चाह रहा हूं कि कभी कभी सामने वाले की परिस्थिति को भी ध्यान में रख लिया करो। देख नही रहे थे कि मैं कितना जल्दी.जल्दी चले जा रहा था। अब इस उमर में इतनी जल्दी.जल्दी चलने का मतलब तो यही होगा न कि जरूर कोई आवश्यक या महत्वपूर्ण काम होगा। ऐसा तो नहीं है कि इस उमर में जल्दी.जल्दी चलकर कोई व्यक्ति 100 या 200 मीटर की दौड में भाग लेने का अभ्यास करेगा। शुक्ला जी की बात सुनकर जुगलकिशोर स्तब्ध रह गया। उसे बिल्कुल आशा नहीं थी कि शुक्लाजी से उसे यह सब कुछ सुनना पडेगा। इससे पहले शुक्लाजी तो क्या गांव के ऐसा कोई व्यक्ति नहीं बचा थाए जिससे उन्होंने कभी न कभी मजाक न किया हो। पर आज तक किसी ने उनके मुंह के उपर ऐसी बात नहीं कही थी। उल्टा बात का सिलसिला इस ढंग से आगे बढने लगता था कि घंटा दो घंटा कब निकल गया इसका पता न तो उसे चलता था और न सामने वाले को। यही कारण था कि कई बार ऐसी भी स्थिति

आती थी कि जब उनको ध्यान लोगों की तरफ नहीं होता था तो लोग ही स्वयं से उनके पास आकर बात का सिलसिला आरंभ कर देते थे।

अंत में जुगलकिशोर ने शुक्लाजी से कहा.अच्छा शुक्लाजी माफ करना। अब आगे से स्थिति और परिस्थिति दोनों को ध्यान में रखकर आपसे बात किया करूंगा। अब आप जाईये जहां जा रहे हैं शुक्लाजी. ओ तो मैं जाउंगा जुगल और उसके लिये मुझे तुम्हारी अनुमति या सहमति की जरूरत नहीं है। तुम्हारी इन फालतू की बातों ने मेरा 20 मिनट का अनमोल समय व्यर्थ कर दिया। पता नहीं अब इस समय की कीमत मुझे किस रूप में चुकानी पडेगी।

इससे पहले की शुक्लाजी उसे और कुछ सुनाते जुगल ने वहां से खिसकना ही उचित समझा। शुक्लाजी से बिना कुछ बोले वह सीधा गांव के दूसरे मोहल्ले की ओर जाने लगा। साथ ही वह सोच रहा था कि यह पहला अवसर है जब उसे स्वयं पारी समाप्त कर वापस लौटना पडा। नहीं तो इससे पहले सामने वाले को ही बोलना पडता था कि अब बस करो जुगल। बांकी बातें कल या फिर और कभी कर लेंगे।

इधर शुक्लाजी भी जुगल किशोर के जाने के बाद सीधा तिवारी जी के घर की ओर बढने लगे। वह मन ही मन प्रार्थना भी करते जा रहा था कि अब शेष रास्ते में जुगल किशोर जैसा कोई और व्यक्ति न मिले। नही तो वह जिस उददेश्य को लेकर घर से निकला था वह तो पूरा होगा ही नहीं और साथ में स्कूल जाने में सामान्य दिनों की अपेक्षा विलंब होगी वह अलग। यह सब सोचते सोचते शुक्लाजी तिवारी जी के घर के मुख्य द्वार तक पहुंच गये।

0000000000000000000000000000000000000000000000

(4)

तिवारी जी कब से तैयार होकर शुक्लाजी का इंतजार कर रहे थे। इंतजार करते करते तिवारीजी सोंच रहे थे यह देखो भलाई का जमाना ही नहीं रहा। मैं ईधर शुक्लाजी के भलाई करने के बारे में सोच रहा हूं और उधर शुक्लाजी हैं कि उन्हें कोई चिंता ही नहीं है। लगता है उसकी भलाई के चक्कर में मैं ही निपट जाउंगा। इसी को कहते हैं होम करते हाथ जलना। अरे मैंने सोचा कि शुक्लाजी अपने गांव के ही हैए सज्जन है अपने काम से काम रखने वाले हैं बाहरी दुनिया का ज्यादा तजुर्बा नहीं है थोडा अधिकारियों के अवलोकन दल के आने के पहले कुछ हिंट कर दूंगाए जिसके अनुसार वह अपनी तैयारी कर लेगा और जांच में निकल जायेगा। पर यहां तो उल्टा हो रहा है। अरे अब लगभग आठ बज रहा है। वह कब आयेगा तो मैं कब बतलाउंगा फिर कब हम लोग स्कूल जाकर तैयारी आरंभ करेंगे। शुक्लाजी के स्कूल में तो दल कल आयेंगे लेकिन मेरे स्कूल में तो आज ही आ रहे हैं। अगर शुक्लाजी से इस संबंध में चर्चा ही नहीं करता तब भी बाद में दोष मुझ पर ही लगाते और कहते वाह तिवारी जी कम से कम शिक्षक शिक्षक होने का ध्यान नहीं रखा तो गांव वाले होने की तो मर्यादा रखते।

सोचते सोचते तिवारीजी की नजर घडी पर पडी। 8.15 का समय हो रहा था। तिवारी जी के चेहरे पर चिंता की लकीरें साफ साफ दिखाई दे रही थी। तिवारीजी अपने घर के मुख्य द्वार पर नजर डालते हुये बोला. और मर्यादा का पालन कर। देख लेना तुम्हारा भी वेतन वृद्धि बजरंग नगर के प्रधान पाठक प्यारे मोहन कश्यप की तरह नहीं रूका तब कहना। बडा भलाई करने चला था। अब दूसरे की भलाई के बारे में सोचना बंद कर और अपने भलाई के बारे में सोंचना शुरू कर। सोंचते हुये तिवारीजी स्कूल जाने के लिये मोटरसायकल लेने

अपने घर के अंदर बरामदे की ओर बढ रहे थे उसी समय मुख्य द्वार पर खडे शुक्लाजी की आवाज सुनाई दी. तिवारी जी ओ तिवारी जी घर में हैं कि नहीं।

शुक्लाजी की आवाज सुनकर तिवारी जी पुनरू मुख्य द्वार की ओर पलटते हुये वापस आये और दरवाजा खोलते हुये बोले द्द वाह शुक्लाजी बहुत जल्दी आ रहे हैं। अब 35-40 मिनट में कितना और क्या बात कर लेंगे।

मुख्य द्वार के खुलते ही शुक्लाजीए तिवारीजी के पीछे.पीछे आंगन से लगे बैठक कक्ष के सोफे पर बैठ गया। वहीं पास ही तिवारी जी भी बैठ गये। तिवारीजी को चुप बैठा देखकर शुक्लाजी इतना तो समझ गये कि तिवारीजी देर होने के कारण उनसे नाराज लग रहा है। लेकिन आवश्यकता और परिस्थिति मान और अपमान दोनो ही नहीं देखता। शुक्लाजी को तिवारीजी का यह खरापन अंदर से तो अच्छा नहीं लग रहा था लेकिन वह अपने मन में यह सोंचकर की अभी उसे तिवारी जी की ज्यादा जरूरत है सब कुछ सहना स्वीकार कर लिया। बाहर से यह आभास दिलाते हुये कि उन्हें तिवारीजी का व्यवहार बिल्कुल भी असामान्य नहीं लगा है अपने परिचित अंदाज में ही बोला. हां तिवारी जी अब बतलाईये कश्यपजी के साथ क्या क्या हुआ और वैसी परिस्थिति से बचने के लिये हमें क्या क्या करना होगा।

तिवारीजी भी अपना महत्व किसी भी स्थिति में थोड भी कम होने देने को तैयार नहीं था। इस कारण वह शुक्लाजी के सीधे प्रश्नों का सीधा उत्तर न देते हुये पुनः पूछा शुक्लाजी आप तो कल बोले थे कि 7.30 तक आ ही जाउंगा लेकिन यहां तो आपके आते आते 8.30 का समय हो रहा है। अब आधे घंटे में मैं आपको क्या बतलाउंगा और आधे घंटे में आप क्या समझ लेंगे।

शुक्लाजी ने मन में रास्ते में ही यह निश्चय कर लिया था कि घर में तैयार होते समय जानकी के साथ जो बातचीत हुई थी और रास्ते में जुगलकिशोर के साथ जो कुछ हुआ था उसकें बारे में वह तिवारीजी से चर्चा नहीं

करेगा। तिवारीजी से नहीं बतलाने के पीछे उनके निश्चय का कारण यह नहीं था कि वह इन बातों को छिपाना चाहता था। उनका एकमात्र उददेश्य यह था कि अप्रासांगिक बातों का उल्लेख केवल समय की बर्बादी ही करेगा। इसी कारण वह घूसते समय तिवारीजी के व्यंग्य में कहे वाक्य बहुत जल्दी आ रहे हैं को नजर अंदाज करते हुये सीधे विषय पर आते हुये पूछा था कि तिवारी जी बतलाईये क्या क्या हुआ था और क्या क्या करना होगा।

तिवारी जी से मुख्य प्रश्न का सीधा उत्तर न पाकर शुक्लाजी के लिये यह आवश्यक हो गया कि वे देर होने के कारणों का स्पष्टीकरण तिवारीजी को पहले दें। तभी गाडी आगे बढ सकती है अन्यथा नहीं। शुक्लाजी ने कहा. क्या करोगे तिवारी जी जब काम बिगडने वाला रहता है तब हवा भी प्रतिकूल बहने लगती है। तैयार तो मैं बडे सुबह से ही हो गया था। पर बाधा पर बाधा बाधा पर बाधा आती गई और देर होते गया। इसी कारण तिवारी जी मेरा आपसे अनुरोध है कि जो भी समय शेष है उसका सदुपयोग करते हुये मुझे बारीकियों को बतला दीजिये।

मानव का यह प्राकृतिक स्वभाव होता है कि उसे स्वयं याचना करना अच्छा नहीं लगता लेकिन वह मन ही मन चाहता जरूर है कि लोग उससे याचना करें। शुक्लाजी ने जब याचना के भाव में तिवारीजी से कहा तब तिवारी जी बोले. शुक्लाजी आप यह तो जानते हैं कि इस वर्ष शिक्षा सत्र के आरंभ से ही सभी कक्षाओं के लिये विषयवार लर्निंग आउटकम्स सभी शालाओं को राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद से उपलब्ध कराई गई थी और साथ में यह भी निर्देश था कि बच्चों का आंकलन और मूल्यांकन के लिये यही लर्निंग आउटकम्स आधार होगा।

शुक्लाजी बोले. हॉ तिवारीजी मुझे अच्छी तरह याद है और मेरे स्कूल में सभी कक्षाओं में यह विषयवार दीवार पर लगा हुआ भी है। मुझे यह भी याद है

कि इसी लर्निंग आउटकम्स के आधार पर ही शालाओं के प्रथम एवं द्वितीय अकादमिक अवलोकन के लिये छः दक्षताओं पर आधारित विद्यार्थी विकास सूचकांक बनाया गया था जिसमें सही और गलत का निशान लगाकर छात्रों की अकादमिक प्रगति को प्रदर्शित किया गया था।

अपनी बातों को और आगे बढाते हुये शुक्लाजी बोले. तो तिवारीजी क्या आप यह कहना चाह रहे हैं कि कश्यपजी ने अपने स्कूल में यह काम नहीं किया था जिसके कारण उनकी दो वेतन वृद्धि रोक दी गई।

तिवारी जी बोले. शुक्लाजी मैं सौ प्रतिशत तो यह नहीं कह सकता कि कारण वही हो जिसका उल्लेख आपने अभी किया है। वास्तविक कारण तो कश्यप जी से चर्चा करने के बाद ही पता चल सकता है। पर हां इतना जरूर कह सकता हूं कि कोई न कोई बडा कारण रहा ही होगा। नहीं तो कोई भी अधिकारी इतनी बडी सजा कैसे दे देता।

शुक्लाजी द्द ओ तो मैं भी समझ रहा हूं तिवारी जी। पर जब तक वास्तविक कारण को नहीं जानेंगे तब तक हम अपनी बचाव में क्या कर सकते हैं। वैसे भी अधिकारियों के निरीक्षण के समय तो सबकी सिट्टी पीट्टी गुम हो जाती है। कुछ का बोलते मुंह से कुछ और निकल जाता है। कई बार तो मेरा यहां तक अनुभव रहा है कि अगर कोई रजिस्टर मांगते हैं तो वहीं टेबल के सामने रखा हुआ रजिस्टर भी दिखाई नहीं देता और उसे आलमीरा में ढूंढने लगते हैं। और फिर क्या अधिकारियों को तो सुनाने का अवसर चाहिये। अवसर मिला नहीं कि शब्दों का बाण धडाधड ऐसे निकलता है जैसे अर्जुन के तकरश से बाण निकल रहा हो।

तिवारीजी. हां शुक्लाजी आप सही कह रहे हैं। पर इसमें गलती भी तो हमारी ही है। भाई स्कूलों में अधिकारी निरीक्षण करने तो रोज आते नहीं है। साल में एकात बार आ गये तो आ गये। नहीं तो मेरे सामने तो ऐसे कई स्कूल

का नाम उदाहरण के रूप में है जहां उस स्कूल की स्थापना से लेकर आज तक कोई अधिकारी निरीक्षण करते नहीं पहुंचे हैं। फिर अधिकारियों पर भी दायित्व रहता है और ऐसे में अगर कोई अधिकारी किसी स्कूल में पहुंच जाते हैं तो उनकी यह स्वाभाविक अपेक्षा होती है कि स्कूल का हर काम अदयतन स्थिति में मिले। ऐसे परिस्थिति में सब कुछ रहते हुये भी शिक्षक अपना काम अधिकारियों को न बता पाये या न दिखा पाये तो उससे अधिकारी यही तो समझेंगे न कि इनके स्कूल में कुछ भी बतलाने या दिखलाने लायक काम नहीं हुआ है।

शुक्लाजी. हाँ आपका कहना भी ठीक है तिवारी जी। पर अभी हमको क्या करना होगा?

तिवारीजी घडी की तरफ देखते हुये बोले. शुक्लाजी मैं आपको बतलाना तो बहुत कुछ चाहता था पर अब स्कूल जाने का समय हो रहा है। आपके यहां तो दल कल पहुंचेगे और मेरे यहां तो आज ही। लेकिन इतना समझ लीजिये कि ईधर आगे जो कुछ भी होगा उसका आधार लर्निंग आउटकम्स ही रहेगा।

शुक्लाजी और तिवारीजी एक दूसरे को नमस्कार किये तिवारी जी अपने स्कूल और शुक्लाजी अपने घर की ओर रवाना हुये।

तिवारी जी के यहां से लौटते समय रास्ते में शुक्लाजी को रोकने वाले लोगों की संख्या कम नहीं थी। पर शुक्लाजी सभी की बातों को अनसुना करते हुये जल्दी जल्दी अपने घर की तरफ बढने लगे। घर पहुंचकर अपने कमरे में जाकर बैग निकाला और सीधा उस स्थान पर जाकर जहां मोटर सायकल खडी थी मोटरसायकल बाहर निकालने लगा। शुक्लाजी को इस तरह हडबडी में जाते देखकर जानकी बोली अरे मनीष के पिताजी इतनी भी हडबडी क्या है कुछ खा पी तो लो फिर चले जाना। आप ही तो बोले थे कि अगर मैं तिवारी जी के यहां

से घर वापस आया तो दो चार रोटी खाकर जाउंगा और मैंने रोटी बना भी ली है।

शुक्लाजी जानता था कि जानकी के बातों का जवाब देने का मतलब होगा विलंब करना। लेकिन बिना कुछ बोले जाना भी तो उचित नहीं होगा। अतः उसने कहा नहीं जानकी ओ रास्ते में ही इतना देर हो गया है कि अब खाने के लिये भी समय नहीं बचा है। घडी में तुम खुद देख लो नौ बजकर 20 मिनट हो रहा है और शेष चालीस मिनट में मुझे 20 किमी दूर भी जाना है।

शुक्लाजी की बातों को सुनकर इससे और आगे कुछ कहना जानकी ने उचित नहीं समझा। शुक्लाजी भी मोटरसायकल निकालकर सीधा अपने स्कूल के लिये प्रस्थान किया।

0000000000000000000000000000000000000000000

(5)

स्कूल पहुंचते पहुंचते लगभग दस बज ही रहा था। स्कूल के स्टाफ के सभी सदस्य स्कूल पहुंच गये थे। छात्रों की प्रार्थना के बाद जब शिक्षक अपने स्टाफ रूम में बैठे तब शुक्लाजी ने यादव सर से कहा यादव जी कल हमारे स्कूल में निरीक्षण दल आने वाले हैं। आप अपने अपने विषय की तैयारी को एक बार और देख लीजिये।

यादवजी. हां सर। हम लोगों ने भी इसके संबंध में सुना है। अधिकारियों का निरीक्षण दल इस बार केवल छात्रों की गुणवत्ता को ही परख रहे हैं।

शर्मा मैडम. सर मैंने तो यहां तक सुनी है कि बजरंग नगर वाले कश्यप जी के दो वेतन वृद्धि भी इसी कारण रोक दी गई है।

खान सर. पर मैडम यह तो एक प्रकार का अन्याय है न। शिक्षक का काम है पढाना। अगर शिक्षक न पढाये उसका पाठयक्रम पूरा न हुआ हो तब शिक्षक के विरूद्ध कार्यवाही हो यह बात तो समझ में आती है लेकिन बच्चों से प्रश्न पूछने पर बच्चे उसका उत्तर न दे पाये इस कारण शिक्षक पर कार्यवाही कर दी जायेए यह तो सरासर अन्याय है।

शुक्लाजी. आप किस समय की बात कर रहे हैं खान सर। ऐसा पहले माना जाता था कि शिक्षक का काम केवल पढाना है और बच्चों का काम केवल पढना। पर बदलते समय के साथ अब इसकी अवधारणा भी बदल गई है। अब यह माना जाता है कि शिक्षक का काम पढाना नहीं अपितु बच्चों के लिये सीखने की उचित अवसर का निर्माण करना है और जब तक बच्चा उन चीजों को सीख न लें तब तक शिक्षक सफल नहीं हुआ है और ऐसे में शिक्षक के विरूद्ध कार्यवाही उतना गैर वाजिब नहीं लगताए जितना आप समझ रहे हैं।

खान सर. ये सब कहने की बात है सर। जब अपने उपर आती है न तब पता चलता है कि कार्यवाही वाजिब है या गैर वाजिब। अब आप कश्यप जी को ही ले लो। बेचारा दिन भर स्कूल में मेहनत करते रहता है और उसे इस मेहनत का फल क्या मिला उल्टा दो वेतन वृद्धि रोक दी गई। ऐसे में तो सभी मेहनत करने वाले शिक्षक अब हतोत्साहित होंगे और डरे हुये रहेंगे ओ अलग।

शर्मा मैडम. सर लेकिन निरीक्षणकर्ता दल द्वारा जांच करने की प्रक्रिया क्या निर्धारित की गई है कुछ न कुछ तो प्रक्रिया निर्धारित होगी नए जिसे केन्द्र बिन्दु बनाकर निरीक्षण कर्ता दल द्वारा गुणवत्ता की जांच की जाती होगी।

यादव सर. प्रक्रिया का तो मुझे खास पता नहीं है मैडम। पर हां लर्निंग आउटकम्स केन्द् बिन्दु जरूर है। इतना मैं जानता हूं।

शर्मा मैडम. पर सर यह कक्षावार विषयवार लर्निक आउटकम्स तो बहुत कठिन है। आप चाहे जितना भी मेहनत करके कक्षा में विषयों को सिखाने का जतन करो प्रत्येक कक्षा और विष्य में दो चार बच्चे ऐसे निकल ही जायेंगे जो नहीं सीख पाते।

शुक्लाजी. हॉ मैडम आप सही कह रही हैं और इस बात की पूरी संभावना रहेगी। पर संभावनाओं से डरना भी तो उचित नहीं है।

खान सर. मैं मानता हूं सर कि हमें संभावनाओं से डरना नहीं चाहिये पर अगर कोई संभावनाओं के बारे में बात करें तो इसका मतलब केवल यह तो नहीं हो सकता कि वह संभावनाओं का उपयोग अपने डर के लिये करेगा। हम संभावनाओं की बात इस कारण भी करते हैं कि इससे हमें अपने कार्यों को अच्छे ढंग से निपटाने और लक्ष्य तक पहुंचने में एक दिशा मिल सके।

शर्मा मैडम. तो खान सर इस संबंध में आपकी संभावनायें क्या कहती है

खान सर. वहीं मैडम जो आपकी संभावनायें है। प्रत्येक कक्षा और विषय में दो चार बच्चे ऐसे मिलेंगे ही जिससे निरीक्षणकर्ता दल संतुष्ट न हो और उन्हें लगे कि ये बच्चे अभी नहीं सीख पाये हैं।

शर्मा मैडम. और आपकी इस संभावना से आपको कौन सी दिशा मिलेगा।

खान सर. यहीं मैंडम कि ऐसे बच्चों को और कौन से तरीके अपनाकर हम सिखा सकते हैं।

शुक्लाजी. चलो भाई। आप लोगों की चर्चा को सुनकर इस बात की प्रसन्नता है कि मेरे स्टाफ के शिक्षकों को लर्निग आउटकम्स की विस्तृत जानकारी है और आप सभी इसी के अनुसार कक्षा शिक्षण करते हुये बच्चों को सिखाने का प्रयास कर रहे हैं। रह गया सवाल कुछ बच्चों का नहीं सीख पाना तो इसके लिये निरंतर प्रयास करते रहेंगे। और इतना सब कुछ करने के बावजूद अगर कार्यवाही होती है तो हिम्मत के साथ उसका भी सामना करेंगे। और ऐसे ही परिस्थिति में हमें गीता का वह शलोक सम्बल प्रदान करता है. कर्मन्येवाधिकारस्ते माफलेषु कदाचनः।

यादवसर. हॉ सर आपने अमृत तुल्य वचन बोला है। और मुझे तो लगता है कि कश्यपजी के उपर जो कार्यवाही हुई है वह उनके स्टाफ में तालमेल की कमी के कारण हुआ है। हम लोग तो आस पास के शिक्षकों से सुनते रहते है कि कश्यपजी के चाहने के बावजूद उन्हें अपने स्टाफ के अन्य शिक्षकों का सहयोग नहीं मिल पाता। ऐसे में बेचारे कश्यपजी अकेला कितना और कहां तक खींच सकता है।

शुक्लाजी. हां यादवजी। इस संबंध में मैं अपने को सौभाग्यशाली समझता हूं। अभी कल ही घर में बात चल रही थी तो मैंने मनीष के अम्मा से बोला भी था कि जानकी मुझे घर और स्कूल दोनो जगह ही ऐसे लोग मिले है जिनसे मुझे बराबर मानसिक सहयोग मिलता है और इसी कारण मैं इन जिम्मेदारियों

को निभा पा रहा हूं। अरे लोग बोलने के लिये भले से बोल देते हैं कि प्रधान पाठक ही तो हो कोई बडा अधिकारी थोडी हो। पर बोलने वाले बोलते समय यह भूल जाते हैं कि पद छोटा या बडा हो सकता है या होता है पर जिम्मेदारी तो जिम्मेदारी होती है। जिम्मेदारी में क्या छोटा और क्या बडा।

शर्मा मैडम. हां सर मेरा भी मानना यही है कि जिम्मेदारी तो जिम्मेदारी है चाहे वह माता पिता के रूप में घर की हो चाहे शिक्षक के रूप में स्कूल की हो या बडे बडे अधिकारियों के रूप में समाज और देश की हो। जिम्मेदारियों का मापन पद से नही कर्तव्य निर्वहन की भावना से होती है।

शुक्लाजी. और हमारे स्कूल में सभी लोग अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन पूर्ण ईमानदारी के साथ कर रहे हैं फिर चिंता कैसी?

खान सर. हॉ सर। यह सब आपके मार्गदर्शन का प्रतिफल है। आपने शुरू से ही स्कूल में जो भी कार्य किये है वह सब समूह भावना से किये हैं। कभी हम पर कोई भी बात अपने तरीके से थोपने का प्रयास नहीं कियेा हर चीज में आम सहमति बनाई और सबके सहयोग से आगे बढने का प्रयास किये।

मन में जब कोई चिन्ता की बात हो और कोई भी व्यक्ति उस चिंता को समझते हुये दो शब्द भी बोल दें तो आधी से ज्यादा चिंता तो उसी समय खत्म हो जाती है। शुक्लाजी जो कल तक जितनी चिंता में दिखाई दे रहा था अपने स्टाफ के शिक्षकों से अपने मनोनुकूल बातें सुनकर ऐसा महसूस कर रहा था जैसे उसके मन में इस प्रकार की कोई चिंता कभी उत्पन्न ही नहीं हुई थी।

इस बीच तीनों शिक्षक अपने अपने कक्षाओं में जाकर निरीक्षण को ध्यान में रखते हुये कमजोर छात्रों के लिये उपयुक्त गतिविधियों के अनुसार बच्चों को पढाना आरंभ किये।

अब इसे अनिश्चितता कहिये या आत्मविश्वास में कमी जब तक सामने उपस्थित कार्य निपट न जाये तब तक मन में उस विषय की गुंज तो बनी ही रहती है। शुक्लाजी भले से अपने मेहनत और स्टाफ के कार्यों और सहयोग से संतुष्ट थे तब भी उनके मन में थोडा न थोडा किन्तु परंतु अगर.मगर का दौर चल ही रहा था। और देखा जाये तो हमारे मन की ऐसी स्थिति हमारे लिये लाभप्रद ही होती हैा एक तो इससे हमारा मन संबंधित विषय के लिये सचेत रहता है और दूसरा इससे संभावित कमियों के बारे में भी आभास होता रहता है जिसे हम समय रहते दूर करने का प्रयास कर सकते हैं। स्थिति तब नुकसानदायक होती है जब हम अति विश्वास में मामूली तैयारी को ही विशेष मान लें और कुछ करने को छोडकर केवल सोचने पर ध्यान केन्द्रित कर दें।

शुक्लाजी. अपने कुर्सी पर बैठे.बैठे ईधर.उधर मन दौडाकर दल के निरीक्षण की तैयारी में अपने आप को पूर्ण रूप से डूबा दिये थेा जिस प्रकार कोई विदयार्थी परीक्षा कक्ष में जाने के पूर्व अपनी सभी तैयारियों को मन ही मन स्मरण करता है उसी तरह शुक्लाजी के मन में भी इस समय निरीक्षण दल के आगमन से लेकर प्रस्थान तक की सारी घटनाओं का पूर्वाभ्यास चल रहा था। चपरासी के द्वारा पिरिएडस की घंटी लगाने पर शुक्लाजी अपनी सामान्य अवस्था में आता है और निश्चिंत भाव से कक्षा की ओर जाने लगता है।

0000000000000000000000000000000000000000000000

(6)

मनीष अपने दोस्तों कें साथ मार्निग वाक पर गया हुआ था। यह उसका नित्य का क्रम था और मार्निंग वाक से लौटते समय अपने घर के लिये अखबार भी लेते आता थाा वह अखबार वाले से अखबार तो प्रतिदिन रास्ते में ले लेता थ लेकिन पढता नहीं था। घर आकर अखबार अपने पिताजी के कमरे में टेबल उपर रख देता था क्योंकि शुक्लाजी की यह पुरानी आदत थी कि बिस्तर से उठते ही सबसे पहले अखबार पर एक नजर डालता था और उसके बाद ही अपना नित्य क्रिया करता था।

घर लौटते समय अपने हाथ में रखे अखबार पर नजर डालते हुये पता नही मनीष को क्या सूझा कि उसने शहर पत्रिका के अंक को चलते चलते ही खोलकर देखना शुरू किया। मनीष अभी एक ही पृष्ठ देखा था कि उसकी नजर एक बडे से अक्षर में लिखी एक मुख्य बिन्दु पर पडी और नजर पडते ही उसके मुंह से एक चींख सी निकल गई। उसके मुंह से इस तरह अचानक चींख निकलते देख आश्चर्य से उसके दोस्त रमेश् ने पूछा. अरे मनीष क्या हो गयाा् अखबार में ऐसा क्या लिखा हैजिसे देखकर तुम इस तरह चींख पडे।

थोडा संयत होकर मनीष ने रमेश को अखबार में उसी मुख्य बिंदु की ओर ईशारा करके बतलाते हुये कहा इस खबर को देखकर मेरे मुंह से चींख निकल गई। अब रमेश भी अखबार मनीष के हाथ से लेकर पढने लगा जिसमें लिखा था लर्निग आउटकम्स को आधार बनाकर एक और प्रधान पाठक का वेतन वृद्धि रोका गया। पूरी खबर पढने के बाद रमेश ने कहा यार मनीष यह प्रधान पाठक तो अपने गांव का तिवारी जी है।

मनीष. हां रमेश। तिवारी चाचा ही है। और जानते हो मेरे मुंह से जो चीख निकला वह इस शीर्षक के कारण नहीं बल्कि तिवारी चाचा के नाम को पढने के कारण निकला था।

मनीष यार। प्रधानपाठक तो वह है और उनको छोडकर कोई दूसरा प्रधानपाठक होता तब भी मुझे आश्चर्य नहीं होता।

रमेश. आखिर तिवारी चाचा के वेतनवृद्धि रूकने में तुम्हे इतना आश्चर्य क्यों हुआ

मनीष. रमेश। मेरे पिताजी तिवारी चाचाजी के बारे में बतलाते हैं कि वह हमारे विकासखण्ड के श्रेष्ठ प्रधानपाठक में से एक है। इस विकासखण्ड में आज तक जितने भी शिक्षक प्रशिक्षण हुये है उन सबमें तिवारी चाचाजी प्रशिक्षक के रूप में अपनी सक्रिय सहभागिता देते आये हैं। इस तरह सभी विषय सरकार की सभी शैक्षिक योजनाओं और शिक्षा नीतियों और सिद्धांतों की उन्हें जानकारी है। इसके साथ साथ उनकी विकासखण्ड से लेकर राज्य स्तर तक की अधिकारियो से अच्छी जान पहचान है। जब ऐसे प्रधानपाठक के स्कूल में बच्चों में लर्निग आउटकम्स नहीं आ पाया है और उसी के कारण तिवारी चाचाजी का वेतन वृद्धि रूक गया तब तो मुझे नहीं लगता कि इस विकासखण्ड के कोई भी प्रधानपाठक इससे बच जायेंगे।

रमेश. और मनीष तुम्हारे पिताजी भी तो प्रधान पाठक हैं न।

मनीष. हॉ यार। इस खबर को पढने के बाद तो मुझे अब डर लगने लगा है। कहां तिवारी चाचाजी और कहां मेरे पिताजी। ठीक है मेरे पिताजी को भी सभी विषयों और नीतियों सिद्धांतों की जानकारी रहती है फिर भी वह तिवारी चाचाजी जैसे बहुमुखी प्रतिभा के धनी नहीं है। इसी कारण वह थोडा जल्दी घबरा और हडबडा जाते हैं। जानते हो रमेश जब से पिताजी को यह बात पता चली है कि स्कूलों में अधिकारियों का निरीक्षण दल आने वाला है तभी से

उनकी ऐसी तैयारी चल रही है जैसे हम लोग परीक्षा की तैयारी करते हैं। मुझे तो अब इस बात की चिंता लगी हुई है कि जब उन्हें यह पता चलेगा कि तिवारी चाचाजी जैसे प्रधानपाठक की वेतनवृद्धि रूक गई हैतब उनकी क्या प्रतिक्रिया होगी। रमेश. तो ऐसा कर न मनीष आज घर जाकर अखबार को कहीं पर छिपा देना और जब चाचाजी पूछेगा कि आज का अखबार कहां है तब बोल देना कि आज अखबार वाला आया ही नहीं।

मनीष. यार रमेश तुम भी न जब भी बात करोगे बिना सोंचे विचारे ही करोगे। ठीक है मैं बोल दुंगा कि आज अखबार वाला नहीं आया पर मोहल्ले के अन्य लोगों को अखबार पढते देखकर फिर पिताजी मेरे बारे में क्या सोचेगा। और तुम तो जानते हो कि लोग अखबार अपने अपने घरों के लिये लेते है लेकिन उसे घर के अंदर बैठकर पढने के बदले बाहर ही बैठकर पढेंगे। मैं आज तक इसका लॉजिक नहीं समझ पाया हूं कि आखिर लोगों को खुले में अखबार पढने से कौन सा असीम सुख मिलता है। फिर रमेश देखना हम लोग तो अखबार लेकर घर थोडी देर से पहुंचेंगे वहां घर में मोहल्ले के कोई न कोई पहले से अखबार लेकर पहुंच गया होगा।

रमेश.हॉ मनीष। यह तो मेरा भी अनुभव रहा है। जिस तरह तुम यह लाजिक नहीं समझ पाये हो कि लोग खुले में सबसे सामने अखबार क्यों पढते हैं उसी तरह मैं भी यह लाजिक नहीं समझ पाया हूं कि अगर गांव के किसी व्यक्ति के संबंध में छोटा सा भी उल्लेख अखबार में आ जाये तो आधा गांव दिन भर क्यो उसके घर के पास ही जमा रहते हैं और विशेषकर खबर नकारात्मक हो तो और।

मनीष. हॉ रमेश तुम सही कह रहे हो। मुझे तो लगता है कि ऐसे में जो लोग भी संबंधित व्यक्ति के घर जाते हैं उनका उददेश्य मरहम लगाना नहीं बल्कि मजा लेना होता है। अरे लोगों को कम से कम यह तो सोचना चाहिये

कि उस बेचारे पर जिसके संबंध में नकारात्मक खबर प्रकाशित हुई है सभी लोगों से एक ही बात सुन सुनकर क्या व्यतित होता होगा। फिर सब कुछ तो अखबार वाले ने अखबार में लिख दिया है तो उसी को बार बार पूछना। यह तो मुझे उचित नहीं लगता।

रमेश. तुम्हारे और मेरे उचित अनुचित लगने का परवाह ही किसको है मनीष। लोग तो अपने मन से और अपने मन का ही करेंगे। पता नहीं इस समय तक तिवारी चाचाजी के यहां कितने लोग आकर चले गये होंगे।

मनीष. रमेश इसमें एक चीज और है। अगर यही बात किसी अपेक्षित व्यक्ति के साथ होता तब लोग भी बातों को उतनी गंभीरता से नहीं लेते क्योंकि लोग यह मानकर चलते हैं कि इनके साथ तो ऐसा होना ही था आज नहीं तो कल। पर जैसा मैंने शुरू में कहा न कि तिवारी चाचाजी शिक्षा विभाग में एक जाना पहचाना व्यक्तित्व है और उनके साथ यह सब कुछ हुआ है तो ऐसे लोगों का ध्यान भी इस ओर बरबस खीच जायेगा जो ध्यान देने वाले प्रवृत्ति के नहीं होते हैं।

रमेश. हॉ मनीष। मैं अभी तुम्हारे बोलने के बीच में यह भी सोंच रहा था कि अगर बात इतनी तक भी रूक जाती तो तब भी ठीक था। गांव के लोग हितैषी बनकर आये और पूछकर चले गये। लेकिन ऐसा होता कहां है् बात तो इससे भी आगे तक जाती है और जायेगी भी। तुम देख और सुन लेना मनीष कि जो तिवारी चाचाजी के जोड के लोग है वे उनके पास जाकर पूछेंगे। जो चाचीजी के साथ उठने बैठने वाली महिलायें होंगी वे सभी उनके साथ इसी पर चर्चा करेंगी। भले से वे इन विषयों के संबंध में अ ब स तक नहीं जानती हो। उसी प्रकार उनके लडके के दोस्त और उनके लडकी की सहेलियां उनसे बात करेंगे और बचे खुचे में रिश्तेदारों की लगातार फोन आती रहेगी।

मनीष. हां यार। अब पता नहीं वास्तविक बात क्या है। इसमें तिवारी चाचाजी या उन्हीं के समान अन्य प्रधानपाठकों जिनकी वेतन वृद्धि रूकी है या आगे रूकने वाली है की गलती कितनी है। पर इस गलती के एवज में उनको जो सजा मिलती या मिलने की संभावना रहती है उसका केवल अहसास ही अपने आप में बहुत बडा होता है। अन्य लोगों के नजर में तो यह केवल सजा पाने वाले की आर्थिक क्षति है पर संबंधित को जो मानसिक यातना मिलती है वह तो एहसास से भी परे हो जाती है।

मनीष और रमेश बात करते करते उस स्थान तक आ गये थे जहां से दोनों अपने अपने घर के लिये अलग अलग दिशा में चले जाते थे। आज भी रमेश अपने घर जाने की दिशा में आगे बढा लेकिन अन्य दिनों की भांति सीधा कदम न बढाकर थोडा रूकते हुये कहा. मनीष। अगर तुम्हारे पिताजी को इस सबके बारे में पता लग गया होगा तब उन्हें अपनी ओर से हिम्मत देना।

मनीष रमेश की बात सुनकर सहमति में सिर हिलाकर अपने घर की ओर जल्दी जल्दी चलने लगा। वह सोच रहा था कि आज उनके पिताजी के स्कूल में भी निरीक्षण दल आने वाले हैं और पता नहीं क्या होगा। पर मन में यह विश्वास भी था कि उसके पिताजी ने अपना हर शैक्षिक कार्य पूरी ईमानदारी और निष्ठा से की है और निरीक्षण करने वाले अधिकारियों के आंख में पटटी थोडी बंधी है। मनीष उंचे आसमान की ओर देखते हुये कहता है सत्यमेव जयते।

0000000000000000000000000000000000000000000000

(7)

बच्चो में लर्निग आउटकम्स की स्थिति जानने शालाओं में किये जा रहे निरीक्षण कार्य व उसके परिणामों की समीक्षा हेतु जिलास्तर पर विभाग के सभी अधिकारियों की बैठक हो रही है। बैठक में एक दो अधिकारियों को छोडकर सभी अपनी अपनी तैयारियों के साथ पहुंचे हुये है। जिला स्तर पर विभाग के प्रमुख अधिकारी श्री आर एल कश्यप उपस्थित सभी अधिकारियों को संबोधित करते हुये कहते हैं.. आप लोगों के द्वारा शाला में किये जा रहे निरीक्षण कार्य का पचास प्रतिशत काम पूरा हो गया है और शेष पचास प्रतिशत भी इस माह के अंत तक संपन्न हो जायेगी। आज आप सभी को मैंने बैठक में इस कारण बुलाया है ताकि विकासखण्ड वार समीक्षा किया जा सके। आप सभी को यह मालूम है और आप सभी अपने अपने कार्य क्षेत्रों में यह करते भी हैं। समय पर समीक्षा इस कारण भी जरूरी हो जाता है कि इससे हमें हमारे द्वारा अपनाये गये तरीकों की अच्छाई और बुराई दोनों की ही जानकारी हो जाती है। अगर हमें समीक्षा के दौरान हमारी तरीकों की अच्छाई ज्यादा नजर आये तब उन तरीकों की निरंतरता बनाई रखी जानी चाहिये और अगर तरीकों में खामियां ज्यादा नजर आये तब उसे तुरंत छोडते हुये कोई अन्य तरीके अपनाने पर सोच विचार करना चाहिये। इसी में ही योजनाओं या कार्यों की सफलता निर्भर करती हैा आप लोगों के द्वारा किये गये व्यापक निरीक्षण कार्य और उसके परिणामों पर आप लोगों का क्या अनुभव रहा है उससे मुझे भी एक एक कर अवगत कराते जाईये।

जिले के मुख्य अधिकारी के निर्देशानुसार विकासखण्ड गगनपुर से आये अधिकारी महोदय ने कहा . सर हमारे विकासखण्ड में इस निरीक्षण का बहुत ही सकारात्मक परिणाम देखने को मिल रहा है। जैसा कि हम सभी जानते हैं राज्य कार्यालय द्वारा सभी कक्षाओं के लिये विषयवार लर्निग आउटकम्स से संबंधित चार्ट जारी किये गये हैं। यह चार्ट सभी शालाओं में कक्षावार प्रदर्शित की गई हैा

अधिकांश शालाओं में शिक्षक इसके अनुसार अध्यापन कराते हुये बच्चों में इसका परिलक्षित होना भी सुनिश्चित कर रहे हैं। इस बात का सत्यापन विदयार्थी विकास सूचकांक में बच्चों के नाम के सामने लगे सही के निशान से कर रहे हैं और जिन शालाओं में थोडा बहुत कमियां मिल रही है उन्हें निर्देशित किया गया कि जल्द से जल्द वे लर्निग आउटकम्स की प्राप्ति सुनिश्चित करें।

विकासखण्ड इन्द्रपुर से आये अधिकारी महोदय ने कहा कि सर हमारे विकासखण्ड में स्थिति लगभग आधी आधी है। आधे शालाओं में लर्निग आउटकम्स उपलब्धि की स्थिति बहुत अच्छी है तो आधे में अभी और बहुत कुछ करने की आवश्यकता है। ऐसे कमजोर उपलब्धि स्तर शाला के प्रधानपाठकों को निर्देशित किया गया है कि वे अच्छे उपलब्धि स्तर वाले शाला के प्रधानपाठकों से निरंतर संपर्क कर उनके द्वारा अपनाये गये तरीकों को अपने शाला में लागू करने का प्रयास करें।

विकासखंड महेशनगर के अधिकारी महोदय ने बतलाया कि सर हमारे विकासखण्ड में स्थिति बहुत ही खराब हैा बहुत से शालाओं के शिक्षकों को तो लर्निग आउटकम्स की बुनियादी बातें भी मालूम नहीं है। ऐसे में उपलब्धि कहां संभव है। इसी कारण हमारे विकासखण्ड में निरीक्षण के दौरान लापरवाही पाये जाने पर तुरंत कार्यवाही की जा रही हैा अभी तक पन्द्रह प्रधानपाठकों की वेतन वृद्धि रोकने की अनुशंसा की जा चुकी है। आशा है इस कार्यवाही के बाद शेष शालाओं के संस्था प्रमुखों द्वारा लर्निग आउटकम्स को गंभीरता से लेते हुये उपलब्धि स्तर बढाने के दिशा में काम होगा।

शंकरनगर विकासखण्ड के अधिकारी महोदय ने कहा. सर कुछ संस्था प्रमुखों द्वारा इस निरीक्षण का ही विरोध किया जा रहा है। उनका कहना है कि लर्निग आउटकम्स की प्राप्ति एक सैद्धांतिक बात है और सिद्धांत पूर्ण रूप से व्यवहार में परिवर्तित हो नहीं सकता। थोडी बहुत कमी की संभावना हमेशा

रहेगी। ऐसे में शिक्षकों के उपर कार्यवाही करना उचित नहीं कहा जा सकता। कुछ संस्था प्रमुखों ने तो हमारे द्वारा इस संबंध में किये जाने वाले कार्यवाही के विरूद्ध माननीय न्यायालय तक जाने का मन बना लिये हैं।

इन अधिकारियों की बात सुनने के बाद जिला अधिकारी कश्यप जी ने पूछा अच्छा आप लोग शालाओं में जाकर लर्निंग आउटकम्स की जांच कैसे करते हैं और आप लोगों के द्वारा जो भी कार्यवाही की जा रही है उसका आधार कैसे निर्धारित करते है?

कश्यप जी को जवाब देते हुये शिवनगर के विकासखण्ड अधिकारी ने कहा. सर सभी शालाओं को कक्षावार विषयवार लर्निंग आउटकम्स उपलब्ध कराई गई है। निरीक्षण दल शालाओं में जाकर लर्निंग आउटकम्स में निर्धारित बिन्दु को ध्यान में रखते हुये बच्चों से प्रश्न करते हैं। अब अगर बच्चा संबंधित प्रश्न का उत्तर दे दिये तब माना जाता है कि लर्निंग आउटकम्स हासिल हो गया है। लेकिन अगर किसी शाला में लर्निंग आउटकम्स के आस.पास भी बच्चों में उपलब्धि दिखाई नहीं देती या शिक्षकों के द्वारा इस दिशा में किये गये कुछ प्रयास भी नजर नहीं आता तभी कार्यवाही की जाती है।

कश्यपजी ने कहा. आप सभी जानते हैं कि न्याय प्राकृतिक सिद्धांत पर आधारित होता है। अर्थात संबंधित विषय के मामले में जब हम लर्निंग आउटकम्स नहीं पाये जाने की स्थिति में अगर शिक्षकों के विचार जानने के बाद कार्यवाही करते हैं तभी यह न्याय के प्राकृतिक सिद्धांतों का पालन करना कहा जायेगा अन्यथा नहीं। क्या अ।

आप सभी ऐसा करते हैं?

इस पर उर्वशी नगर विकासखण्ड के अधिकारी महोदय ने कहा. सर अगर हम हर परिस्थिति में न्याय के प्राकृतिक सिद्धांत का पालन करने लगे तब तो किसी के उपर भी कार्यवाही नहीं होगी क्योंकि संबंधित लोग अपने पक्ष में बहुत

से तर्क देकर यह सिद्ध करने का प्रयास करेंगे कि गलती केवल उन्हीं की नहीं है। इस तरह पूरा उददेश्य ही असफल हो जायेगा। जैसे इसी मामले में बहुतों का तर्क होता है कि लर्निंग आउटकम्स की प्राप्ति में केवल शिक्षकों की ही भूमिका नहीं होती बल्कि बच्चों से जुडे चाहे वह उनका परिवेश हो घर.परिवार हो पाठयक्रम हो इन सभी की भूमिका होती है। ऐसे में तो कार्यवाही का करना दूर हम कुछ बोल भी नहीं पायेंगे।

कश्यपजी ने कहा. आप सही कह रहे हैं। पर कार्यवाही करते समय हमें इस बात को ध्यान में रखना ही होगा। देखिये लोग तब असंतुष्ट होते है जब उन्हें यह लगता है कि उनके साथ अन्याय हुआ है या अन्याय हो रहा है। मन से असंतोष दूर करने के लिये यह आवश्यक हो जाता है कि हमारे द्वारा की गई कार्यवाही को संबंधित व्यक्ति का मन भी स्वीकार करे। उन्हें ऐसा लगे कि उन्होंने जो और जैसा किया है उन पर की गई कार्यवाही उसी का परिणाम है और सही है। अर्थात दण्ड पाने वाले के मन में यह जंचना चाहिये कि उसे प्राप्त दण्ड उसके द्वारा किये गये गलती के अनुपात में है। न थोडा भी कम और न थोडा ज्यादा। जिस दिन हम ऐसा कार्यवाही करना सीख जायेंगे तो लोगो के मन में असंतोष भी नहीं उपजेगा और हम लोग भी न्यायालय की कार्यवाही से बच जायेंगे। नहीं तो जैसा अभी शंकरनगर विकासखण्ड के अधिकारी ने कहा कि कुछ संस्था प्रमुखों द्वारा न्यायालय जाने का मन बना लिया गया है वह एक आम बात हो जायेगी। और मैं नहीं चाहता कि मेरे जिले के कोई भी शिक्षक और अधिकारी न्यायालय तक पहुंचे।

इस पर गगनपुर विकासखण्ड के अधिकारी ने कहा. सर कार्यवाही करते समय न्याय का प्राकृतिक सिद्धांत हमारे मन में रहता है। लेकिन आजकल यह भी देखने को मिल रहा है कि लोग अपने कर्तव्यों पर ध्यान न रखकर अधिकारों पर ज्यादा ध्यान दे रहे हैं और यही कारण है कि हर कोई माननीय न्यायालय की शरण में जा रहे हैं। मेरा तो विचार है कि अगर लोग न्यायालय

जाने के पहले थोडा भी अपने कर्तव्यों पर विचार कर लेते तो इसमें बहुत हद तक कमी आ सकती है। पर नहीं उन्हें हर परिस्थिति में यही लगता है कि वे सही है और कार्यवाही करने वाले गलत। अब इसी प्रकरण को ले लीजिये सर शालाओं में लर्निग आउटकम्स का प्रदर्शन उसके अनुसार अध्यापन समय पर बच्चों के विभिन्न तरीकों से आंकलन व उसके परिणाम को विदयार्थी विकास सूचकांक में दिखाना यह सब तो शिक्षक का आरंभिक कर्तव्य हैा अब अगर किसी शाला के संस्था प्रमुख द्वारा इतना भी न किया जाये और इस आधार पर उन पर कार्यवाही की जाये तो कार्यवाही करने वाला कहां से गलत हो गया सर।

सभी अधिकारियों की बातें ध्यान से सुनने के बाद कश्यपजी ने कहा. मुझे विश्वास है कि मेरे जिले में निरीक्षण का कार्य सही ढंग से चल रहा है और मैं यह भी जानता हूं कि अब तक जिन भी संस्था प्रमुखों के विरूद्ध आप लोगों के द्वारा अनुशासनात्मक कार्यवाही की गई होगी वह पूर्ण रूप से सही आधारों पर किया गया होगा। और इन सबके बावजूद भी अगर कुछ संस्था प्रमुख आपके विरूद्ध हुये अनुशासनात्मक कार्यवाही से असंतुष्ट होकर माननीय न्यायालय की शरण में जाते हैं तो वहां हम भी अपना पक्ष मजबूती से रखेंगे। मेरा आप लोगों से केवल यही कहना है कि हमारे द्वारा की गई प्रत्येक कार्यवाही निष्पक्ष हो। किसी को भी यह कहने का अवसर न मिले कि अमूक संस्था प्रमुख से अच्छे संबंध होने के कारण बहुत सारी खामियों के बावजूद कुछ कार्यवाही नहीं की गई और अमुख संस्था प्रमुख से विरोध होने के कारण सब कुछ अच्छा होते हुये भी कार्यवाही कर दी गई।

सभी विकासखण्ड अधिकारियों के द्वारा कश्यपजी को आश्वस्त किया गया कि वे उनके निर्देशों का पूर्ण रूप से पालन करेंगे। बैठक समाप्त होने के बाद सभी अपने अपने मुख्यालय के लिये रवाना हुएं।

(8)

शुक्लाजी के स्कूल में निरीक्षण का कार्य बहुत ही अच्छे ढंग से संपन्न हो गया था। शुक्लाजी निरीक्षण के पूर्व जितना डर रहा था निरीक्षण के बाद वह उतना ही प्रसन्न था। जब उसने तिवारी जी पर हुई कार्यवाही के बारे में पढा और सुना तो उस रात वह रात भर नहीं सो पाया था। अगले दिन ही उनके स्कूल में निरीक्षण दल आने वाला था। एक तो रात भर नींद का न आना दूसरे तिवारी जी जैसे शिक्षक के उपर कार्यवाही का होना तीसरे अज्ञात परिणामों की चिन्ता में मन का डरा होना शुक्ला जी को कठिन परिस्थितियों में लाकर खडा कर दिया था। इसी कारण निरीक्षण दिनांक को घर से स्कूल जाते समय भगवान के सामने खडा होकर प्रार्थना करते हुये मन ही मन कहा था कि हे भगवान मेरे स्कूल का यह काम सफलतापूर्वक संपन्न करा देना और मुझ पर किसी तरह का दाग न लगने देना। आज शुक्लाजी अपनी सफलता और प्रसन्नता का पूरा श्रेय भगवान को दे रहा था। सच भी है अगर हमें किसी भी क्षेत्र में अनापेक्षित परिणाम मिले तो उसे चमत्कार ही मानते हैं और सभी प्रकार के चमत्कांर का एकमात्र स्त्रोत ईश्वर ही है।

अवकाश होने के कारण शुक्लाजी घर पर ही है। दोपहर तक जब सब कोई खाना खा लिये तब जानकी शुक्लाजी से बोली. मनीष के पिताजी मैं सोच रही थी कि हम दोनों को तिवारीजी के यहां जाना चाहिये। बेचारे के साथ बहुत बुरा हुआ है। समय पर आपकी मदद भी करते रहता है। ऐसे में नहीं जायेंगे तब सोचेंगे कि देखो तो शुक्लाजी कितने मतलबी हो गया है। मेरे उपर बुरा दिन आया तो हाल चाल लेने भी नहीं आया। वैसे अपने काम से दिन भर मंडराते रहेगा।

जानकी जब बोलना बंद की तब शुक्लाजी बोले हाँ जानकी हमें उनके यहां जरूर जाना चाहिये और जायेंगे भी पर अभी नहीं। कुछ दिन बाद ही

जायेंगे क्योकि मैंने सुना है कि तिवारी जी अभी किसी से मिल जुल नहीं रहे हैं। अरे कई लोगों के मुंह से तो मैं यहां तक सुना हूं कि वह अपने घर के लोगो से ही बातचीत नहीं कर रहा है।

जानकी बोली. मनीष के पिताजी मुझे तो लगता है कि उन्हें गहरा सदमा लगा है। नहीं तो आप ही सोंचिये न कि जो आदमी दूसरे के सुख दुख में आगे से आगे खडा रहता है वह अपने दुख के समय ऐसा थोडी करता। उन्हें किसी डॉक्टर के पास दिखाना चाहिये नहीं तो मन का यह दुख ऐसा न हो कि उनके साथ ही जाये।

शुक्लाजी बोले. जानकी तुम औरतों की यहीं बात मुझे अच्छा नहीं लगता। अब कहां की बात को कहां ले जा रही हो। तुम कहना चाहती हो कि वेतन वृद्धि रूकने का दुख तिवारी जी के लिये इतना बडा है कि वह अवसाद में चला जायेगा और इसी कारण वह मर भी जायेगा।

जानकी बोली. अरे अभी अभी तो आपने ही बतलाया कि कई लोग कह रहे हैं कि वह अपने घरों के लोगों से भी बात नहीं कर रहे हैं तो ऐसा वहीं आदमी करता है जो अवसाद में चला जाता है और मनीष के पिताजी मैं सुनी हूं कि यह अवसाद न कैंसर से भी बुरी बीमारी है जो इंसान को अपने साथ ही लेकर जाता है।

शुक्लाजी. नहीं जानकी। यह सब कमजोर दिलवालों के साथ होता होगा। तिवारीजी उन लोगों में से नहीं है जो सरलता से हार मान कर बैठ जाये। माना कि वह अभी किसी से मिल जुल और बातचीत नहीं कर रहा है। पर इसका यह मतलब थोडी है कि वह अवसाद में चला गया है। अरे हो सकता है वह इस बीच शांतचित्त रहकर अपने उपर आई समस्या का समाधान खोज रहा हो।

जानकी. भगवान करे ऐसा ही हो मनीष के पिताजी।

शुक्लाजी. हॉ जानकी। अभी तुम्हारे बोलने से मुझे एक जरूरी बात याद आ गया और वह यह है कि हमें कोई अच्छा सा मुहूर्त देखकर घर में भगवान सत्यनारायण की कथा कराना चाहिये। जानकी थोडा आश्चर्य चकित होते हुये बोली. भगवान सत्यनारायण की कथा। वह क्यों मनीष के पिताजी। मुझे तो याद नहीं आ रही है कि इससे पहले हमारे घर में सत्यनारायण भगवान की कथा कब हुई थी। इससे पहले जब मैं आपसे बोलती थी तो आप कह देते थे कि अभी स्कूल का समय है और उसी के लिये एक दिन का छुटटी लेना पड जायेगा। फिर कहते दशहरा दीवाली या गर्मी के छुटटी में सुन लेंगे। जब वह दिन आता तब कह देते कि अरे जानकी क्या करूं छुटटी में ही प्रशिक्षण होना है। इस कारण समय नहीं मिलेगा। अब इस परीक्षा के दिन में कथा सुनने का भाव कहां से और कैसे उत्पन्न हो गया। मुझे तो कुछ समझ नहीं आ रही है।

शुक्लाजी. अरे जानकी जानती हो उस दिन जिस दिन मेरे स्कूल में निरीक्षण दल आने वाला था और मैं बहुत चिंतित था। जब घर से स्कूल जाने के लिये निकल रहा था तब ओ जो बरामदे में तुमने भगवान की मूर्ति रखी है उस पर अचानक मेरी नजर पड गई और मन ही मन मैं कह उठा कि हे प्रभ्ुा मेरे स्कूल का निरीक्षण कार्य अच्छे ढंग से संपन्न करा देना ताकि मैं बेदाग सेवानिवृत्त हो सकूं तब सत्यनारायण की कथा सुनुंगा। बस उसी कारण तुम से कह रहा हूं।

जानकी. वाह मनीष के पिताजी वाह। आदमी आदमी को तो ठग रहा है। अब आदमी भगवान को भी ठगना शुरू कर दिये।

शुक्लाजी. नहीं जानकी। इसमें ठगने की क्या बात है। मन में श्रद्धा का भाव आया सो मन में कह दिया और जब उसे पूरा करने को सोच रहा हूं तो तुम इसे ठगना कह रही हो।

जानकी. मनीष के पिताजी मुझे तो प्रसन्नता ही हो रही है। देर से ही सही लौटकर आये तो।

शुक्लाजी. अरे मैं गया ही कहां था जानकी जो लौटकर आता। तुम तो जानती हो कि आज के समाज में अगर पढा लिखा व्यक्ति ज्यादा ही भगवान के प्रति आसक्ति दिखाये तो लोग उनका रूढीवादी भाग्यवादी अंधविश्वास और न जाने क्या क्या कह कर उपहास उडाते हैं और ऐसा कहीं कोई शिक्षक करे तब तो यह दस गुणा बढ जाता है। जिसे देखो वही कहते फिरता यह देखो यह शिक्षक है जब यह इतना रूढिवादी अंधविश्वासी और भाग्यवादी है तो अपने बच्चों को भी यही सिखाता होगा। ऐसे ही शिक्षक समाज को आगे सोंच सोंचकर अपने मन की भाव और श्रद्धा को दबाये रखा पर मैं था और हूं यहां ही।

जानकी. मनीष के पिताजी लोगों के कहे अनुसार करेंगे तब तो दो पग चलना भी मुश्किल हो जायेगा। फिर लोग सभी का उपहास थोडी उडाते हैं। उनमें भी यह समझ होता है कि कौन पाखण्ड कर रहा है और किसमें सचमुच भगवान के प्रति श्रद्धा है।् अब यह तो हमारे कार्य और व्यवहार पर निर्भर करता है कि हमारी छबि लोगों के सामने कैसी बनती है। आपके मामले में तो मुझे लगता है कि लोग जब यह सुनेंगे कि मनीष के पिताजी भगवान सत्यनारायण की कथा सुन रहे है तब उन्हें ऐसा लगेगा कि आप पाखण्ड कर रहे हैं। क्योंकि वे तो ऐसा सोचेंगे ही कि यह देखो वेतन वृद्धि की सजा नहीं मिली तो बडा भगवान की कथा सुन रहा है नहीं तो क्या यह आदमी कभी कथा सुनता। देखो तो देखो कितना बडा पाखण्डी है।

शुक्लाजी. जानकी अभी.अभी तुम कह रही थी कि लोगो के कहे अनुसार चलेंगे तब कुछ नहीं कर पायेंगे फिर कह रही हो कि लोग मुझे पाखण्डी कहेंगे। तो क्या मैं यह समझूं कि तुम कहना चाह रही हो कि मुझे सत्यनारायण की कथा नहीं सुनना चाहिये।

जानकी. मनीष के पिताजी मैं केवल यह कहना चाह रही हूं कि लोगों को किसी व्यक्ति के उपर हंसने या कहने का अवसर तभी मिलता है जब वह व्यक्ति अपना छबि लोगों के सामने खण्डित रूप में प्रस्तुत करता है। अर्थात लोगों की भावना के अनुसार अपने आप को नित्य बदलने का प्रयास करता है। मनीष के पिताजी पर हमें यह तो सोंचना चाहिये कि न तो हम लोगों के अच्छा समझने से अच्छा और बुरा समझने से बुरा बन जायेंगे। वह तो हम जैसे हों वैसे ही बनने और दिखने में निरंतरता रखें तो सारी समस्यायें ही खतम हो जायेगी। हम अच्छे हैं तो लोग अच्छे और बुरे हैं तो लोग बुरे समझेंगे।

शुक्लाजी. हॉ जानकी अब से मेरा भी यहीं प्रयास होगा कि मेरी छबी भी चाहे जैसा भी बने अखण्डित न बनें। अब तो मुझे यह भी लगने लगा है कि तिवारीजी जो लोगों से मिल जुल और बातचीत नहीं कर रहा है उसमें भी उसका यही डर है कि अब तक लोगों के सामने उनकी जैसी छबि बनी हुई थी वह खण्डित हो गया और अब उन्हें अपनी नई छबि बनाने में ना जाने कितना समय लग जाये।

जानकी. हॉ मनीष के पिताजी। जब कोई व्यक्ति दूसरों के अनुसार अपनी छबि बनाने का प्रयास करता है समस्या वहीं उत्पन्न होती है। इस कारण मेरी आपको यही सलाह है कि आप जैसे भी हो वहीं छबि लोगों के मन में बनाईये। उनके सोच के अनुसार अपनी छबि बदलते मत रहिये।

शुक्लाजी. जानकी शुरू में तो मैं तुमसे कह दिया था कि तिवारी जी के यहां बाद में जायेंगे। पर अब मैं सोच रहा हूं कि हमें आज शाम ही उनके यहां से आ जाना चाहिये।

जानकी. हॉ मनीष के पिताजी। आज शाम को ही चलते हैं। दोनों दोपहर में थोडी देर आराम करने के बाद तिवारीजी के यहां जाने के लिये तैयार होने लगते हैं।

(9)

तिवारी जी के यहां लगभग घंटे भर बैठने के बाद शुक्लाजी और जानकी अपने घर के लिये निकले। रास्ते में शुक्लाजी ने जानकी से पूछा जानकी तिवारी जी के यहां की भाभी क्या बोल रही थी।

जानकी. क्या बोलेगी बेचारी। दुख में तो कुछ बोल भी नहीं पा रही थी। बस इतना ही बतलाई कि शासन ने तो उन्हें सजा दी है पर वास्तव में सजा पूरे घर के लोगों को मिली है।

शुक्लाजी. पूरे घर के लोगों को सजा मिली है ओ कैसे जानकी।

जानकी. हॉ मनीष के पिताजी गीता बतला रही थी कि इसी बात को लेकर उसके बेटे सुरेश और बेटी अनिता का अपने अपने दोस्तों के साथ कहा सुनी भी हो गई है और दोनों बच्चे भी किसी के साथ लडाई झगडा न हो जाये यह सोचकर घर से निकल भी नहीं रहे हैं।

शुक्लाजी. पर जानकी मैं एक बात नहीं समझ पा रहा हूं कि इन सब बातों में बच्चों का क्या काम् न तो यह बच्चों के कारण हुआ है और न ही इसका हल बच्चों के पास है।

जानकी. मनीष के पिताजी आप लोगों की प्रवृत्ति को नहीं जानते। इन्हें तो बस मौके की तलाश रहता है। मौका मिला नही कि झपट पडते हैं और फिर क्या बाल की खाल निकाल डालते हैं।

शुक्लाजी. बाल की खाल निकाल डालते हैं ओ कैसे जानकी।

जानकी. हॉ मनीष के पिताजी गीता बतला रही थी कि इसी कारण तो उसके बेटे और बेटी का अपने अपने दोस्तों के साथ लडाई झगडा शुरू हो गया था। जानते हैं न सोहन यादव जिसका बेटा दिनेश जो सुरेश के साथ पढता है

अपने कुछ दोस्तों के साथ सुरेश को घेर लिया और फिर लगा चिढाने। सबके सामने कहने लगा देखा सुरेश पाखण्ड का चोला उतर गया न। तुम्हारे पापा अपने को बडा बुद्धिमान समझता था और जब अधिकारियों ने पूछा तो मुंह में घिध्घी बंध गई। इसी को कहते हैं नाम बडे और दर्शन छोटे। इसी प्रकार ओ जागेश्वर किराना दुकान वाले की बेटी प्रीति अनिता से बोल रही थी कि तुम्हारे पापा मुप्त का तनखा लेते हैं। ओ ठीक है अपने स्कूल के बच्चों को किसी प्राईवेट स्कूल के बच्चे के समान नहीं बना सकते तो कम से कम जितना तनखा मिलता है उतना तो काम करते। पता नहीं तुम लोग इतने पैसे को मुप्त में कैसे पचा लेते हो। ओ तो अच्छा हुआ कि तिवारी जी के दोनों बच्चे शांत स्वभाव के हैं नहीं तो बहुत बडा विवाद हो सकता था।

शुक्लाजी. जानकी तुम्हारी बातों को सुनकर तो मुझे भी अचरज हो रहा है कि 18-20 साल के बच्चे इतना सब कुछ बोलना कहां से सीख जाते हैं।

जानकी. और कहां से सीखेंगे मनीष के पिताजी। सब अपने अपने घरों से सीखते हैं। कई लोगों का काम ही होता है नुख्स निकालने का। अब जब घर में मॉ बाप ही दिन रात ऐसे बातों में लगे रहेंगे तो बच्चे सीखेंगे ही।

शुक्लाजी. हां जानकी चलो इन बातों में हम अच्छे हैं। हमारा मनीष किसी के तीन पांच में नहीं लगा रहता।

जानकी. हॉ मनीष के पिताजी। आप जानते हैं जिस दिन अखबार में यह सब आया था उस दिन जब मनीष सुबह घुमकर आया तब सबसे पहले मेरे पास आकर पूछ रहा था। अम्मा अम्मा मेरे आने से पहले कोई मोहल्ला वाला आया था क्या?् जब मैं बोली की नहीं बेटा अभी तक नहीं आये है क्यों क्या बात है?् तब उसने सारी बातें मुझसे बतलाया। ओ तो अच्छा हुआ कि सभी लोग तिवारीजी के घर की ओर चले गये थे अब ऐसे में बच्चे भी क्या करें जब कोई चिढाने की भाषा में बात करेंगे तब कितनी देर तक अपने को सम्हालकर

रख पायेंगे। थोडा बहुत ही सही प्रतिक्रिया तो होगी ही। मैं तो भगवान से बार बार प्रार्थना कर रही थी कि आपके साथ ऐसा न हो।

शुक्लाजी. पर जानकी तुम ओ कहावत तो सुनी हो न कि बकरे की मां कब तक खैर मनायेगी। बिल्कुल यही कहावत सभी विभाग के कर्मचारियों पर लागू होता है। अरे ठीक है आज कुछ नहीं हुआ पर इस बात की गारंटी क्या है कि कल भी कुछ नहीं होगा। तिवारी जी और उनके जैसे अन्य प्रधानपाठकों के साथ अभी हाल के दिनों में जो कुछ हुआ उन घटनाओं ने मेरे अंदर डर के बदले साहस का संचार किया है। अब मैं भी सोंचता हूं कि हमें अपना काम ईमानदारी और निष्ठा से करना चाहिये और इसके बाद भी अगर कोई प्रतिकूल परिस्थिति आती है तो चिंतित होकर हाथ पर हांथ धरे रहकर बैठने की अपेक्षा उसका डटकर मुकाबला करना चाहिये। जैसे तिवारी जी करने वाले हैं।

जानकी. हॉ मनीष के पिताजी। अभी चलते चलते हम दोनों अपनी अपनी बातों में इतना व्यस्त हो गये कि मैं पूछना ही भूल गई कि तिवारीजी इस घटना को कैसे ले रहे है? क्या वह सचमुच ही अवसाद में चले गये हैं जैसा कि कुछ लोग बोल रहे हैं या फिर वह कुछ करने जा रहा है जैसा कि अभी आपने कहा कि तिवारीजी कुछ करने वाले हैं।

शुक्लाजी. हॉ जानकी घर में जब तुम बतला रही थी कि तिवारी जी किसी के साथ मिल जुल नहीं रहे हैं और अवसाद में चले गये हैं तो एक बार तो मैं खुद अंदर से हिल गया था। पर सच मानों विश्वास नहीं हुआ था।

जानकी. तो क्या लोग इतनी गंभीर बातों को भी मिर्च मसाला लगाकर लोगों के सामने रखते हैं। मुझे तो विश्वास नहीं होता मनीष के पिताजी के ऐसे लोग अपने को किस विचार से इंसान समझते हैं।

शुक्लाजी. हॉ जानकी जब मैं तिवारी जी के कमरे में गया तो वह अंदर बैठकर आराम से पुस्तक पढ रहा था। मुझे देखते ही बैठने के लिये बोला और

फिर सभी बातों पर खुलकर चर्चा किया। मुझे तो कहीं से भी नहीं लगा कि तिवारीजी अपने उपर हुये कार्यवाही से उददीग्न या फिर डरे हुये हो।

जानकी. यह तो अच्छा ही हुआ मनीष के पिताजी। इंसान को ऐसा ही होना चाहिये। जब तक सांस हो हार नहीं मानना चाहिये।

शुक्लाजी. हॉ जानकी तिवारीजी कह रहे थे कि उनके उपर जो कार्यवाही की गई है उसे वह न्यायालय में चुनौती देगा। इसके लिये वह अन्य ऐसे प्रधानपाठक जिन्हें उन्हीं के समान सजा मिली है से लगातार फोन पर संपर्क कर रहे हैं। साथ ही यह भी बतला रहा था कि सभी प्रधानपाठक उनकी बातों से सहमत हैं और वे सभी एक दो दिन के भीतर सामूहिक बैठक कर किसी अच्छे वकील से मिलेंगे जो उनकी तरफ से इस मामले पर न्यायालय में मुकदमा लडेगा।

जानकी. मनीष के पिताजी क्या ऐसा करने से शासन और प्रशासन दोनों सभी प्रधानपाठकों के और अधिक विरोधी नहीं हो जायेंगे।

शुक्लाजी. नहीं जानकी ऐसा नहीं होगा क्योंकि जब भी कोई कर्मचारी शासन या प्रशासन के विरूद्ध न्यायालय जाता है तब उसका स्वरूप व्यक्तिगत नहीं होता। तुम तिवारीजी के ही मामले को ले लो। इसमें शासन या प्रशासन ने जो कार्यवाही की है वह तिवारीजी के उपर न करके प्रधानपाठक पद के उपर की गई है। उसी प्रकार अब जब तिवारीजी और अन्य प्रधानपाठक शासन और प्रशासन के विरूद्ध न्यायालय जायेंगे तो इसका यह मतलब नहीं है कि वे लोग पदों को धारण करने वाले व्यक्तियों के विरूद्ध न्यायालय जा रहे हैं। वे तो शासन और प्रशासन द्वारा बनाये और लागू किये गये नीतियों के विरूद्ध लडेंगे। इसलिये शासकीय मामलों में व्यक्तिगत बदला या वैमनस्यता की भावना का कोई स्थान ही नहीं होता।

जानकी. और इस पूरे मामले को समाप्त होने में कितना वक्त लग जायेगा?

शुक्लाजी. तुम तो खुद जानती और समझती हो कि आज कल लोग छोटी छोटी बातों के लिये न्यायालय जा रहे हैं। इस कारण वहां भी माननीय न्यायाधीश महोदय के समक्ष इतने सारे मामले लंबित अवस्था में है कि किसी किसी मामले की सुनवाई तो साल में मुश्किल से एकाक बार ही हो पाती है। ऐसे में कितना समय लग जायेगा इसे बतला पाना कम से कम मेरे लिये तो संभव नहीं है।

जानकी. मनीष के पिताजी समय के बारे में मैं इस कारण पूछी हूं कि आप तो जानते हैं कि पांव का कांटा जब तक निकल न जाये तब तक लगातार दर्द होते रहता है और आपको यह अनुभव भी होगा कि ऐसे कांटे वाले जगह पर ही बार बार रास्ते का गोंटी पत्थर टकराकर दर्द को और बढाते रहता है। उसी प्रकार जब तक इस मामले का फैसला न्यायालय से नहीं होगा तब तक तिवारी जी का ध्यान उसी पर ही रहेगा और जब कभी भूलना भी चाहेगा तब ऐसे ही रास्ते के पत्थर रूपी इंसान उन बातों को छेडकर तिवारीजी के दर्द को बढाते रहेंगे।

शुक्लाजी. तुम कह तो सही रही हो जानकी। पर इसमें कर ही क्या सकते हैं। आदमी अपने स्वयं की कार्य व्यवहार की जिम्मेदारी ले सकता है दूसरे की नहीं। जिसकी जैसी प्रवृत्ति होगी वह वैसा करेगा ही। बस हमें अपना हौंसला बनाये रखना होगा।

बात करते करते दोनों अपने घर तक पहुंच गये। घर के अंदर घूसते हुये शुक्ला जी बोले.चलो जानकी अच्छा ही हुआ कि आज तुम तिवारी जी के यहां जाने की बात कह दी। नहीं तो मैं सोच रहा था कि दो चार दिन बाद ही

जाउंगा। अब मन हक्का लगने लगा है। नहीं तो एक अजीब सी बेचैनी मन को घेरे हुये था।

जानकी. मनीष के पिताजी मेरा तो मानना है कि अपवाद को अगर छोड दें तो काम को टालना सदैव ही दुख दायक और हानिकारक होती है। ओ दोहा तो आपने पढा ही है. कल करै सो आज कर आज करै सो अब। जानकी द्वारा दोहा पूरा होने के पहले ही शुक्लाजी जोर से हंसते हुये कहा. अब बस भी करो। सुनकर जानकी भी जोर से हंसने लगी।

0000000000000000000000000000000000000000000

(10)

आज तो गांव में अखबार की मांग बहुत बढ गई थी। जैसे ही लोगों ने एक दूसरे के मुंह से सुना कि उनके विकासखंड के प्रधान पाठक संघ द्वारा लर्निंग आउटकम्स को आधार बनाकर प्रधानपाठकों के वेतन वृद्धि रोकने के आदेश को माननीय न्यायालय में चुनौती दी गई है और यह खबर आज के सभी अखबारों में प्रकाशित हुई है जिसे देखों वहीं अखबार पढने की ईच्छा में एक दूसरे से अखबार मांग रहे हैं। ऐसे में भला मनोहर और जुगल किशोर कैसे अपने को अलग रख सकते थे। उन्होंने तो बकायदा सभी अखबारों का एक एक प्रति हरकारे से लेकर लोगों को पढकर सुनाना भी आरंभ कर दिया था। दोनों गांव के हर चैक चैराहे पर जाते और वहां इकटठे हुये लोगों को न केवल अखबार पढकर सुनाते बल्कि आखिरी में उन लोगों की प्रतिक्रिया भी लेते और अपना राय भी बतलाते।

खबर पढकर सुनाने के लिये मनोहर ने पान ठेले के चैक के पास मोर्चा संभाल रखा था जबकि गांव के दूसरे मोहल्ले में मंदिर चैक के पास जुगल किशोर यह काम कर रहा था। पान ठेला चैक के पास मनोहर ख्बर पढने के बाद फागुराम निर्मलकर से पूछा क्यों फागू इस खबर पर आप क्या कहना चाहेंगे?

फागूराम जो ज्यादा पढा लिखा नहीं था और आम तौर पर वह अखबार से दूर ही रहता था बोला भाई मनोहर इस प्रकार की खबरें तो हमारी समझ ही नहीं आती। मैं इस पर क्या कह सकता हूं। भाई सबकी भीड देखकर यहां रूक गया था। नहीं तो आप तो जानते ही हैं हम जैसे लोगों को मजदूरी के काम से ही फुरसत नहीं मिलती। ओ ठीक है फागू मैं आपसे कोई अमेरिका और रूस की नीतियों पर थोडी राय मांग रहा हूं मनोहर ने कहा।

उसी समय वहां खडे दिलहरण कौशिक ने कहा भईया मनोहर इनसे क्या पूछ रहे हो। मुझसे पूछो न। मैं अपना विचार बतला देता हूं। मनोहर ने कहा हां हां दिलहरण आप ही बतला दो।

दिलहरण ने कहा. भईया मनोहर इसी को कहते हैं उल्टा चोर कोतवाल को डांटे। भाई खुद गलती करो और पकडने वाले पर ही मुकदमा ठोक दो। अब देखा न शिक्षकों का काम क्या है बच्चो को सीखाना और अगर बच्चे न सीख पाये तो इसमें गलती तो शिक्षकों की ही है न। अब अगर शिक्षकों को सुधारने के लिये उन पर कुछ कार्यवाही की जाती है तो उसे स्वीकार करने के बदले उल्टा उन्हीं पर मुकदमा चला दें। तो हुआ न उल्टा चोर कोतवाल को डांटे वाली बात।

मनोहर ने कहा. हां दिलहरण तुमने बिल्कुल सही कहा है। देखों तो कैसा जमाना आ गया है। पहले ऐसा नहीं होता था। पहले लोगों से गलती होने पर सजा मिलती थी तो उसे मन से स्वीकार कर लेते थे। ऐसे में गलती स्वीकार करने वालों का मन और आत्मा दोनों परिष्कृत होता था और फिर भविष्य में उनसे दोबारा गलती नहीं होती थी। लेकिन आज देखो तो संविधान ने लोगों को अधिकार क्या दे दिया सब छोटी छोटी बातों को लेकर सीधा न्यायालय की शरण में जा रहे हैं और वही कर्तव्य निभाने की बात आती है तो अपने को उससे कोसो दूर कर लेते हैं। अरे भाई लोगों को यह तो सोचना चाहिये न कि जब हम अपने अधिकार को लेकर न्यायालय जा सकते हैं तो जिसके प्रति हम कर्तव्य निर्वहन के लिये जिम्मेदार हैं वह हम पर कर्तव्य पूरा नहीं करने की स्थिति में कार्यवाही क्यों नहीं कर सकता। पर नहीं लोगों को ऐसा सोचना ही नहीं है। उन्हें तो केवल एक बात की फिकर रहती है कि चाहे कुछ भी हो जाये उनका नुकसान नहीं होना चाहिये। चाहे इसके लिये उन्हें कुछ भी करना पडे। इसी को कहते हैं चोरी और उस पर सीना जोरी।

मनोहर की सारी बातें वहीं पास बैठा वृन्दा पाल सुन रहा था। जब मनोहर बोलकर रूका तब उन्होंने कहा. ठीक है मनोहर यह जो तुम बोल रहे हो न वह इस सिद्धांत पर आधारित है कि शिक्षकों का काम बच्चों को सीखाना है। पर तुम यह नहीं जानते कि आजकल इस सिद्धांत में परिवर्तन आया है। अब शिक्षाविदों का मानना है कि शिक्षक का काम बच्चों को सीखाना नहीं बल्कि उन्हें सीखने देने का अवसर उपलब्ध कराना है। अब तुम इस दूसरे सिद्धांत को ध्यान में रखकर सोचों तब तुम पाओगे कि जहां पहला सिद्धांत बच्चों के सीखने में शिक्षक की भूमिका को महत्वपूर्ण मानता है वहीं दूसरा सिद्धांत सीखने में बच्चों की भूमिका को। शिक्षक तो अब केवल एक सुविधा प्रदाता है। जो सीखने के लिये अवसर प्रदान करता है। इसलिये हम शिक्षकों की आलोचना इस आधार पर नहीं कर सकते हैं कि शिक्षकों ने समुचित अवसर प्रदान करने की ओर उतना ध्यान नहीं दिया जितना ध्यान उन्हें देना चाहिये था ताकि बच्चे विषयवस्तु को सीख पाते।

वृन्दा पाल की बातों से मनोहर के तन बदन में आग लग गई। जैसे ही वृन्दापाल ने बोलना बंद किया मनोहर बोला. आप तो शिक्षकों के पक्ष में ही बोलेंगे। यह तो मुझे पहले से ही मालूम था क्योकि आपके परिवार और रिश्तेदारी में दो चार लोग शिक्षक जो हैं। पर जिनके यहां से कोई शिक्षक नहीं है उनके मुंह से एक शब्द तो शिक्षकों की प्रशंसा में निकल जाये तब मैं मानू।

वृन्दापाल ने कहा. नहीं मनोहर ऐसी बात नहीं है। हम जब कभी किसी मुददे पर बात कर अपना राय रखें तब हमें हर पहलू पर विचार करना चाहिये। तभी हमारा अभिमत निष्पक्ष हो सकता है। नहीं तो एक तरफा विचार करने से जिस विचार के प्रति हमारे मन में किसी भी प्रकार का पूर्वाग्रह या दुराग्रह रहेगा हमारा ध्यान भी उसी पर जाकर केन्द्रित हो जायेगा और यह न्याय के सिद्धांत के प्रतिकूल होगा।

मनोहर. तो आप कहना चाह रहे हैं कि शिक्षकों के प्रति मेरे मन में पूर्वाग्रह या दुराग्रह है। ठीक है थोडी देर के लिये मैं आपकी यह बात मान भी लेता हूं पर क्या मेरे जैसे विचार रखने वाले सभी लोगों के मन में ऐसा ही है। आप जरा यह भी सोंचकर तो देखिये कि जिसका जैसे समाज में छवि बनता है वैसा ही उसके प्रति लोगों का विचार बनता है। अगर लोगों के मन में पूर्वाग्रह या दुराग्रह का विचार आया भी तो इसके लिये शिक्षक ही जिम्मेदार हैं क्योंकि समाज में वे अपना छवि ही ऐसा बना लिये हैं। नही तो आज से 20.25 साल के पहले के शिक्षकों की कार्य व्यवहार को सोंचकर देखिये। मजाल था जो समाज के कोई लोग किसी शिक्षक के विरूद्ध एक शब्द भी कहने की हिम्मत कर देते।

वृन्दापाल. नहीं मनोहर किसी के छवि के आधार पर बना हमारा विचार सदा सत्य ही हो ऐसा नहीं होता। कभी कभी विषय के संबंध में हमारी अधूरी जानकारी भी इसके लिये जिम्मेदार होता है जैसे शिक्षकों के संबंध में आज समाज के लोगों में जैसी जानकारी है उसे मैं आधी अधूरी ही कहूंगा क्योकि यह जानकारी केवल इस बात पर आधारित है कि शिक्षकों का काम केवल बच्चो को सीखाना है। लेकिन आपको यह भी सोचना चाहिये कि बच्चों के सीखने में बहुत से कारको का योगदान होता है। केवल शिक्षक ही इसके लिये अकेले जिम्मेदार नहीं हो सकता। इस कारण मैं तो चाहता हूं कि प्रशासन के द्वारा जो कार्यवाही शिक्षकों के प्रति की जा रही है वह सर्वथा अनुचित है और शिक्षक संघ को पूरे जोर शोर से इस मामले को न्यायालय में ले जाना चाहिये।

मनोहर. जैसे आप मुझे कह रहे थे न कि मेरा विचार पूर्वाग्रह और दुराग्रह से ग्रसित है वैसे ही मैं भी कह रहा हूं कि आपका विचार भी इससे अछूता नहीं है। वृन्दापाल ने देखा कि मनोहर पर उनके तर्कों का कोई प्रभाव नहीं पड रहा है और न पडने की संभावना है तब वहां से चले जाना ही उनको उचित लगा। अंत में जाते जाते मनोहर से बोला. अब देखो मनोहर यहां खडे होकर हर आने.जाने

वाले का विचार आप जानना चाह रहे थे। कोई अपने मन से अपना विचार तो आपको बतला नहीं रहे थे। इस तरह लोगों की राय जानने का फायदा तभी होगा जब आप विषय पर हर पहलू से चिार करेंगे। नहीं तो यह अपने साथ साथ सभी का समय बर्बाद करने वाला काम के अतिरिक्त और कुछ नहीं कहा जा सकता। मनोहर वृन्दा को जवाब देने ही वाला था कि उसकी नजर सामने से आ रहे जुगल किशोर पर पडा जो धीरे धीरे मुस्कराते हुये वहीं आ रहा था। उसको देखते ही मनोहर ने पूछा और जुगल आओ उस मोहल्ले में कैसी और क्या चर्चा हो रही है। जुगलकिशोर ने कहा. अरे क्या बतलाउं मनोहर उधर तो मुझे एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं मिला जो शिक्षकों के पक्ष में दो शब्द भी बोल देता। उल्टा सब मेरी बातों पर हां में हां मिलाते हुये यही कह रहे थे कि सही बात है जुगल प्रशासन को शिक्षकों के उपर इससे भी बडी कार्यवाही करनी चाहिये थी। अगर कार्यवाही का विरोध कर रहे हैं तो कम से कम सभी शिक्षकों के लिये यह आदेश होना चाहिये कि वे अपने बच्चों को शासकीय स्कूलों में ही भर्ती करें। फिर देखते है कि सभी बच्चे कैसे लर्निग आउटकम्स को नहीं जानेंगे। जब तक शिक्षक अपने बच्चों को प्रायवेट स्कूलों में पढाते रहेंगे सरकारी स्कूल के बच्चों का हाल यही रहेगा।

मनोहर. हॉ जुगल। यहां भी ज्यादातर लोगों का विचार ऐसा ही रहा सिवाय वृन्दा को छोडकर। वह बडा शिक्षकों का हिमायती बन रहा था। मैंने तो एक ही लाइन में उसकी बोलती बंद कर दी। कहा कि आपके घ्रर में ही शिक्षक है न इस कारण उनके पक्ष में बात तो करोगे ही। बेचारा थोडी देर रूका और फिर अपना सा मुंह लेकर चलते बना।

मनोहर की बातें सुनकर वहां जितने भी लोग खडे थे सब के सब जोर से हंसने लगे। थोडी देर ईधर उधर की बातें करने के बाद सभी एक एक कर अपने अपने घरों की ओर चले गये।

(11)

सुबह उठकर शुक्लाजी हांथ मुंह धो रहे थे। उसी समय घर के बाहर मोटरसायकल रूकने की आवाज सुनाई दी। यह सोंचकर कि शायद उन्हीं के यहां कोई आया हो जल्दी जल्दी हांथ मुंह धोकर दरवाजे की ओर गया। अभी दरवाजा खोलने ही वाले थे कि बाहर से तिवारी जी की आवाज सुनाई दिया. शुक्लाजी। ओ शुक्लाजी। दरवाजा खुलते ही तिवारी जी अंदर आये। शुक्लाजी तिवारी जी को अंदर कमरे में बैठाते हुये बोला. तिवारी जी। आज सुबह सुबह कैसे आना हुआ?् ओ भी तैयार होकर। कहीं जा रहे है क्या्?अब तक तिवारी जी सोफे पर आराम से बैठ चुका था। शुक्लाजी के प्रश्नों का जवाब देते हुये बोला. ओ रात में शहर से वकील का फोन आया था। बोल रहा था कि बडे सबेरे आकर मिलो। कुछ जरूरी बात करना है तो मैंने सोंचा कि अकेले जाने से अच्छा है आपको भी साथ ले चलूं।

शुक्लाजी बोले. ऐसा क्या इमरजेन्सी आ गया जो वकील ने बडे सबेरे आने को कहा है।

तिवारी जी. मुझे लगता है कि केस की सुनवाई जल्दी होने की संभावना है। उसी सिलसिले में कुछ और कागजात वगैरह की आवश्यकता होगी। शुक्लाजी शहर जाने के लिये तैयार होते हुये बोला. अरे भाई यह कोई राजस्व का केस है क्या जिसके लिये वकील कागजात मांग रहा है ?यह तो विभागीय मामला है। इसमें कागजात कैसा?् प्रशासन का वह आदेश है जिसमें अधिकारी के हस्ताक्षर से वेतनवृद्धि रोकने का आदेश जारी हुआ है और जहां तक मैं मानता हूं कि इसी आदेश पर उन्हें अदालत में बहस करना है।

तिवारीजी. हॉ शुक्लाजी मैं भी यही सोंच रहा हूं पर मन में यह भी ख्याल आया कि कहीं हमारे पक्ष को मजबूत बनाने के लिये स्कूल से संबंधित कोई कागजात या रिकार्ड की आवश्यकता थोडी है।

शुक्लाजी. स्कूल से संबंधित रिकार्ड मतलब बच्चों की प्रगति से संबंधित सब कुछ जैसे. उनका इकाई व मासिक मूल्यांकन तिमाही व छमाही परीक्षा पंजी सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की पंजी व माहवार विदयार्थी विकास सूचकांक की जानकारी यही कहना चाह रहे हैं आप ?

तिवारी जी. हॉ शुक्लाजी। मुझे तो यही लग रहा है। भाई हमने अपने वेतनवृद्धि रोकने के आदेश का इस आधार पर विरोध किया है कि बच्चों में लर्निंग आउटकम्स नहीं आ पाने के लिये केवल शिक्षक ही जिम्मेदार नहीं है बल्कि इसमें अनेक कारकों की भूमिका होती है। अतः शिक्षकों पर की गई कार्यवाही न केवल अवैधानिक है। बल्कि दोषपूर्ण भी है। और ऐसा सिद्ध करने के लिये हमें अपने प्रयासों को तो दिखाना पडेगा। शिक्षकों के द्वारा बच्चों को सीखाने के लिये क्या क्या प्रयास किये गये उसको सही ढंग से माननीय अदालत के सामने रखने के लिये वह सब दस्तावेज या रिकार्ड आवश्यक है जिसका उल्लेख अभी अभी आपने किया है।

शुक्लाजी. तिवारी जी यह तो बहुत कठिन काम है। आपकी बातों को सुनकर मुझे भी डर लगने लगा है। मैं खुद ऐसे बहुत से स्कूलों को जानता हूं जो रिकार्ड संधारण के मामले में शून्य है और इसके साथ ही मुझे यह बात भी समझ आ रही है कि अधिकांश लोग क्यों शासन और प्रशासन के सम्मुख नतमस्तक हो जाते हैं।

तिवारीजी. शुक्लाजी तो क्या आप यह कहना चाह रहे हैं कि मैं भी प्रशासन के आदेश को शिरोधार्य कर लूं। इसके विरूद्ध कहीं भी अपील न करूं।

शुक्लाजी. नहीं तिवारी जी। मेरा कहना आपके लिये नहीं था। मैं तो यह बात उन स्कूलों के संदर्भ में कह रहा था जहां रिकार्ड के नाम पर कुछ जरूरी चीजों को छोडकर कोई भी सही और पूर्ण स्थिति में नहीं होती। अब आप ही जरा सोंचकर देखिये कि आपकी जगह किसी ऐसे संस्था प्रधान के उपर

कार्यवाही हुई होती जिनके यहां अदालत के सामने रखे जाने वाले आवश्यक रिकार्ड नहीं होते तो क्या वह अदालत जाने की हिम्मत करता् बिल्कुल नहीं करता।

तिवारीजी. इसी बात का तो दुख है शुक्लाजी कि मेरे यहां सब कुछ होते हुये भी मुझ पर कार्यवाही कर दी गई।

शुक्लाजी. हॉ तिवारीजी। इस बात को मैं तो क्या सभी लोग मानते हैं। यहां तक कुछ अधिकारियों का भी यही कहना है कि तिवारी जी जैसे सक्रिय शिक्षक के उपर कार्यवाही किया जाना समझ के परे हैं। पर मैं यही बात तो बोल रहा था कि शासन और प्रशासन में बैठे लोगों को इस बात का आभास रहता है कि कोई न कोई उनके आदेशनिर्देश को अदालतों में चुनौती दे सकता है। इसी कारण वे अपना आदेश और निर्देश इस तरह की भाषा में जारी करते हैं कि उसे चुनौती देने के लिये प्रभावित पक्ष को बहुत परिश्रम करना पडता है जैसे हम अपने विभाग के इसी मामले को ले लें। अपना पक्ष सही साबित करने के लिये एक एक बच्चों की जानकारी लिखित सबूत सहित अदालत में रख्ना होगा।

इस बीच जानकी चाय बनाकर दोनों के लिये चाय वहीं टी टेबल पर रखते हुये बोली. हॉ तिवारी भईया यह मामला दो कारणों से सभी शिक्षकों के लिये महत्वपूर्ण हो गई है पहली बात तो यह कि अगर इस मामले में शिक्षकों की जीत होत है तब समाज में फैले नकारात्मक विचार भी दूर होगी और दूसरी बात यह कि शासन और प्रशासन भी ऐसे ही चमकाने या डराने के लिये कार्यवाही करने की प्रवृत्ति से बचेगा।

तिवारीजी. हॉ भाभी। इसी कारण तो सब कुछ भूलकर जी जान से इस केस में लगा हुआ हूं और वैसे भी भाभी मैं लोगों की फालतू की बातों पर ध्यान

नहीं देता। ऐसी बातों पर ध्यान देने का मतलब है अपनी उर्जा और समय दोनों जाया करना।

जानकी. हॉ भईया। इस बात को तो मैं भी मानती हूं और मनीष के पिताजी से बोलती भी हूं कि यह तो तिवारी भईया और उनके परिवार के सदस्यों की भलमनसाहत और सहनशीलता है कि लोगों के बहुत कुछ बोलने के बाद भी कोई जवाब नहीं देते। नहीं तो कोई दूसरा होता तो रोज एक दो लोगों से लडाई झगडा हो जाता।

तिवारीजी. हॉ भाभी। अब कितने लोगो से लडोगे। समाज में कुछ अपने पक्ष तो कुछ अपने विपक्ष के लोग तो रहेंगे ही। लडाई झगडा करना एक प्रकार से कमजोरी की ही निशानी है शक्ति कि नहीं और यही बात मैंने अपने बच्चों को भी सिखाया है। मेरे दोनों बच्चों को इस कारण कितना और क्या क्या नहीं सुनना पडा है। पर दोनों किसी को जवाब देने के बदले उस स्थान को ही छोड कर आ जाते थे।

जानकी. हॉ तिवारी भईया। यही बात तो मैं इनसे भी बोलते रहती हूं। चाहे कोई भी परिस्थिति आ जाये इंसान को अपने मन और दिमाग पर काबू बनाये रखना चाहिये। जो भी इंसान ऐसा कर लेता है तो आधी लडाई तो वह वहीं पर जीत जाता है।

शुक्लाजी. तो जानकी तुम्हारी नजर में मैं झगडालू व्यक्ति हूं।

जानकी. नहीं मनीष के पिताजी। ऐसा मैं कब बोली की आप झगडालू व्यक्ति हैं। पर हां आप जल्दी घबरा जाते हैं और जो व्यक्ति जल्दी घबराता है वह जल्दी से अपने मन और दिमाग से अपना नियंत्रण खो देता है। ऐसे में लडाई झगडा की संभावना बढ जाती है।

तिवारीजी. हॉ शुक्लाजी। भाभी जी बिल्कुल सही कह रही है। आत्मविश्वास में कमी से मन में घबराहट या डर उत्पन्न होता है डर से तनाव और तनाव से सोंचने विचारने की शक्ति क्षीण होती है जो अंततः मन और दिमाग को असंयमित कर देता है और लडाई झगडा का कारण बन जाता है।

शुक्लाजी. तिवारीजी और जानकी आप दोनों ही मेरे व्यवहार को नहीं समझ पाये हैं। अरे जो व्यक्ति मनोहर और जुगल किशोर की बातों को सह ले उससे बडा संयमित व्यक्ति क्या इस संसार में हो सकता है।

जानकी. मनीष के पिताजी आपने यह बात तो उचित ही कहा है। सही में वे दोनों ऐसे व्यक्ति हैं तो गाय जैसे सीधे व्यक्ति को भी क्रोध से भर दें।

शुक्लाजी. तो अब बतलाओ मेरा मुझ पर नियंत्रण है कि नहीं।

तिवारीजी. बिल्कुल है शुक्लाजी। पर अब अगर थोडा भी देर और करेंगे तो शायद वकील साहब का अपने पर नियंत्रण नहीं रहेगा। उन्हें जो बहस अदालत में करना होगा वह सब बहस हम दोनों से करना शुरू कर देगा। जाते ही बोलेगा. अरे मैं बडे सबेरे बुलाया था और आप लोग अभी आ रहे हैं। अपने न सही मेरे समय की कीमत तो पहचानते।मेरा दिन में हजारों काम रहता है। इससे मिलो उससे मिलो इनका सबूत इकटठा करो उनका सबूत इकटठा करो। कभी इनकी पेशी की तारीख बढवाओ तो कभी उनकी पेशी की। और आप लोग हैं कि अभी आ रहे हैं और ओ भी खाली हाथ। कागजात मंगवाया था ओ कहां है। कम से कम कुछ कागजात तो दिखाने के लिये ले आते वगैरह वगैरह और न जाने क्या क्या सुनना पड जाये।

शुक्लाजी. हां तिवारीजी। बातों में तो हम भूले ही जा रहे थे कि हमें शहर जाना है। देखो तैयार होकर भी यहीं के यहीं बैठ गये और यह जानकी भी न चाय देकर चुपचाप चली जाती तो वह भी हमारे बातों में शामिल होकर देर में देर कर दी।

शुक्ला जी की बात सुनकर जानकी और तिवारी जी दोनों हंसते हुये घर से बाहर निकल मोटरसायकल स्टार्ट कर शहर की ओर वकील साहब से मिलने निकल गये। उनके जाने के बाद भी जानकी बैठक कक्ष से चाय का कप उठाते उठाते मुस्कुराते रही।

0000000000000000000000000000000000000000

(12)

जब तिवारी जी और शुक्लाजी वकील दयाराम सिन्हाजी के यहां पहुंचे तब सिन्हाजी उन्हीं के केस का अध्ययन कर रहे थे। दोनो को सोफे पर बैठाते हुये सिन्हाजी ने कहा. देखो तिवारीजी मैंने आपके केस को बारिकी से अध्ययन किया है। इसके बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि तमाम रिकार्ड होने के बावजूद अगर उनमें शाला प्रबंध समिति के सदस्यों का सत्यापन वाला हस्ताक्षर न हा तब तक कुछ नहीं कहा जा सकता।

सिन्हाजी के बातों को सुनने के बाद तिवारीजी बोले. मगर वकील साहब आप जिन रिकार्डों की बात कर रहे हैं वह तो पूर्ण रूप से अकादमिक रिकार्ड है और हम लोग प्रायः अपने शाला की अकादमिक स्थिति की जानकारी शाला प्रबंध समिति के सदस्यों को बैठक में मौखिक रूप से देते हैं लेकिन उस पर उनका हस्ताक्षर नहीं लेते।

सिन्हाजी बोले. तिवारीजी यहीं तो आपने गलती किया है। भाई आप लोगों को यह तो मालूम है कि शाला प्रबंध समिति कोई सामान्य समिति नहीं है। इसका गठन प्रत्येक शालाओं में शिक्षा के अधिकार अधिनियम के तहत किया गया है। चूंकि इस समिति का उल्लेख हमारे अधिनियम में है इस कारण यह विशिष्ट स्थान और महत्व रखता है। आप लोगों ने इतने महत्वपूर्ण बातों की उपेक्षा कैसे कर दी ह?ै

तिवारीजी. सर मैं क्या लगभग सभी स्कूल वालों ने इतना ध्यान तो रखा कि शाला में शाला प्रबंध समिति का गठन हो और शाला के लिये शाला विकास योजना बनाने में समिति की सक्रिय सहभागिता प्राप्त हो।

सिन्हाजी. यहां तक तो ठीक है तिवारीजी। पर जैसे जैसे मैं इस केस का अध्ययन कर रहा हूं वैसे वैसे मुझे समझ आ रहा है कि सभी संस्था प्रमुखों ने शाला विकास योजना को एकपक्षीय ढंग से समझा है अर्थात उनके अनुसार शाला विकास योजना का अर्थ केवल शाला के भौतिक संसाधनों का विकास है। जबकि इसके अंतर्गत शाला का अकादमिक विकास भी सम्मिलित है।

तिवारीजी. हॉ वकील साहब। ऐसा नहीं है कि हम इसके बारे में नहीं जानते। जरूर जानते हैं और इस संबंध में समिति की बैठकों में चर्चा भी किये हैं। पर उपस्थित सदस्यों का यही कहना रहता था कि मास्टरजी ये पढाई लिखाई का मामला है। इसे आप लोग ही अच्छे ढंग से समझ सकते हैं। आप लोग जैसा करेंगे वह सब हमें मान्य होगा। और बस यह आश्वासन पाकर हम लोग भी निश्चिंत हो जाते थे।

तिवारीजी और सिनहाजी के बीच चल रही वार्ता में प्रवेश करते हुये शुक्लाजी ने कहा. हॉ वकील साहब ऐसा ही लगभग सभी स्कूलों में हुआ है और हम लोग भी यह सोंचकर कि लर्निंग आउटकम्स इकाई मूल्यांकन तिमाही व छमाही परीक्षा में पूछे गये प्रश्नों की प्रकृति सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की प्रक्रिया इत्यादि को एक शिक्षक ही अच्छे ढंग से समझ सकता है समिति के सदस्य नहीं उन पर इस विषय में भाग लेने के लिये ज्यादा जोर नहीं डालते थे।

शुक्लाजी को जवाब देते हुये सिन्हाजी बोले. हॉ शुक्लाजी पर मैंने यह कब कहा कि शाला प्रबंध समिति के सदस्यों को इन बातों की विस्तृत जानकारी हो। मेरा या शिक्षा के अधिकार अधिनियम के कहने का तात्पर्य यह है कि शाला विकास योजना बनाते समय उसके हर पहलू की जानकारी शिक्षकों के द्वारा समिति के सदस्यों को दिया जाये और अंत में उस दस्तावेज पर जिस पर इसे लिखा जा रहा हो उन सबका हस्ताक्षर हो। ऐसा करने से दो बातें स्पष्ट

होती हैं पहला यह कि स्कूल वालों ने अपनी सारी योजनाओं की जानकारी समिति को दी है और दूसरा यह कि शाला की अच्छाई व बुराई दोनों से ही समिति परिचित है। इस प्रकार उस शाला की अच्छाई व बुराई दोनों का श्रेय कुछ अंश के समिति के सदस्यों का भी हो जाता।

शुक्लाजी. हॉ वकील साहब आपकी बात सही प्रतीत हो रही है और अब मुझे यह भी समझ में आ गया कि तिवारीजी का जो वेतन.वृद्धि रोका गया उसका मूल कारण यही है।

तिवारीजी. हाँ यार शुक्लाजी। मैं भी उसी दिन से मन ही मन सोचते रहता था कि आखिर अधिकारियों ने किस कमी के आधार पर कार्यवाही की है और अब जाकर पता चल रहा है। शाला व बच्चों की अकादमिक स्थिति के बारे में समिति के सदस्यों से चर्चा तो जरूर करते थे पर उसे इतना गंभीरता से नहीं लेते थे।

सिन्हाजी. हॉ अगर ऐसा होता तब यह परिस्थिति ही उत्पन्न नहीं होती। खैर अब उन चीजों के बारे में सोंचने या बात करने से क्या फायदा जिसका समय निकल गया हो। अब तो इस बात पर ध्यान केन्द्रित करना बुद्धिमानी होगा कि यह परिस्थिति आगे और कभी निर्मित न हो।

शुक्लाजी थोडा चिंतित होते हुये बोले. वकील साहब तो क्या अभी तक जो हुआ है उस पर हम कुछ नहीं कर सकते। यह वेतन वृद्धि रोके जाने की सजा ज्यों की त्यों रहेगी ?

शुक्लाजी को ढांढस बंधाते हुये सिन्हाजी बोले. मैं अपनी ओर से अदालत में इस बात का पूरा ध्यान रखूंगा कि हम लोंगों का पक्ष किसी भी सूरत में कमजोर न पडे और मुझे यह भी लगता है कि माननीय अदालत इस बात पर भी गौर करेगा कि अकादमिक पक्ष पर किसी गैर अकादमिक व्यक्ति से किस सीमा तक बातचीत करना उचित हो सकता है ? पर हां आगे भी ऐसा न हो

इसके लिये आप लोग अपने संघ की बैठक में इस बात को रखिये कि चाहे वह कक्षावार विषयवार लर्निंग आउटकम्स हो विभिन्न प्रकार के परीक्षाओं का आयोजन हो सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की दुरूह प्रक्रिया हो या फिर नवाचारों की जानकारी व उसका कक्षा में उपयोग सभी की जानकारी शाला प्रबंध समिति की सदस्यों को न केवल विस्तार से दे बल्कि उनके अभिमत के साथ पंजी में हस्ताक्षर भी लें।

शुक्लाजी. वकील साहब ऐसा कर लेना भी इस बात की गारंटी नहीं है कि प्रशासन की ओर से किसी पर कोई कार्यवाही नहीं होगी। आज इस आधार पर कार्यवाही कर रहे हैं कल कार्यवाही करने के लिये कोई दूसरा आधार खोज लेंगे।

सिन्हाजी थोडा मुस्कुराते हुये बोले. तो क्या आप अपने शिक्षक को किसी भी प्रकार की कार्यवाही से उपर रखना चाहते है?

सिन्हाजी के प्रश्न सुनकर तिवारीजी को लगा कि भाव के प्रवाह में बहते हुये शुक्लाजी के मुंह से ऐसी बात निकल गई है जिसकी जानकारी होने पर उन्हें भी लगेगा कि ऐसा वह कैसे बोल सकता है? तिवारीजी को यह भी आभास हो गया था कि वकील साहब के प्रश्न पर जैसे ही शुक्लाजी का ध्यान केन्द्रित होगा उसे इस प्रश्न का उत्तर देने में कठिनाई होगी। अतः संभावित असमंजस की स्थिति को भांपते हुये तिवारीजी ने कहा. वकील साहब इस संसार में ऐसा कोई पद या व्यवसाय समूह नहीं है जिसके द्वारा गलती न किया गया हो या गलती न किया जाता हो और जब कोई गलती करेगा तब उसे सजा भी मिलेगी या मिलनी चाहिये। अगर ऐसा न हो तब तो समाज की व्यवस्था ही भंग हो जायेगी।

सिन्हाजी. हां तिवारी जी ऐसा ही है और फिर इससे लाभ हमारा ही होता है। अब अगर कोई अपने को कार्यवाही निरपेक्ष मान लें तब तो वह गलती पर गलती करते जायेगा। आप लोग अपने ही मामले को ले लीजिये। जब से कुछ

प्रधानपाठकों पर कार्यवाही होना आरंभ हुआ है तब से बहुत से स्कूलों ने अपने में सुधार लाना भी आरंभ कर दिया है। अगर किसी भी प्रकार की कार्यवाही नहीं होती तब तो कोई कुछ करता ही नहीं।

सिन्हाजी की बातों से शुक्लाजी को लगा कि भले से वह वकील के रूप में उनका केस लडेगा लेकिन मन के किसी कोने में कार्यवाही के इस सरकारी आदेश का समर्थक का भाव भी रखा हुआ है। कुछ पल के लिये तो उसे लगा कि कहीं सिन्हाजी उन्हें केस तो नहीं हरा देंगे पर यह सोचकर की समाज में एक ही व्यक्ति का कई स्वरूप हो सकता है और बनने वाली परिस्थिति के अनुसार विभिन्न स्वरूपों में छिपे अलग अलग भाव सतह पर आते और चले जाते हैं। हो सकता है वकील साहब ने अभी जो बात कहा उसे कहते समय उनमें एक पालक का भाव रहा हो और कोई भी पालक एक नजर में यह तो बिल्कुल ही नहीं चाहेगा कि उसका बच्चा अकादमिक दृष्टि से कमजोर हो भले ही वह स्वयं इन सबके लिये जिम्मेदार क्यों न हो। अपने मन में उठ रहे शंकाओं के समाधान के लिये शुक्लाजी कुछ पूछने ही वाले थे कि सिन्हाजी उनके मन के भाव को समझते हुये बोले. शुक्लाजी आप किसी प्रकार की चिंता मन में मत रखिये। अदालतों में भावों का कोई स्थान नहीं होता। वहां तो केवल सबूतो के आधार पर केस को जांचा और परखा जाता है।

तिवारीजी बोले. नहीं वकील साहब। हमारे मन में किसी प्रकार की शंका का तो कोई प्रश्न ही नहीं है। रहा सवाल केस जीतने या हारने का तो जैसा आपने कहा प्रमाण पर निर्भर करेगा। फिर इन सबसे हटकर मैं यह भी मानता हूं कि जो भी गलती करे उसे उसकी सजा जरूर मिलनी चाहिये। रहा प्रश्न शाला प्रबंध समिति के सदस्यों को सक्रियता के साथ शाला के अकदामिक पक्ष से जोडने की तो यह काम हम आज से ही आरंभ कर देंगे और इसकी जानकारी मैं संघ के सदस्यों के माध्यम से तत्काल देने का प्रयास करूंगा। हालांकि यह

सत्र तो व्यतीत होने के कगार पर है पर सचेत होकर हम सभी अपने भविष्य को सुरक्षित कर सकते हैं।

सिन्हाजी. हॉ तिवारी जी आपने यह बात बहुत ही सुंदर कही। हमें अपनी पिछली गलतियों से सबक लेते हुये उसकी पुनरावृत्ति पर पूर्ण विराम लगाना चाहिये। बाकी तो आप लोग जानते ही हैं कि सत्यमेव जयते ।

तिवारीजी. हॉ वकील साहब। सत्यमेव जयते।

इसके बाद तिवारी जी और शुक्लाजी वकील साहब से विदा लेकर अपने गांव की ओर प्रस्थान किये। रास्तें में शुक्लाजी ने तिवारीजी से पूछा क्यो तिवारी जी वकील साहब की बातों को सुनकर आप को क्या लगा् हमारा पक्ष तो मजबूत है न?

तिवारीजी बोले. यार शुक्लाजी अब ईधर उधर की बातों से क्या फायदा मन में केवल एक ही बात रख।

शुक्लाजी बोले. और वह बात है सत्यमेव जयते ।

(13)

तिवारीजी और शुक्ला जी वकील के यहां से निकलकर गांव की ओर आ रहे थे। रास्तें में तिवारीजी का मोबाईल दो दीन बार बज चुका था। पर एक तो वह हेलमेट लगाये हुये थे और दूसरा प्रायः कंपनी की फोन आते ही रहता है सोंचकर फोन उठा नहीं रहा था। लेकिन जब मोबाईल चैथी बार बजी तब शुक्लाजी ने कहा. तिवारीजी ओ सडक किनारे पेड की छाया में गाडी खडी करके फोन रिसिव्ह कर ही लो। नहीं तो पूरे रास्ते भर यह ऐसा ही परेशान करता रहेगा।

तिवारीजी के मन मे स्वयं से फोन रिसिव्ह करने की कोई ईच्छा नहीं थी। लेकिन जब शुक्लाजी ने कहा तब उसे भी लगा कि दो मिनट रूककर देख ही लिया जाये कि आखिर किसका फोन है। जिसके मन में इतनी भी समझ नहीं है कि अगर सामने वाला फोन रिसिव्ह नहीं कर रहा है तब कोई न कोई बात तो होगी ही। शुक्लाजी के कहे अनुसार गाडी पेड की छाया में खडी करते हुये उपर जेब में रखे मोबाईल निकाला और बिना यह देखे कि किसका फोन है बोला हैलो। हां कौन बोल रहे हैं। मैं हूं भांजा। रामस्वरूप मामा. उधर से आवाज आई।

तिवारीजी. अच्छा मामजी आप है। प्रणाम मामाजी।

रामस्वरूप. प्रणाम भांजा प्रणाम। कहीं व्यस्त थे क्या ? काफी देर बाद फोन उठाये।

तिवारीजी. हां मामाजी। मोटरसायकल चला रहा था और उस पर हेलमेट भी पहना हुआ था। इसी कारण घंटी सुनाई नहीं दिया।

रामस्वरूप. क्यों आज सुबह से कहां जा रहे हो?

तिवारीजी. जा नहीं रहा हूं मामाजी आ रहा हूं। ओ वकील से मिलने शहर गया था।

रामस्वरूप. हां भांजा आपके प्रकरण के बारे में अखबार में पढा था। तभी से फोन लगा रहा हूं और आज जाकर बात हो रही है। ऐसा भी नहीं सोंचे की चलो तो मामा को फोन करके बतला दूं।

तिवारीजी. ओ क्या है मामा। मैंने सोंचा की छोटी.मोटी बातों के लिये क्यों परेशान किया जाये। अगर कोई बडी बात होती तो मैं जरूर बतलाता ।

रामस्वरूप. भांजा आप इसे छोटी मोटी बात कह रहे हैं। शासकीय प्रक्रिया में कोई भी दण्ड छोटा नहीं होता। सभी का उल्लेख सर्विस बुक में किया जाता है। फिर भांजा यह भी सोचों न कि ऐसे कार्यवाही के बाद प्रकरण को अखबार वाले जिस ढंग से लिखते हैं और पढने वाले मिर्च मसाला लगाकर एक दूसरे से बात करते हैं उससे कितना कष्ट होता है और आप इसे छोटी मोटी बात कह रहे हैं।

तिवारीजी. मामाजी जहां लोगों को 35.40 साल तक नौकरी करना होता है तो इतनी लंबी अवधि में कोई न कोई बात तो होना ही होता है। फिर आप तो जान ही रहे हैं कि आज कल चाहे वह शिक्षा विभाग हो या फिर अन्य कोई विभाग सभी जगह काम करने की प्रक्रिया जटिल हो गई है और ऐसी परिस्थिति में कमी का पाया जाना मेरे अनुसार स्वाभाविक है। अब अगर हम हर बिन्दू पर चिंता करने लगे तब तो एक दिन भी नौकरी करना कठिन हो जायेगा।

रामस्वरूप. भांजा खुद के मन को तसल्ली देने के लिये यह सब कुछ कहना अच्छा है। पर दाग तो दाग होता है न। ठीक है नौकरी करने वाले लोग आपकी परिस्थिति को शासकीय कार्यों की जटिलताओं को और की गई कार्यवाही की प्रकृति को समझ जायेंगे। पर लोगों का क्या करोगे। उसके लिये तो कार्यवाही मतलब कार्यवाही। न कोई छोटा और न कोई बडा। अरे मेरे गांव के ही दो चार लोग अखबार में पढने के बाद मुझसे आकर बोल रहे थे शर्माजी क्या यह बात सही है कि आपके भांजे को नौकरी से हटा दिया गया हैं? एक आप हो कि इसे

छोटी मोटी बात कहकर हल्के में ले रहे हो। प्रकरण इतना भी हल्का नहीं है भांजा जितना आप समझ रहे हो।

तिवारीजी. मामजी बोलने वालों की मुंह को तो जबरदस्ती बंद कर नहीं सकते। जब तक मन चाहेगा और जब तक बोलने के लिये कोई दूसरा विषय मिल नहीं जायेगा तब तक वे बोलते ही रहेंगे। जहां तक अपने प्रकरण को हल्के में लेने से मेरा तात्पर्य यह था कि मैं इसे चिंता के रूप में नहीं बल्कि चुनौती के रूप में ले रहा हूं और अपने उपर लगे दाग को मिटाने के लिये पूरे गंभीरता से लगा हुआ है।

रामस्वरूप. गंभीर होकर क्या प्रयास कर रहे हो भांजा जरा मैं भी तो सुनूं।

तिवारीजी. मामाजी मेरे जैसे जितने भी प्रधानपाठकों के उपर इस तरह की कार्यवाही हुई है सबने मिलकर इसे न्यायालय में चुनौती दिये हैं और उसी सिलसिले में अभी वकील साहब से बात करके मैं और शुक्लाजी घर वापस हो रहे हैं।

रामस्वरूप. तो वकील साहब ने क्या बोला। कुछ आश्वासन दिया कि नहीं कि आप लोग केस जीतेंगे?

तिवारीजी आप मामाजी सारी बातें जानते हुये ऐसी बातें कर रहे हैं भला न्यायालय में प्रकरण आश्वासन से जीता जाता है क्या ? वहां तो हर चीज का प्रमाण चाहिये और वकील साहब ने हमसे कुछ दस्तावेज तैयार करने को कहा है जिससे हमारा पक्ष मजबूत बनें।

रामस्वरूप. भांजा वकील साहब ने क्या क्या प्रकाण देने को कहा है ?

तिवारीजी. वही सब कुछ मामा जो हमारे स्कूलों में बच्चों की शैक्षिक प्रगति के संबंध में जानकारी हेतु रखा जाता है।

रामस्वरूप. तो सब कुछ तो है न भांजा कि इसमें भी अभी कोईकमी है?

तिवारीजी. हां मामाजी। वकील साहब ने जो कुछ भी कहा है उसमें से 90प्रतिशत जानकारी तो हैं शेष 10प्रतिशत की जो कमी है उसे प्रथम सुनवाई तक पूरा कर लूंगा।

रामस्वरूप. हां भांजा ध्यान देकर जरूर समय पर पूरा कर ही लेना। इसके अतिरिक्त मेरा सलाह यह भी है कि साम दाम दण्ड भेद सभी उपयों पर भी गौर करो।

तिवारीजी. मामाजी मैं आपका मतलब नहीं समझा। कैसा साम दाम दण्ड और भेद।

रामस्वरूप. यही बतलाने के लिये तो आपको फोन लगाया था भांजा। मेरा परिचय बहुत से अधिकारियों और नेताओं से हैं कहो तो बात करके देखता हूं। आप सैद्धांतिक व्यक्ति है इस कारण पहले पूछ लेना उचित समझा। नहीं तो इससे भी बडे बडे फैसले को दो मिनट में रफा दफा करवा चुका हूं।

तिवारीजी. नहीं मामाजी। आप जैसा कह रहे हैं वैसा हरगिज नहीं करूंगा क्योंकि आपके बतलाये उपाय से केवल मेरी समस्या का और वह भी तुरंत के लिये हल मिलेगी सभी की समस्या का सदैव के लिये हल नहीं और मैं चाहता हूं कि इस प्रकरण से न्यायालय के द्वारा ऐसा दृष्टांत स्थापित हो जो हम सभी शिक्षक समुदाय और अधिकारियों के लिये अनुकरणीय हो।

रामस्वरूप. मैं जानता था भांजा आपका जवाब ऐसा ही होगा। पर सोंच लो अदालत में प्रकरण के जाने से कितना समय लग जायेगा इसको कोई नहीं बतला सकता। कभी कभी तो सालों लग जाता है। भांजा आप तो जानते ही है कि वहां तारीख पर तारीख के सिवाय कुछ नहीं मिलता। मेरी बात को एक बार

गंभीरता से सोच कर देखो। अगर जान पहचान से समस्या का हल निकलता है तो उसमें बुराई ही क्या है?

तिवारीजी. नहीं मामाजी। मैं सब कुछ सोच समझकर ही बोला हूं। संघ के सभी प्रधानपाठकों ने मुझ पर भरोसा करके यह दायित्व मुझे सौंपा है। अब अगर मैं अपने अकेले की समस्या का हल आपके बतलाये रास्ते पर चलकर प्राप्त कर लेता हूं तब सभी प्रधानपाठकों का भरोसा नहीं टूट जायेगा और मामाजी भरोसा वह अनमोल धन है जिस पर मैं ऐसे ऐसे कई वेतनवृद्धि रोकवाने को तैयार हूं।

रामस्वरूप. ठीक है भांजा। आपकी जैसी मर्जी। कहीं कुछ उंच.नीच हो गया तो बाद में दोष मत देना कि मामाजी बडा जान पहचान वाला बना फिरता था और मेरे लिये कुछ नहीं किया।

तिवारीजी. हां मामजी। इस प्रकरण के संबंध में तो कम से कम आपके उपर कभी दोषारोपण नहीं करूंगा। यह प्रकरण हम शिक्षकों के लिये केवल वेतन वृद्धि रूकने का ही प्रश्न नहीं है बल्कि उससे बहुत आगे हमारे मान और सम्मान की है और आप तो जानते हैं कि लोगों ने अपने मान और सम्मान को बनाये रखने के लिये किन किन चीजों का त्याग नहीं किये हैं।

रामस्वरूप. ठीक है भांजा। अपना ख्याल रखना और जब कभी भी मेरी सहायता की आवश्यकता होगी निःसंकोच कहना। अब फोन रख रहा हूं।

तिवारीजी. जी मामाजी। जरूर बतलाउंगा। अच्छा प्रणाम मामजी।

रामस्वरूप. प्रणाम भांजा प्रणाम।

बात होने के बाद फोन को जेब में रखते हुये तिवारीजी ने कहा. शुक्लाजी यह मामाजी भी न अजीब आदमी है। सब को एक ही तराजू पर रखकर तौलना चाहता है। मुझे मालूम था कि मामाजी मुझसे यही बोलेंगे कि भांजा ईधर उधर करके मामला रफा.दफा कर लेते हैं। कहां अदालत की चक्कर लगाते फिरोगे।

शुक्लाजी. तिवारीजी इसमें अजीब बात क्या है भाई? यह मामाजी का आपके प्रति स्नेह और अपनापन प्रगट करने का तरीका है। उन्होंने अपने मन की बात बतलाई और आपने अपने मन की। पर किस रास्ते पर और कैसे चलना है यह तो आप ही निश्चित करेंगे।

तिवारीजी. हां शुक्लाजी और हमारा रास्ता है. सत्यमार्ग।

अब तक तिवारीजी मोटरसायकल स्टार्ट कर चुका था। पीछे शुक्लाजी के बैठते ही गाडी गांव की ओर बढने लगी।

0000000000000000000000000000000000000000

(14)

पंडित रामफल दुबे के यहां भगवान सत्यनारायण की कथा का आयोजन रखा गया था। गांव के रिवाज के अनुसार सभी घरों से महिलायें भगवान की कथा सुनने पहुंच गये थे। पंडित कृष्णकुमार शर्मा कथा का वाचन कर रहे थे। कथा स्थल से कुछ ही दूरी पर बैठी हुई जुगल किशोर की पत्नी रूपा मनोहर की पत्नी श्यामा से बोली. निमंत्रण देने जब हमारे घर आये तब तो मुझे विश्वास ही नहीं हुआ कि पंडितजी भी कथा सुनने के ईच्छुक हैं।

श्यामा बोली. हां बहन मुझे भी विश्वास नहीं हुआ। अरे जो सबके यहां घूम घूम कर कथा कहे उनके घर कथा का होना आश्चर्य की बात तो है ही।

रूपा जरूर कोई बडी बात होगी। तभी पंडितजी कथा सुन रहे हैं नहीं तो ऐसे लोग कथा सुनाने वाले जीवों में शामिल नहीं है।

श्यामा और नहीं तो क्या बहन। और इसे तो मैं सुनना भी नहीं मानती। अरे एक तो पहली बार कथा सुन रहे हैं और उस पर भी देख नहीं रही हो पंडितजी किसे बनायें हैं?

रूपा. हां बहन मैं भी जब से आई हूं यही सोंच रही हूं कि कथा सुनाने वाले पंडितजी को तो इस गांव में पहले कभी नहीं देखी हूं। फिर सोंची की भाई पंडितजी है तो कहीं दूर मथुरा वृन्दावन से पंडित बुलाये होंगे।

श्यामा. तुम भी बहन कहां की बात करती हो। अरे कथा सुनाने वाले पंडितजी इन्हीं के दामाद तो हैं। देखा पंडितजी की चतुराई। दान की वस्तु घर में ही रहे इसके लिये जतन लगाये हैं और गांव भर ढिंढोरा पिटेंगे की कथा सुनने में दस हजार खर्च हो गया बीस हजार खर्च हो गया।

रूपा. छोडो न बहन। ये सब इनके घर की बात है। हमें क्या लेना देना। निमंत्रण मिला सो कथा सुनने आ गये। नहीं आते तो पंडिताईन सबसे कहते फिरती ये देखो मेरे यहां कथा सुनने सब कोई आये पर रूपा नहीं आई।

श्यामा. हां बहन तुम सही कह रही हो। यही सोंचकर तो मैं भी चली आई। नहीं तो कितना सारा काम पडा हुआ है करने को। मैं तो पिन्टू के पापा से बोल भी रही थी कि आप चले जाओ मैं घर का काम निपटा लेती हूं पर मानें ही नहीं। बोले की नहीं नहीं श्यामा तुम ही चले जाओ ।तुम्हारे जाने से पता तो चलेगा कि आखिर सबको कथा सुनने वाले पंडितजी आज खुद क्यों कथा सुन रहे हैं।

रूपा. हां बहन मैं भी जब घर से बाहर आने के लिये निकली तो दो चार लोगों से पूछी पर किसी ने कुछ बतलाया नहीं। ओ तो भला हो उस जमुना का जो इनके यहां पानी भरती है उसने बतलाई कि पंडितजी के बेटे को सरकार ने नौकरी से बैठा दिया था। अब दो साल बाद उसे फिर से नौकरी में लिये हैं। बस इसी कारण पंडितजी कथा सुन रहे हैं।

श्यामा. हॉ बहन मैं तो समझ गई थी कि पंडितजी कोई छोटी.मोटी बात पर कथा सुनने वाले नहीं है। जरूर कोई न कोई बडी बात होगी।

तभी श्यामा की नजर उनसे कुछ दूर पर बैठी जमुना पर पडी। पहले तो उसने ईशारे से जमुना को अपने पास बुलाने की बहुत प्रयास की पर जब जमुना उनके पास नहीं आई तब रूपा के हांथ को छूकर ईशारे में जमुना के नजदीक जाने को कही। दोनो बैठे बैठे ही धीरे धीरे खिसकते हुये जमुना के पास पहुंच गई और धीरे से जमुना के कान में श्यामा बोली. क्यों री जमुना तुम कब से इतना घमण्डी हो गई? कब से तुमको ईशारे पर ईशारे करके बुला रही थी और तुम हो की सब कुछ देख समझकर भी टस से मस नहीं हुई। लगता है तुम्हे हम लोगों की कभी जरूरत नहीं पडेगी।

जमुना भी धीरे से बोली. कथा सुनने आई हो न तो चुपचाप शांति से कथा सुनो। बाकी बातचीत कथा पूरा होने के बाद कर लेंगे। तुम और रूपा जब वहां बैठे बैठे बातें कर रही थी तो पंडितजी का पूरा ध्यान तुम्हीं लोगों पर था। मैं तो देख रही थी पंडितजी ने कितनों बार तुम लोगों को ईशारों में चुप रहने को कहा। पर पता नहीं तुम लोग किस बात की चर्चा में मगन थे कि पंडितजी की ओर एक बार भी नहीं देखे।

जमुना को बीच में रोकते हुये रूपा बोली. चुपकर जमुना। बडा पंडितजी की भक्त बन रही है। जिनसे रोज रोज का मिलना जुलना है बातचीत है उसका तुम्हें कोई परवाह नहीं और ओ पंडितजी पता नहीं इसके बाद फिर कब इस गांव में दिखे या न दिखे उसकी बडी परवाह है।

जमुना. नहीं रूपा ऐसी बात नहीं है। तुम दोनों इस तरह बात कर रही थी कि पंडितजी तो क्या और जितने भी लोग यहां बैठे हुये है सबका ध्यान तुम लोगों की ओर ही था। ओ अपना तिवारीजी शुक्लाजी की पत्नियों का ध्यान भी तुम दोनो पर ही थी।

श्यामा. अरे छोड न जमुना। तुम भी दुनिया भर की चिन्ता को लेकर बैठ गई है। कुछ इसकी भी तो चिन्ता करले कि हम दोनों वहां से खिसकते खिसकते तुम्हारे पास क्यों आये हैं?

जमुना. अरे वह तो मैं रूपा को बतला दी थी।

रूपा. हां जमुना बतलाई थी पर पूरी बात नहीं। सरकार ने पंडितजी के बेटे को बैठा दिया फिर वापस ले लियाए तुम्हारे इतना बतलाने से हमें थोडी कुछ समझ आयेगी। हम कोई बीए एमए पढी लिखी है क्या?

जमुना. अरे तो मैं कौन सी पढी लिखी हूं। जस हाल उद्धव तस हाल माधव वाली ही तो बात है।

श्यामा. नहीं जमुना। फिर भी तुम इसी घर में दिन रात काम करते हो। कुछ न कुछ तो सुनी होगी न। जमुना सिर नीचे करके धीमी आवाज में बोली. हां मैं एक दिन पंडितजी के मुंह से सुनी थी। पंडितजी किसी को फोन पर बतला रहे थे कि उसका बेटा राजेश जो जंगल विभाग में काम करता है उसे लापरवाही दिखाने के कारण नौकरी से बैठा दिया गया है।

श्यामा. तो पंडितजी के बेटे ने क्या लापरवाही दिखा दिया। कही दो चार टूक लकडी तो नहीं बेच दिया या बिना पौधारोपण किये दो चार लाख पौधारोपणं करना दिखा दिया होगा। यह जंगल वाले ऐसा ही तो करते हैं। पिन्टू के पापा अखबार पढकर आये दिन मुझसे बतलाते रहता है।

जमुना. अरे नहीं श्यामा तुम लोग भी न कुछ का कुछ अनुमान लगाते रहते हो। पंडितजी फोन में ही बतला रहा था कि वहीं जंगल के बीच में रहने वाले कुछ लोगो ने चार पांच खरगोश को शिकार करके मार डाला और जब शिकारी खरगोश को लेकर अपने धर की ओर आ रहे थे तब बडा साहब जो रात में गश्त पर निकले थे उन शिकारियों को पकड लिया। और फिर क्या इन सबके लिये पंडितजी के बेटे को जिम्मेदार मानते हुये बडे साहब ने नौकरी से बैठा दिया। अब दो साल बाद जांच में पता चला कि उस रात तो पंडितजी के बेटे की डयूटी ही नहीं थी। बेचारे को जबरन दो साल सजा भुगतना पडा। बस इसी कारण पंडितजी यह कथा सुन रहे हैं।

रूपा श्यामा और जमुना की बातों से कथा वाचक पंडितजी व्यवधान महसूस कर रहा था। अपनी ओर से उन्होंने कई बार ईशारों में चुप रहने को भी कहा था पर परिणाम मिलता न देखकर उन्होंने अब स्पष्ट शब्दों में कहना ही उचित समझा। पंडितजी ने कहा. भगवान सत्यनारयण की कथा सुनने आये सभी भाईयो और माताओं से मेरा आग्रह है कि हम जिस पुनित उददेश्य से

यहा आये है हमारा ध्यान केवल उसी पर ही केन्द्रित हो। बाकी बातें करने के लिये तो सारी जिन्दगी पडी है।

पंडितजी की बातें सुनकर वहां उपस्थित सभी लोगों की नजर रूपा श्यामा और जमुना पर जाकर टिक गई। जितना असर पंडितजी के बातों का उन पर नहीं हुआ था उससे ज्यादा असर नजरों का हुआ। तीनों कुछ पल के लिये एकदम शांत बैठे रहे। पंडितजी पुनः कथा सुनाना आरंभ किया। जैसे ही पंडितजी कथा सुनाने में मगन हुये वैसे ही मौका पाकर जमुना बोली. देखो जिसका डर था वहीं हुआ न। तुम लोगों का क्या है कथा सुनकर अपने अपने घर चली जाओगी। पर मुझे तो इस घर में रोज रोज आना जाना है। अब पंडितजी मुझे सुनायेंगे।

रूपा. तुम्हें क्यों सुनायेंगे जमुना। करनी करे पंडितजी का बेटा और सुनो तुम। यह क्या बात हुई भाई मानव हैं तो मन में उत्सुकता तो रहेगी कि नहीं रहेगी। फिर हम दोनों ने तुमसे केवल इतना ही तो जानना चाहा न कि पंडितजी कथा क्यों सुन रहे हैं?् अब भगवान के सामने सब कुछ जानते हुये भी तुम नहीं बतलाती तो पाप तुम्हे ही लगता।

श्यामा. और नहीं तो कया रूपा। फिर बात करने का यह मतलब थोडे ही है कि हम लोगों ने कथा नहीं सुनी है। अरे एक कान इन बातों में था तो दूसरी कान भगवान की कथा पर भी थी।

जमुना. नहीं बहन। फिर भी हमें अपनी इन आदतों को छोडनी चाहिये। अगर यह आदत नहीं छूटी तो वह दिन दूर नही जब हमें किसी के घर से भी निमंत्रण मिले।

रूपा. अरे न दें तो निमंत्रण। निमंत्रण पाने के लिये हम कोई मरे थोडी जा रहे हैं।

श्यामा. हां रूपा जिसका लाख बार गरज है वह निमंत्रण दें ओर जिसका न हो वह मत दे। आजकल तो न्याय का जमाना ही नहीं है। सच्ची बात पूछ दो या कर दो वह भी लोगों को हजम नहीं हो पाता। पता नहीं यह दुनिया किधर जायेगी।

तीनों ने पुनः बातें करते देख पंडितजी के मन में एक बार तो आया कि इन्हें फिर से टोकना चाहिये। फिर मन में यह सोचकर कि भले ही गलती उन्हीं की हो पर घर बुलाकर उन्हें बार बार टोकना या कहना अच्छा नहीं होता। यह भी एक प्रकार से अपमान करने जैसा ही होता है पंडितजी ने कथा कहना जारी रखा।

कथा समाप्त होने के बाद पंडितजी स्वयं अपने हाथों से सभी को प्रसाद और आशीर्वाद देते जारहे थे। लोग प्रसाद और आशीर्वाद लेकर अपने घरों की ओर जाने लगे। जानकी और गीता भी प्रसाद लेकर बाहर निकल ही रही थी कि पीछे से जल्दी आकर रूपा और श्यामा दोनों ही रास्ता लगभग रोकते हुये बोली. क्यों गीता बहन आपके यहां भगवान सत्यनारायण की कथा कब हो रही है और हम दोनों को निमंत्रण दोगी की नहीं?

रूपा और श्यामा दोनों के द्वारा एक साथ् ा पूछे गये प्रश्न जानकी और गीता दोनों के ही हृदय में किसी शूल के समान जाकर लगे। उन दोनों ने किसी प्रकार का उत्तर देना उचित नहीं समझा और अपने घर की ओर आगे बढ गये। रास्ते में दोनों के मन में एक ही विचार घूम रहा था कि मानव हृदय से वह संवेदना दया करूणा और सहयोग के भाव कहां गायब हो गये? क्यों आजकल दया और करूणा के स्थान पर ईर्ष्या और द्वेष उपकार के स्थान पर उपहास सहयोग के स्थान पर प्रतिस्पर्धा और प्रेम के स्थान पर अहंकार की भावना बढती जा रही है तो इसके लिये जिम्मेदार कौन है? क्या इसके लिये जिम्मेदार हम हैं या फिर रूपा और श्यामा जेसे लोग? प्रश्न अनुत्तरित ही रहा। सोचते

सोचते जानकी और गीता को पता ही नहीं चला कि वे कब अपने अपने घर के निकट आ गये।

0000000000000000000000000000000000000000000000

(15)

शुक्लाजी और तिवारी जी को वकील से मिलकर आये लगभग सप्ताह भर का समय हो गया था। जब दोनों वकील साहब से मिलकर अपने गांव के लिये निकल रहे थे तब वकील साहब ने तिवारीजी से कहा था कोशिश करूंगा की सुनवाई अगले सप्ताह तक आरंभ हो जाये। आज रविवार होने के कारण शुक्लाजी के मन में आया कि तिवारी जी के यहां जाकर पता तो करूं कि वहां से कुछ खबर आया की नहीं। यही सोंचकर वह तिवारीजी के घर जाने के लिये निकले। रास्तें में पान ठेला चैक के पास दस.पन्द्रह लोग बैठे बातें कर रहे थे। उन लोगों में मनोहर और जुगल किशोर भी था। जैसे ही शुक्लाजी वहां पहुंचे उन्हें देखकर मनोहर ने कहा. जानते हो जुगल आजकल सरकार स्कूली पाठयक्रम में कानून को भी विषय के रूप में सम्मिलित करने पर विचार कर रही है और अगर मेरी बात पर विश्वास न हो तो शुक्लाजी से पूछ लो।

जुगलकिशोर जानता था कि ऐसा कुछ नहीं होने जा रहा है। यह तो केवल शुक्लाजी को परेशान करने का एक तरीका है और ऐसे कार्यों में चूंकि उसे खुद मजा आता था इस कारण मनोहर की बात में अपनी बात जोडते हुये कहा. मनोहर तुम्हारी जानकारी आधी अधूरी है। मुझे तो इतना तक पता चला है कि स्कूलों के सभी प्रधानपाठकों को वकील के कार्य का लायसेंस भी मिलेगा और लायसेंस देने का यह कार्य हमारे गांव के ही प्रतिष्ठित शिक्षक शुक्लाजी और तिवारीजी से आरंभ होगी।

मनोहर ने कहा. हॉ जुगल इसी को कहते हैं आम के आम गुठली के भी दाम। एक व्यक्ति की दोहरी कमाई शिक्षक के रूप में भी और वकील के रूप में भी।

शुक्लाजी वहीं खडा होकर उन दोनों की बातों को सुनता रहा। एक बार तो उन्होंने सोंचा कि ऐसे फालतू लोगो की मुंह लगने से केवल अपना ही नुकसान है एक तो समय की बर्बादी होगी सो होगी दूसरी ऐसे लोगों का क्या भरोसा कि कब क्या बोल दें। इसलिये यहां से बिना जवाब दिये चला जाना ही बेहतर होगा। पर तुरंत उनके मन में यह भी आया कि ऐसे लोगों को अगर समय पर उचित जवाब न मिले तब ये और बढते ही जायेंगे। फिर आज रविवार का दिन है। कौन सा कही जाने की जल्दबाजी है। अतः उन दोनों को सबक सिखाने के उददश्य से शुक्लाजी वहीं बैठ गये। शुक्लाजी को अपने पास बैठते देखकर उन दोनों को घोर आश्चर्य हुआ और मन में यह विचार भी आया कि जो व्यक्ति उन दोनों के छाया से भी दूर रहना चाहता है वह आज उनके पास कैसे बैठ रहा है। पर कहते हैं न पुरानी आदत जाती नहीं। सो अपने आदत से लाचार व्यंग्यात्मक लहजे में ही जुगल ने कहा. और सुनाओ शुक्लाजी सुना है आजकल बडे बडे लोग आप और तिवारीजी से कानूनी विषयों पर सलाह मश्विरा करने आते हैं। अरे हमें भी सिखा दो भाई। कुछ भला हो जायेगा।

जुगल की बात सुनकर वहां बैठे सभी लोग जोर.जोर से हंसने लगे और हंसते हुये ही मनोहर ने कहा. अरे जुगल तुम भी कहां की बात कर रहे हो जानते नहीं अब शुक्लाजी व्ही आई पी व्यक्ति बन गये हैं। अरे भाई जो व्यक्ति पहले शिक्षक भर होने के बावजूद हर लोगों के पास बैठता नहीं था बात नहीं करता था अब तो उसे वकील के रूप में एक और तमगा मिलने जा रहा है। तो हो गये न व्ही आई पी व्यक्ति। अब तो शुक्लाजी हम लोगों की ओर देखेगा भी नहीं। और मान लो कभी धोखे से नजर टकरा भी गई तो तुरंत गंगाघाट जाने की तैयारी करेगा पवित्र होने के लिये।

जुगल ने कहा. भाई मनोहर तुम्हारी बात सुनकर तो लग रहा है कि अब शिक्षकों की निकल पडी है। अब तो हमें किसी भी शिक्षक से बात करने से

पहले सौ बार सोचना पडेगा। पता नहीं किस बात पर कौन सी धारा लगाकर मुकदमा ठोंक दे।

मनोहर. हॉ जुगल यह तो होना ही है। भाई शक्ति आदमी को निरंकुश बना देती है और निरंकुश व्यक्ति कुछ भी कर सकता है विशेषकर हम जैसे निरिह लोगों के लिये तो अब दुख का समय आने वाला है।

मनोहर और जुगल की इस प्रकार की काल्पनिक बातों को सुनना शुक्लाजी के लिये असहय हो रहा था। मन में बार बार विचार आ रहा था कि अब बस। इससे ज्यादा नहीं सुन सकता। पर मन में यह सोचकर की नहीं आज इन्हें अपने मन की पूरी बात निकालने ही देता हूं चुप रहे। मन में यह भी सोचा कि उनके मन की बात पूरी तरह से बाहर आने से पहले अगर वह अपनी बात रखेगा तब हो सकता है यह परिस्थित बार.बार बने। इस कारण शुक्लाजी ने सोंचा कि नहीं आज इनकी बातों को इनके थकते तक सुनुंगा ही। देखता हूं ये लोग कहां तक और कितनी देर तक बोल सकते हैं।

शुक्लाजी को अपने विचारों में खोये देखकर जुगल ने कहा. क्यों शुक्लाजी अभी मैं और मनोहर आपसे जो जो बात किये हैं उस पर कौन सा धारा लगाकर मुकदमा चला सकते हैं इसी संबंध में सोच रहे है न?

मनोहर. अरे जुगल इसमें सोचना क्या?् तुम यह बात भूल रहे हो कि शुक्लाजी शिक्षक है और शिक्षकों को हर बात जुबानी याद रहती है। हमारी किस बात पर कौन सी धारा लगेगी यह तो इनके मन में पहले से निश्चित होगा। वे तो अभी यह सोंच रहे हैं कि हम पर मुकदमें की कार्यवाही कब से शुरू करेंगे?

जुगल नहीं मनोहर भाई मुझे नही लगता कि शुक्लाजी को हम पर मुकदमा की कार्यवाही करने की कोई जल्दबाजी होगी। आखिर हम उनके गांव वाले हैं भाई और गांव वाले होने के नाते कुछ तो छूट मिलेगी न। क्यों शुक्लाजी मैं सही कह रहा हूं कि इसमें भी कुछ धारा लग सकती है?

मनोहर. अरे कहां जुगल तुम भी किस जमाने की बात कर रहे हो। भला कानून में भी कोई अपना पराया होता है क्या? देखते नहीं अदालत में जो कानून की देवी की मूर्ति होती है उसके आंखो पर पटटी लगी होती है और वह पटटी लगी होती है इस कारण से की कानून की नजर में कोई अपना और कोई पराया न दिखे। फिर तुम किस आधार पर शुक्लाजी से यह अपेक्षा कर रहे हो कि वह हमें अपना गांव वाला समझकर हम पर कोई रहम के बारे में सोंचेगा।

जुगल. काश ऐसा ही पटटी सभी शिक्षकों के आंखो पर भी लगा होता मनोहर भाई तो कितना अच्छा होता।

मनोहर. अरे जुगल थोडा सोच समझकर तो बोल लिया करो। भाई शिक्षकों की आंख में पटटी लगा दिया जाता तब वे पढाते कैसे?

जुगल. यार मनोहर आंखो में पटटी लगाने का् अभिप्राय है निष्पक्ष होना या रहना। तुम तो देखते ही हो कि जितने भी शिक्षक हैं सब अपने बच्चों को प्राईवेट स्कूलों में पढाते है और सरकारी स्कूलों में पढने वाले बच्चों की तरफ ध्यान ही नहीं देते। तभी तो जांच में यह स्थिति सामने आ रही है न कि सरकारी स्कूल के बच्चों में लर्निंग आउटकम्स का अता पता ही नहीं है और जब कुछ कार्यवाही विभाग से कर दिया जाता है तब बडा अपने को पीडित समझकर अदालत तक चले जाते हैं। अरे मैं तो यह कहता हूं कि अदालत की शरण में जा रहे हो वैसी कभी अपने स्कूल में पढने वाले बच्चों को भी पीडित मानकर उन सबमें निर्धारित लर्निंग आउटकम्स लाने के लियि समूह बनाकर काम करते।

मनोहर. हां जुगल तुमने यह बात तो सोलह आने सच कही है। मेरा तो कभी ध्यान ही इस ओर नहीं गया। कभी कभी तो मैं सोंचता था कि प्रशासन की ओर से कहीं सचमुच शिक्षकों के साथ अन्याय तो नहीं कर दिया गया है। पर अभी तुम्हारी बातों से लग रहा है कि बिल्कुल अन्याय नहीं हुआ है और मैं

तो यहां तक कहता हूं कि अगर मेरी सिफारिश माने तो ऐसे सभी शिक्षक जिनके स्कूल के बच्चों में निर्धारित आउटकम्स परिलक्षित नहीं हो रहा हो बर्खास्त कर दिया जाना चाहिये।

मनोहर के चुप होने पर शुक्लाजी को लगा कि अब ज्यादा देर तक चुप रहना उचित नहीं होगा क्योंकि चुप्पी या सहनशीलता की अतिरेक को सामान्य आदमी कायरता की निशानी मान लेते हैं और वह कम से कम मनोहर और जुगल जैसे लोगों के नजर में कायर सिद्ध होना नहीं चाहता। अतः उन्होंने जुगल और मनोहर दोनों से एक साथ कहा. जुगल और मनोहर तुम लोग कह लिये अपने मन की बात या अभी और कुछ शेष है और अगर शेष् हो तो कह ही डालो। मैं तुम लोगो को पांच मिनट का समय और देता हूं। फिर इसके बाद मत कहना कि हमें कहने का कुछ अवसर नहीं मिला।

शुक्लाजी के बोलने पर जुगल तो कुछ और बोलना चाहता था पर उसे ईशारों में चुप कराते हुये मनोहर ने कहा हां हां शुक्लाजी बोलिये क्या बोलना चाह रहे हैं?

शुक्लाजी. मैं देख रहा हूं कि जब से शिक्षकों के उपर कार्यवाही होना शुरू हुआ है तब से न केवल तुम दोनों बल्कि गांव के कुछ और लोग भी समाज के हितों के बारे में ज्यादा ही सोचना शुरू कर दिये हैं। अरे मैं तुम लोगों से जानना चाहता हूं कि जब तुम लोग स्वयं पढ रहे थे उस समय तुम लोगों की यह सोच कहां चली गई थी। ठीक है यह मान भी लूं कि उस समय परिपक्वता नहीं आई थी पर आज तक परिपक्वता नहीं आई हो ऐसा भी नहीं हो सकता। यहां बैठे सभी लोग जो शिक्षकों की स्थिति पर अपने ढंग से विचार करते हुये हंस रहे हों उनमें से ऐसे कितने लोग हैं जो अपने बच्चों से कभी उनके पढाई लिखाई के बारे में पूछते होंगे। एक भी नहीं तो क्या सचमुच सबके लिये केवल शिक्षक ही जिम्मेदार है माता पिता घर परिवार पास पडोस की कोई जिम्मेदारी

नहीं है। जब तक समय रहता है तब तक तो अपने बच्चों के उपर कोई ध्यान देते नहीं और जब मामला हाथ से निकलता दिखाई देता है तो अपने को पाक साफ दिखाने के लिये सारे दोष शिक्षक पर डाल देते हैं। क्यो मनोहर और जुगल तुम दोनों को दूसरों के घाव में नमक डालने की बहुत आदत है। तुम दोनों ने कभी अपने अपने लडकों से पूछा कि वे स्कूल में क्या क्या करते थे। नहीं न। इसी का परिणाम है कि तुम दोनों के लडके आठवीं से ज्यादा पढ नहीं पाये। जितना ध्यान तुम दोनो गांव के गली गली घूमकर अनावश्यक बातों के प्रचार प्रसार में लगाते आये हो उसका दसवां हिस्सा भी अपने बच्चों की पढाई लिखाई पर दिये होते न तब तो जानते कि एक शिक्षक को अपने स्कूल में जहां कई प्रकार के बच्चे पढने आते हैं पढाने में कितने कठिनाईयों का सामना करना होता है और क्यों सभी बच्चो में लर्निग आउटकम्स नहीं आ पाता हैा हां मैं तुम दोनों की इस बात को स्वीकार करता हूं कि बहुत से शिक्षक अपने बच्चों को सरकारी स्कूल में नहीं पढाते। पर कुछ के लिये सबको उसी प्रकार समझ लेना यह भी तो ठीक नहीं है। तुम लोग खुद अपनी आंखों से मेरे और तिवारीजी के बच्चों को कक्षा पहली से ही सरकारी स्कूलों में पढते देखे हो और तुम लोग यह भी देखते आये हो कि हम दोनों ही जब तक उचित कारण न हो स्कूल जाना बंद नहीं किये हैं। इसके बाद भी बार बार कुछ शिक्षकों के कारण पूरे शिक्षक समुदाय का उपहास करना कहां तक उचित है।

शुक्लाजी के मुंह से सच्चाई सुनकर जुगल और मनोहर दोनों के मुंह से और एक शब्द भी नहीं निकला। जिस समय शुक्लाजी ने अपने पक्ष में अपनी बातों को रखना शुरू किया उसी समय से ही वहां बैठे कुछ लोग जो वास्तविकता को जानते और समझते थे किन्तु केवल समय बिताने के उददैश्य से बैठे हुये थेएक एक कर वहां से जाना शुरू कर दिये थे और मन ही मन यह संकल्प भी कर रहे थे कि आज के बाद जुगल और मनोहर जैसे लोगों की बातों को समय बिताने के उददेश्य से भी कभी नहीं सुनेंगे।

शुक्लाजी भी जुगल और मनोहर के चेहरे की भाव को देखकर समझ गया था कि आज उन दोनों को उनके तरफ से वह सब कुछ मिल गया था जिसकी कभी उन्होंने कल्पना भी नहीं की होगी। और इससे ज्यादा बोलना उचित भी नहीं था क्योंकि शुक्लाजी जेसे प्रबुद्ध व्यक्ति को यह मालूम था कि न कमी अच्छी है और न अधिक अच्छी। शुक्लाजी के चुप होते ही जुगल और मनोहर अपने अपने घरों की ओर जोर लगते हैं। शुक्लाजी भी तिवारी जी के घर की ओर अपना कदम बढाते हुये यह महसूस करता है कि सब कुछ वही है वह खुद भी यह रास्ता भी पान ठेले का चैक भी उसके स्वयं का पैर भी लेकिन जो नयापन आज उसके चित्त में थी नजरों में थी पैरों की रफतार में थी वह पहले कभी नहीं थी। शुक्लाजी समझ गया था कि यह सब कुछ मन और चित्त के हल्का होने से उत्पन्न शक्ति के कारण है। सोंचते सोंचते पता ही नहीं चला कि वह कब तिवारीजी के घर पहुंच गया।

0000000000000000000000000000000000000000000000

(16)

शुक्लाजी जब तिवारीजी के यहां पहुंचे तब तिवारीजी घर के बरामदे में कुछ लोगों के साथ बैठकर बात कर रहे थे। शुक्लाजी भी वहां जाकर खाली रखे एक कुर्सी पर बैठ गये और उनकी बातें सुनने लगे। बातें सुनकर शुक्लाजी ने यह सहज ही अंदाज लगा लिया कि आये हुये लोग तिवारीजी के स्कूल के शाला प्रबंध समिति के अध्यक्ष व सदस्यगण है। तिवारीजी ने बात आगे बढाते हुये एम एस सी के अध्यक्ष श्री सुदर्शन कश्यप से कहा. कश्यपजी वकील के यहां से खबर आई है कि 05 मई को अदालत में पहली सुनवाई आरंभ होगी। उस दिन तो वकील साहब केवल इस मामले से जुडे आवश्यक दस्तावेज ही माननीय जज महोदय के समक्ष रखेगा। फिर पूरे कागजात के अध्ययन उपरांत ही जज साहब मामले को आगे बढाने की अनुमति देंगे और मामला धीरे धीरे आगे बढेगी।

कश्यपजी. ओ तो ठीक है तिवारीजी। मामला अदालत में बढेगी और आप इस मामले को जीतेंगे भी। पर मैं पूछता हूं कि आखिर यह परिस्थिति आई ही क्यों? मैं और पूरे सदस्यगण जब से आपके बारे में सुने हैं तभी से मैं सबसे कहता रहा हूं कि तिवारीजी जैसे योग्य शिक्षक के साथ यह जो कुछ हुआ वह बहुत बडा अन्याय हुआ है। आपने हमारे गांव के स्कूल के लिये क्या क्या नहीं किया है?

तिवारीजी. कश्यपजी अब इस बात पर बहस करने का समय जा चुका है कि मेरे साथ हुए अन्याय से छुटकारा कैसे पाया जा सकता है?

कश्यपजी. तिवारीजी उसी पर तो विचार करने के लिये मैं सभी सदस्यों को लेकर आया हूं। एक तरफ तो सरकार कहती है कि शाला प्रबंध समिति की सहमति के बिना स्कूल से संबंधित कोई भी कार्य नहीं हो सकता और दूसरी

तरफ बिना हमारी जानकारी आपके उपर कार्यवाही कर दी गई। यह कैसा विरोधाभास है तिवारी जी?

तिवारीजी दरअसल गलती हमी लोगों के तरु से हुआ है कश्यपजी। प्रशासन का स्पष्ट निर्देश है कि स्कूल व बच्चों से संबंधित आवश्यक रिकार्डों पर एम एस सी के सदस्यों का हस्ताक्षर सत्यापन के रूप में हो। पर हम लोगों का संबंध ही ऐसा प्रगाढ है कि हस्ताक्षर लेना मैंने उचित नहीं समझा। मैंने सोंचा कि बात बात पर और हर जगह पर आप लोगों का हस्ताक्षर लेना एक प्रकार से एक दूसरे पर अविश्वास को प्रदर्शित करता है। पर अब पता चला कि शासकीय कार्यों में विलंब और अविश्वास जैसी भावनाओं का कोई स्थान नहीं है। वहां तो नियम मायने नियम ही है। यह विश्वास और अविश्वास की बातें नीजि जीवन के लिये महत्वपूर्ण है शासकीय कार्यों के लिये नहीं।

कश्यपजी. तिवारीजी हम आपके साथ हर वक्त और हर जगह खडे रहेंगे। ठीक है आपने किसी कारण से हम लोगों का हस्ताक्षर नहीं कराया पर हम अदालत में जज साहब को बोलकर बतलायेंगे कि तिवारीजी अपने स्कूल में सभी कार्य शासन के दिशा निर्देश के अनुरूप ही करता है और प्रत्येक कार्य में समिति की सहमति भी होती है।

कश्यपजी की बातें शुक्लाजी को अच्छा लगा। उन्होंने सोचा कि ये लोग कितने सहयोगी विचारधारा के लोग हैं। नहीं तो्र आजकल ऐसे लोगों की संख्या कम नहीं है जिन्हें थोडा भी अधिकार मिल जाये और वह टांग खींचना आरंभ न कर दें। उनके शाला के भी अध्यक्ष व सदस्यगण सहयोगी है पर पूरे के पूरे नहीं। उनमें से कुछ सदस्य ऐसे भी हैं जो हर बात पर अडंगा लगाना ही अपना अधिकार और कर्तव्य समझते हैं। हालांकि ऐसे लोगो की संख्या कम होने के कारण अंततः उन्हें बहुमत के निर्णय के समझ झुकना पडता है। शुक्लाजी को विचार में खोये देखकर तिवारीजी ने पूछा. क्या सोच रहे हो शुक्लाजी?

शुक्लाजी. तिवारीजी मैं तो यह सोच रहा हूं कि पता नहीं यह मामला अदालत में कब तक चलेगी। अभी तो केवल केस की पहली सुनवाई की तारीख निश्चित हुआ है। ऐसा न हो कि अदालत से हमें अन्य मामलों की तरह केवल तारीख पर तारीख ही मिलता रहे और मामला दो चार साल खींच जाये। फिर आप तो जानते हैं कि जुलाई में हमें शाला समिति के कुछ सदस्यों को बदलकर नये सदस्य बनाने पडते हैं और उन सदस्यों का रूख हमारे प्रति क्या होगा इस पर भी आगे का केस बहुत कुछ निर्भर करेगा। और फिर जब तक केस का निपटारा नहीं जाता तब तक मानसिक तनाव में रहो ओ अलग। तिवारीजी क्या ऐसा नहीं हो सकता कि इस केस की पूरी सुनवाई एक दो माह में पूर्ण हो जाये?

तिवारीजी. हां शुक्लाजी अदालत में केस कब तक चल सकता है इस संबंध में तो मैं भी निश्चित रूप से नहीं कह सकता। पर हां समिति के सदस्यों के सहयोगात्मक रूख्ा पर जरूर कह सकता हूं क्योंकि यह हमारे स्वयं के व्यवहार पर निर्भर करता है। आप तो जानते हैं कि ताली एक हाथ से नहीं बजती। इसके लिये दोनों हाथों का पास पास आना जरूरी है। अगर हम अपने हर कामों में पारदर्शिता रखें समय पर बैठक बुलायें सदस्यों की सहमति और असहमति का सम्मान करें और सभी सदस्यों से निरंतर संपर्क बनाये रखें तो वे भी हमारे प्रति जरूर सहयोगात्मक रूख रखेंगे। ऐसा मेरा अब तक का अनुभव और विश्वास रहा है। शाला प्रबंध समिति के एक अन्य सदस्या पार्वती यादव जो सभी बातें आरंभ से ध्यान से सुन रही थी बोली. तिवारी सर जी मैं भी इस बारे में कुछ कहना चाहती हूं।

तिवारीजी ने सम्मानपूर्वक कहा. हां हां बहन जरूर कहो। किसी भी समस्या का हल बातें करने से ही निकलती है पर न जाने कुछ लोग क्यों दूसरों की बातों को न केवल अनसुना करते हैं बल्कि दबाने का भी प्रयास करते हैं।

पार्वती यादव. तिवारीसर जी मैं यह कहना चाहती हूं कि इस सत्र के आरंभ से ही जब कभी भी स्कूलो में चाहे किसी भी प्रकार के बच्चों से संबंधित आंकलन और मूल्यांकन का कार्य हो उसमें बच्चों का कैसा प्रदर्शन रहा है और इस प्रदर्शन पर क्या क्या कर सकते हैं? इन सब बातों की चर्चा उनके पालकों से भी बच्चों के सामने अवश्य करें। अगर पालक स्कूल में नहीं आते हैं तो उनके घर जायें। ऐसा करने से आने वाले दिनों में वे सभी पालक भी रक्षा कवच की तरह कार्य करेंगे।

तिवारी जी. हां पार्वती बहन बहुत सुंदर विचार है और मैं ऐसा जरूर करूंगा। अभी तक मानकर चलता था कि शाला प्रबंध समिति के सदस्यों के बीच यह बात रख दिया तो उतना ही पर्याप्त है। पर अब मुझे भी लग रहा है कि स्कूल की पढाई लिखाई की बातों का जितना ज्यादा समाज के बीच चर्चा होगा उतना ही वह शिक्षक समुदाय के लिये लाभकारी होगा।

शिक्षक समुदाय के लिये लाभकारी जैसा वाक्य सुनकर शुक्लाजी ने कहा. हां तिवारीजी इस बात का मैं अभी प्रत्यक्ष अनुभव करके आ रहा हूं। आप मनोहर और जुगल किशोर को तो जानते ही है। उनका शिक्षकों के प्रति कितना नकारात्मक विचार रहता है। पान ठेला चैक के पास कुछ लोगों को बैठाकर शिक्षक समुदाय के विरूद्ध बातें कर रहे थे ।अंत में मैंने जब उन्हें सारी बातें विस्तार से बतलाई तो सब के सब अपना सा मुंह लेकर वहां से चलते बने।

तिवारीजी. हॉ शुक्लाजी यह बात सही है। पर एक दो लोगों के करने से ही सब कुछ बदल जायेगा ऐसा भी सोचना गलत होगा। जब बात शिक्षक समुदाय के हितों की है तब पूरे शिक्षक समुदाय को मिलकर एक जैसा कार्य करना होगा तभी समाज में सकारात्मक संदेश जायेगा। हां हम लोग इसका नेतृत्व जरूर कर सकते हैं।

कश्यपजी जो काफी देर तक इन सभी लोगों की बातें सुन रहे थे अपना विचार रखते हुये कहा. तिवारीजी आपने मेरे मन की बात कह दी। मैं भी सोंच रहा था कि हमारे विकासखण्ड के सभी संस्था प्रमुखों को इस दिशा में जागरूक और सक्रिय करने का पहल आप करें और सभी स्कूलों के शाला प्रबंध समिति के सदस्यों को जागरूक और सक्रिय करने का कार्य मैं करता हूं।

शुक्लाजी. पर क्या यह कार्य संभव है? मुझे तो लगता है कि हम लोग बातों में जितना इसे सरल काम समझ रहे हैं उतना सरल हैं नहीं।

कश्यपजी. मैं आपकी बात को मानता हूं कि यह सरल काम नहीं है पर कठिन भी नहीं है। हां इतना जरूर है कि इस काम में हमें मेहनत जरूर ज्यादा करना पडेगा। फिर सरजी आप यह क्यों नहीं सोंचते कि कुछ नहीं से कुछ हो या अच्छा होता है। ठीक है हमें अपने अपने कामों में शत प्रतिशत सफलता नहीं मिलेगी तो मत मिले। वैसे भी मेरा सोचना तो यह है कि जो लोग किसी भी काम में तत्काल शत प्रतिशत सफलता की अपेक्षा रखते हैं वे लोग निराशा के भाव को स्वयं आमंत्रित करते हैं। अरे हमारा काम है कर्म करना और बिना कर्म किये ही किन्तु परंतु पर आकर अटक जाना यह तो सरासर बेमानी है। फिर सरजी आप जरा यह भी सोचिये न कि जो लोग आज हमें सहयोग नहीं देगे हमारे साथ नहीं आयेंगे वे कल किस मुंह से हम पर दोषारोपण करेंगे।

शुक्लाजी. हां कश्यपजी आपकी बातों ने मेरी आंखे खोल दी। मैं तो प्रारंभ से ही तिवारीजी का सहयोगी रहा हूं और इस कार्य में भी उन्हें तन मन धन से सहयोग दूंगा। रहा सवाल शाला प्रबंध समिति के सदस्यों के सहयोग का तो उन्हे भी इसके लिये प्रेरित करने का प्रयास करूंगा। जैसा मेरे यहां की स्थिति है उसके अनुसार कुछ ही सदस्य ऐसे हैं. जिन्हें सक्रिय करने के लिये मेहनत करना पडेगा।

तिवारीजी. कश्यपजी तो ठीक है। सभी संस्था प्रमुखों की एक आवश्यक बैठक यथाशीघ्र मैं आयोजित करता हूं जिसमें सारी बातों को विस्तार से रखा जायेगा। उसी तरह शाला प्रबंध समिति के बैठकों का आयोजन आप करेंगे।

कश्यपजी. तिवारीजी आप बिल्कुल भी चिंता न करें। मैं तो अब यह सोंच रहा हूं कि काश। यह सारी बातें हमारे मन में पहले आ जाती तो कितना अच्छा होता। पर चलो देर आये दुरूस्त आये।

कश्यपजी की बातें सुनकर उपस्थित सभी लोगों की चेहरे पर एक विजयी मुस्कान उभर आई। मुस्कुराते हुये ही शुक्लाजी ने कहा. तो अच्छा निकट भविष्य में फिर मिलने की आशा और विश्वास के साथ अपने अपने घरों की ओर प्रस्थान करते हैं।

सभी लोग एक दूसरे को अभिवादन करके अपने अपने घरों की ओर जाने लगें।

(17)

तिवारीजी के स्कूल के शाला प्रबंध समिति के अध्यक्ष श्री कश्यपजी के पहल पर विकासखण्ड के सभी माध्यमिक शालाओं में से एक दो को छोडकर सभी शाला प्रबंध समिति के अध्यक्ष व कुछ सदस्यगण बैठक में उपस्थित हुये। आये हुये सभी सदस्यों को संबोधित करते हुये कश्यपजी ने कहा. भाईयों और बहनों आपको यह तो ज्ञात ही होगा कि यह बैठक क्यों आयोजित किया गया है? इस कारण इस पर ज्यादा चर्चा न करते हुये मैं इस पर चर्चा करना चाहूंगा कि आगे हमें किस तरह की भूमिका निर्वहन करना होगा?

श्रीमती अनुसुईया रजक जो पास के ही स्कूल के अध्यक्ष है बोली. हां कश्यपजी। हम यह जानते हैं कि यह बैठक क्यों हो रही है। पर एक बात मैं आज तक नहीं समझ पाई कि लोग आग लगने के बाद ही कुंआ खोदने की तैयारी क्यों करते हैं?

एक अन्य स्कूल की अध्यक्षा श्रीमती गोदावरी तिवारी बोली. हां बहन इस बात को मैं भी नहीं समझ पाई हूं। मैं अपने स्कूल का हालचाल बतला रही हूं। मुझे याद नहीं है कि हमारे यहां के संस्था प्रमुख ने पिछला बैठक कब बुलाया था? एक दिन मैं खुद पूछने स्कूल गई तो प्रधानपाठक ने कहा कि अभी पिछले हप्ते ही तो बैठक रखे थे। आपके यहां सूचना देने चपरासी को भेजा था पर आप घर में नहीं थी। इस कारण आपकी अनुपस्थिति में बैठक आयोजित कर लिये। अब एक के कारण तो शासकीय काम रुक नहीं सकता।

दोनों अध्यक्षों की बात सुनने के बाद कश्यपजी बोले. देखो बहन मैं आप लोगों की बात से पूर्ण रूप से सहमत हूं। पर यह समय शिकायत करने की नहीं अपितु मिल जुल कर सहयोग से काम करने का है।

श्रीमती अनुसुईया रजक. कश्यपजी ऐसे में कहां सहयोग संभव है?गोदावरी बहन ने जो बात बतलाई है वह लगभग सभी स्कूलों की है। न तो प्रधानपाठक समय पर बैठक का आयोजन करता न सूचना देता और न ही बैठक का पूर्व से कभी कोई निर्धारित एजेण्डा होता। इन सबके बावजूद कभी बैठक में उपस्थित हो भी जाओ तो बिना कुद चर्चा किये सीधे बैठक पंजी को सामने रख देता है और कहता है कि इस पर हस्ताक्षर कर दीजिये।

गोदावरी तिवारी. अरे ओ पडोस के स्कूल वाले अध्यक्ष समेलाल गंधर्व बतला रहे थे कि उनके यहां के तो प्रधानपाठक बैठक पंजी को लेकर सभी सदस्यों के घर ही पहुंच जाता है। बोलो भाई मास्टर साहब आप बैठक तो बुलाओ। स्कूल में ही आकर कुछ चर्चा करके हस्ताक्षर कर देंगे तब कहता है कि गंधर्व जी आप भी कहां लगे हुये हैं? यह तो सोचों कि बैठक् में सब लोग आयेंगे कई प्रकार की बातें होंगी। सभी शिक्षक इसी पर व्यस्त रहेंगे और एक दिन का पूरा पढाई बर्बाद हो जायेगा। इससे अच्छा है कि आप हस्ताक्षर कर दीजिये। समेलाल गंधर्व जो वहीं पर कुछ दूर ही बैठा था गोदावरी की बातों में अपनी बात जोडते हुये कहा. कश्यपजी अभी अभी गोदावरी बहन ने जो कुछ भी बतलाई है वह पूर्ण् रूप से सही है। अपने यहां के संस्था प्रमुखें की प्रवृत्ति को देखकर तो ऐसा लगता है कि उनके स्कूलों में कभी जाये ही न।

कश्यपजी. गंधर्व जी इसी कारण तो मैं आरंभ में ही कह दिया था कि अगर हम शिकायतों पर जायें तो शिकायतों का अंबार लग जायेगा और हम उसी में उलझकर रह जायेंगे। पर अभी अभी आप लोगों ने जितनी भी बातें बतलायें हैं क्या उन सबमें प्रधान पाठकों की ही गलती है हमारी कोई गलती नहीं है?

समेलाल गंधर्व जी. आप भी कैसी बातें बोल रहे हैं कश्यपजी् सारी वस्तुस्थिति को आपके सामने खोलकर रख दिये हैं उसके बावजूद आप उसमें

भी हमारी गलती ढूंढ रहे हैं। अगर आपकी बातें प्रधान पाठकगण सुन लिये तब तो वे लोग उतना भी नहीं करेंगे जितना अभी तक कर रहे हैं।

कश्यपजी. गंधर्वजी आप मेरे कहने के आशय को गलत समझ रहे हैं। मैं े कहना यह चाह रहा हूं कि गांव का स्कूल हमारा है उसमें पढने वाले बच्चे हमारे हैं। अगर स्कूल में सारी व्यवस्था ठीक ठाक हो तो उसका प्रभाव बच्चों के उपर सकारात्मक रूप से पडेगा और बच्चे अच्छें निकलेंगे तो अंततः भला हम लोगों का ही होगा। इस कारण ठीक है प्रधान पाठक किसी कारण से हम लोगो को बैठक में बुलाना नहीं चाहता और केवल खानापूर्ति ही करता है तब क्या ऐसी परिस्थति में हम सभी सदस्यों का यह दायित्व नहीं बनता है कि प्रधानपाठक पर यह दबाव बनाये कि नियमानुसार न केवल समय पर बैठक बुलाये बल्कि पूर्व निर्धारित एजेण्डा पर व्यापक चर्चा उपरांत आम सहमति की बातों पर कार्यवाही भी सुनिश्चित करें। ज्यादतर अध्यक्ष व सदस्यगण इस पर ध्यान ही नहीं देते। एक दो बार प्रधानपाठक को टोका.टाकी जरूर करेंगे और अंत में उदासीनता दिखाते हुये हस्ताक्षर कर देते हैं और हमारी इसी उदासीनता का फायदा प्रधानपाठक भी उठाता है।

अनुसुईया रजक. पर कश्यपजी जब हम ज्यादा ही सक्रिय हो जायेंगे तब तो प्रधानपाठक के साथ हमारे आये दिन लडाई झगडा होते रहेगा और मैं यह नहीं मानती की ऐसी परिस्थति हम दोनों में से किसी के लिये भी लाभप्रद होगी।

कश्यपजी. देखो बहन सक्रियता और हस्तक्षेप दोनों में जमीन आसमान का फर्क है। सक्रियता जहां हमें अपने अधिकारों के भीतर रहकर सतत रूप से कार्य करना सीखता है वहीं हस्तक्षेप अधिकारों के अतिक्रमण करने की स्थिति को दिखाता है। आप सभी यह तो जानते हैं कि शाला प्रबंध समिति का गठन संसद द्वारा पारित अधिनियम के अनुसार हुआ है और उसी अधिनियम में यह

बात भी स्पष्ट रूप से उल्लेखित है कि समिति का क्या अधिकार और कर्तव्य है। बस हमें अपने अधिकार और कर्तव्य का पालन सक्रिय होकर करना है। न उससे कुछ ज्यादा और न उससे कुछ कम। फिर देखना स्थिति कैसे नहीं सुधरती है।

अनुसुईया रजक. कश्यपजी इसी कारण तो मैं आरंभ में ही बोली कि आग लगने पर कुआं खोदने की प्रवृत्ति से लोग दूर होना कब सीखेंगे? अब देखो न गरज आया तो सभी को समिति की याद आ रही है। नहीं तो कोई पूछने वला भी नहीं था।

कश्यपजी. हां बहन। पर हमें यह भी सोंचना चाहिये कि पुरानी बातों पुरानी यादों और पुराने अनुभवों का बोझा सिर पर लादे कब तक चलते रहेंगे। आखिर में इससे नुकसान हमारा ही है। इसीलिये मैं कहता हूं कि बीती बाते बिसार दे और आगे की सुधि लें।

गोदावरी तिवारी. तो कश्यपजी आगे की सुधि केवल हम लोग ही लें या प्रधानपाठक लोग भी कुछ सुधि लेंगे?

इस पर कश्यपजी मुस्कराते हुये बोले. गुणवत्तायुक्त शिक्षा और जिसे हम दूसरे शब्दों में समग्र शाला विकास कह सकते हैं के लिये हम दोनों की बराबर की भूमिका है और आप लोगों को यह बतलाते हुये मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है कि जिस तरह मैंने समिति के सदस्यों से चर्चा करने का बीडा उठाया है उसी तरह प्रधान पाठकों से चर्चा करने का दायित्व तिवारी जी ने अपने उपर लिया है और मुझे विश्वास है कि इस कदम से परिस्थिति निश्चित रूप से बदलेगी।

गंधर्व जी. कश्यपजी मैं तो कब से अपने यहां के प्रधान पाठक से कह रहा हूं कि आप सब काम नियमानुसार किया कीजिये। पहले तो उनके कानों में जूं तक नहीं रेंगता था पर जब से प्रधान पाठकों के उपर दनादन कार्यवाहियां होना शुरू हुआ है तब से ध्यान देने लगा है। कश्यपजी मैं तो उनसे यहीं कहता

था कि आप लोग अपने समिति के सदस्यों को शालेय गतिविधियों में जितना ज्यादा जोडेंगे उतना ही लाभ होगा। इससे हम दोनों एक दूसरे की समस्याओं को जानेंगे और समझेंगे चाहे वह शाला के भौतिक विकास से संबंधित हो या बच्चों के शैक्षिक विकास या फिर शिक्षकों की ही कोई समस्या क्यों न हो? फिर इससे एक अन्य लाभ यह भी होता कि आज समुदाय में जो एक दूसरे के प्रति अविश्वास की भावना घर कर गई है उसका अंत होता।

कश्यपजी. हां गंधर्वजी। बिल्कुल यही विचार मेरे मन में भी है। हम सभी जानते हैं कि पांचो उंगलियां बराबर नहीं होती। उसी प्रकार सभी प्रधानपाठक न तो अच्छे है और न खराब। हमें तो ऐसे प्रधान पाठकों को प्रेरित करने का कार्य करना है जो किन्हीं कारणों से उदासीनता बरतते हैं और यह कार्य अविश्वास आलोचना या दण्ड से नहीं अपितु विश्वास और सहयोग से ही संभव हो सकता है और मेरा विश्वास है कि आप सभी अपने शाला व बच्चों के विकास के लिये प्रधानपाठकों के साथ कंधा से कंधा मिलाकर कार्य करने को तैयार है।

अनुसुईया रजक. हां कश्यपजी। हम सभी तैयार हैं और इस सत्र के आरंभ से ही बच्चों के गुणवत्तायुक्त शिक्षा के लिये जो भी करना आवश्यक होगा उसे प्रथम बैठक में ही शिक्षकों के सहयोग से तय करेंगे और हर माह आयोजित बैठक में इसकी समीक्षा भी करेंगे ताकि सभी बच्चे अपने कक्षानुसार निर्धारित लर्निंग आउटकम्स को प्राप्त कर लें और शिक्षकों को भी इस बात का डर न रहें कि उनके उपर कोई कार्यवाही हो सकती है।

गोदावरी तिवारी. हां बहन हालांकि शुरू में कार्य करने पर कुछ कठिनाईयां आ सकती है क्योंकि दोनों पक्ष को अपनी प्रवृत्तियों में बदलाव लाना होगा। पर इसे करना तो होगा ही क्योंकि यही सब के हित में है।

कश्यपजी. भाईयों और बहनो। अंत में मैं आप लोगों से यही कहना चाहूंगा कि जिस तत्परता और उत्कट आकांक्षा से आप सभी इस बैठक में

उपस्थित होकर अपनी सहभागिता दिये हैं उसी प्रकार नये शिक्षा सत्र से शालेय गतिविधियों में सहभागी बनकर बच्चों के व्यापक हित में काम करेंगे और साथ ही यह प्रयास करेंगे कि आने वाले दिनों में लर्निंग आउटकम्स के आधार पर किसी भी स्कूल के शिक्षक पर कार्यवाही न हो।

गंधर्वजी. कश्यपजी। यहां उपस्थित सभी लोगों के तरफ से मैं आपको धन्यवाद देता हूं कि आपने पहल करके समिति के सदस्यों को प्रेरित करने का कार्य किया।

अंत में सभी लोग अपने अपने गांव की ओर प्रस्थान करते हैं।

(18)

तिवारीजी और शुक्लाजी दोनों प्रधानपाठकों की बैठक आयोजित करने के लिये प्रयास कर रहे थे। लेकिन उन्हें कोई सफलता नहीं मिल रही थी। दोनों को अधिकांश प्रधानपाठकों से यही जवाब मिलता कि यार अभी समय नहीं है अगर कोई दूसरा तारीख निश्चित होता है तब जरूर बतलाना। पहुंचने का प्रयास करेंगे। बहुत कम प्रधानपाठक ही ऐसे थे जो एक बार मे बैठक में अपनी उपस्थिति देने के लिये सहमत हुये थे। प्रधानपाठकों की इस टाल.मटोल की आदत को देखकर दोनो बहुत दुखी हुये।

धीरे.धीरे समय भी गुजरता जा रहा था और 5 मई की तारीख भी नजदीक आ रही थी जिस दिन से सुनवाई आरंभ होती। ऐसी परिस्थिति में तिवारीजी जब शुक्लाजी से मिले तब बोले यार शुक्लाजी अब तक तो हम लोग यही समझते थे कि शाला प्रबंध समिति के सदस्यगण ही उदासीन रहते हैं पर यहां स्थिति तो एकदम विपरीत है।

शुक्लाजी. हां तिवारीजी। मैंने तो सुना है कि कश्यपजी के पहल पर शाला प्रबंध समिति के सदस्यों का बैठक आयोजित भी हो गया और उस बैठक में अधिकांश सदस्यगण न केवल उपस्थित हुये बल्कि उन सभी लोगों के द्वारा हमारा साथ देने की बात भी कही गई और यहां देखो जिनको उनके सहयोग की ज्यादा जरूरत है उनका ही रवैया नकारात्मक है।

तिवारीजी. इसी बात की चिंता तो मुझे भी है शुक्लाजी। कितने विश्वास के साथ मैंने उस दिन यह बात बोल दिया था कि सभी प्रधानपाठकों की बैठक आयोजित करना मेरी जिम्मेदारी है और अगर यह बैठक आयोजित नहीं करा पाया तो समिति के सदस्यगण से क्या कहूंगा?

शुक्लाजी. यह तो वही बात हुई न तिवारीजी की अच्छे में साथ रहो और बुरे दिन में दूर हो जाओ।

तिवारीजी. हाँ शुक्लाजी। एक बार कम पढे लिखे व्यक्ति ऐसी प्रवृत्ति का प्रदर्शन करें तो समझ में आता है लेकिन पढे लिखे लोगों के द्वारा ऐसे स्वार्थपूर्ण व्यवहार का प्रदर्शन समझ से परे है। अरे हम लोग जो कुछ भी कर रहे हैं वह अकेले अपने लिये थोडी कर रहे हैं। इससे हमारे पूरे शिक्षक समूह को लाभ मिलना है। इतना भी समझने की कोशिश नहीं करते तो कर ही क्या सकते हैं?

शुक्लाजी. ऐसे में ही कभी कभी मेरे मन में आता है कि फिर हम भी क्यों दूसरों के बारे में सोंचे?् जब उन लोगों को हमारी समस्या से कोई मतलब नहीं है तब हमें भी ऐसे लोगों से कोई मतलब नहीं रख्ना चाहिये। जैसे को तैसा करेंगे न तभी ऐसे लोगों की अकल ठिकाने पर आयेगी।

तिवारीजी. नहीं शुक्लाजी जब हम भी वैसा ही सोंचने लगे जैसा अभी ये लोग सोंच रहे हैं तब हममें और उनमें अंतर ही क्या रह जायेगा। अभी ऐसे लोगों की सोंच का आधार यह है कि वे लोग मानकर चल रहे है किं वर्तमान समस्या केवल तिवारीजी े जैसे ही ऐसे शिक्षक जिनकी वेतनवृद्धि रूकी हैं केवल उन्हीं की है। जबकि हमारी समस्या वैयक्तिक न होकर सामुहिक है। ठीक है आज मैं हूं तो कल मेरे स्थान पर कोई दूसरा प्रधानपाठक हो सकता है। इस बात को सभी प्रधानपाठकों तक पहुंचाना बहुत आवश्यक है।

शुक्लाजी. पर तिवारीजी आप देख हीे रहे हैं कि हम दोनों कितना मेहनत कर रहे हैं। अप्रैल महीने की इस चिलचिलाती धूप में कभी इस प्रधानपाठक के घर तो कभी उस प्रधानपाठक के घर घूम रहे हैं और जिनके भी यहां जाओ सबका एक ही जवाब यार अभी समय नहीं है। कोई कहता है कि स्कूल के काम के कारण समय नहीं है तो कोई कहता है कि उन्हें शादी ब्याह

में शामिल होने के कारण समय नहीं मिलेगा। उनकी नजर में तो हमारे स्कूल में अप्रैल के महिने में कोई काम ही नहीं रहता और न हमारे कोई नाते रिश्तेदार है जिनके यहां शादी ब्याह होना है। बस उनकी नजर में े हम दोनों साधु सन्यासी हैं जिनका काम ही है गली गली घुमना।

शुक्लाजी को अधीर होते देखकर शांत कराते हुये तिवारीजी ने कहा यही तो जीवन है शुक्लाजी और मैं ऐसे ही जीवन को ज्यादा प्रेरणादायक मानता हूं जिसमें हर बात अप्रत्याशित हो। अब आप थोडी देर के लिये सोचकर देखिये कि अगर सभी प्रधान पाठक हमारे केवल एक बार के कहने पर बैठक में आ जाते और तुरंत सहयोग के लिये तैयार हो जाते तब यह पूरी प्रक्रिया कितना सरल जान पडता और जानते है शुक्लाजी इंसानों के द्वारा जितनी भी गलतियां की जाती है या उन्हीं गलतियों की पुनरावृत्ति की जाती है उन सबका आधार ही यह सोंच होता है कि ऐसी गलतियों का समाधान सरलता से हो जाता है और जब समाधान सरल है तो फिर गंभीर चिंतन का दुख-कष्ट मन को क्यों दें?् आप मेरे ही मामले को ले लिजिए शुक्लाजी। अगर मुझे हर तरफ से सरलता से सहयोग मिलने लगे और मेरी समस्या का निराकरण मिनटों में हो जाये तो मैं वैसी गलती पुनः करने से न बचूंगा और न ही दूसरे लोगों को इससे कोई सबक ही मिल पायेगी। इस कारण मेरा े सोच यह है कि जितने कष्ट के बाद इस समस्या का समाधान होगा उतना ही न केवल मैं बल्कि अन्य लोग भी गलती करने से बचने का प्रयास करेंगे।

शुक्लाजी. दर्शन की बातें न तिवारीजी कहने और सुनने में ही अच्छा लगता है। जब व्यवहारिकता के धरातल पर इसे खोजने का प्रयास करेंगे तो दूर दूर तक नजर नहीं आती। यहां आप और हम दार्शनिक बनकर सोंच रहे हैं और वहां अन्य प्रधानपाठक लोग इसे व्यावहारिक धरातल पर रहकर सोच रहे हैं। तभी तो बैठक में शामिल होना न पडे इसके लिये बहाने पर बहाने बनाये जा

रहे हैं। इसी कारण मैं एक बार पुन कह रहा हूं कि दार्शनिक बातें कहने और सुनने में ही अच्छा है।

तिवारीजी. शुक्लाजी अच्छा चलो थोडी देर के लिये मैं आपकी बात को मान लेता हूं तो उसका परिणाम यही होगा न कि हम अब प्रयास करना बंद कर देंगे और जैसी स्थिति है उसे स्वीकार कर हाथ पर हाथ धरकर बैठ जायेंगे। और क्या आप भी अब यही चाह रहे हैं कि हम इस दिशा में प्रयास करना बंद कर दें?

शुक्लाजी. तिवारीजी एक इंसान को जितना प्रयास करना चाहिये एउतना प्रयास तो हम दोनों ने किये हैं। हमारे तरुफ से कोई कोर कसर बाकी नहीं रहा है। अब तो मैं केवल यह चाह रहा हूं कि प्रधान पाठकों को बैठक में शामिल कराने के लिये दूसरे विकल्प पर भी काम करके देखा जाना चाहिये।

तिवारीजी. दूसरा विकल्प। कैसा दूसरा विकल्प शुक्लाजी?

शुक्लाजी. तिवारीजी आप और मैं जितने भी प्रधानपाठक से मिले बडे आदर और सम्मान से मिले हैं। उनके सब कुछ जानने के बाद भी सारी वस्तुस्थिति को उनके सामने बडे ही विनम्रता से रखे हैं और अंत में हाथ जोडकर आग्रह भी किये । चूंकि यह विषय सभी प्रधानपाठकों की सम्मान से जुडा हुआ है इस कारण सभी की उपस्थिति अनिवार्य और प्रार्थनीय है। उसके बावजूद हमें आश्वासन के सिवाय कुछ नहीं मिला। इसी कारण अब मैं दूसरे विकल्पों की बात कर रहा हूं और वह यह है कि उनसे सीधा सीधा बिना किसी लाग लपेट के यह कहना कि आज हमारी तो कल तुम्हारी भी बारी हो सकती है। फिर जब हम सहयोग नहीं देंगे तब क्या होगा? आपको कैसा अनुभव होगा और फिर हमारे पास आना भी मत?

तिवारीजी. शुक्लाजी यह तो एक प्रकार से धमकी देने जैसा होगा और आप जानते है कि धमकी या जबरदस्ती का असर अल्पकालीन होता है। मेरा

यह विचार है कि प्रधानपाठकों के विचार को सदा के लिये परिवर्तित किया जाये और यह तभी संभव है जब हमारा व्यवहार उनके नकारात्मकता के बावजूद उनके प्रति सकारात्मक और प्रेम भरा हो।

शुक्लाजी इतना समझ गया था कि तिवारीजी सरलता से हार मानने या अनैतिक साधनों को परिस्थिति के अनुसार अपना लेने वालों में से नही है। मन में यह सोंचकर की ज्यादा तर्क वितर्क करने से हो सकता है तिवारीजी उन्हीं से यह बोल दें कि शुक्लाजी अगर आपको भी सहयोग न देना हो तो मत दीजिये पर इस प्रकार की अनैतिक बातों पर चलने के लिये मुझसे कहिये भी मत। शुक्लाजी ने कहा ठीक है तिवारीजी तो अच्छा आप ही बतलाईये और क्या कर सकते हैं?

तिवारीजी. शुक्लाजी मेरा विचार यह है कि एक बार पुनः हम दोनों सभी प्रधान पाठकों से मिलते हैं और उनसे कहते हैं कि यह लडाई केवल मेरी नहीं है बल्कि हम सभी की है। इस कारण समुह में इकटठे होकर इसके विरूद्ध लडना ही हम सबके हित में है। अगर हमारी बातें उन्हें जंचेगी तब वे साथ देगे ओर नही जंचेगी तब नहीं देंगे। और साथ नहीं मिलने पर हम साथ साथ तो हैं ही।

शुक्लाजी. ठीक है तिवारीजी अगर सहमत हो जाते हैं तब एक दो दिन के भीतर ही बैठक रखना होगा क्योंकि सुनवाई की तारीख में अब एक सप्ताह का ही समय बचा है।

तिवारीजी. हां शुक्लाजी और मेरे अंदर अभी भी यह विश्वास अटूट रूप से बना हुआ है कि दो चार को छोडकर सभी प्रधान पाठक साथ अवश्य देंगे।

शुक्लाजी. मैं भी चाहता हूं तिवारीजी की मन का विश्वास कभी टूटना नहीं चाहिये क्योकि यही तो जीवन का आधार है।

बातचीत समाप्त होने पर दोनों पुनः सभी प्रधानपाठकों से मिलने का निश्चय कर प्रयास आरंभ कर देते हैं।

0000000000000000000000000000000000000000000

(19)

मई माह की पहली तारीख थी। सुनवाई को आरंभ होने में अब केवल चार दिन शेष रह गया था। तिवारीजी की पत्नी गीता और बेटी अनिता दोनों अपने अपने घरेलू काम निपटा रहे थे। जब से तिवारीजी के उपर कार्यवाही हुई थी और जिस तरह से इस पर गांव वाले और रिश्तेदारों की प्रतिक्रिया रही थी उसे सुन.सुनकर दोनों को ऐसा लग रहा था मानों कार्यवाही उनके पति या पिता के उपर न होकर उन दोनों के उपर हुई हो। मार्च महीने से लेकर अब तक न जाने कितने लोगों के कितने ताने उन लोगों को सुनने नहीं पडे थे। ऐसा लगता था जैसे उनके जीवन में खुशियों का आना जाना रूक गया हो।

अनिता घर का काम निपटाते निपटाते सोंच रही थी कि इससे पहले वे लोग कितने खुशी के साथ जीवन व्यतित कर रहे थे। ऐसा एक दिन भी नहीं जाता था जिसमें वह उसके भाई और मम्मी पापा एक साथ बैठकर बात नहीं किया करते थे। रात में खाने के बाद सब मिलजुलकर टी वी देखेते और हंसी ठिठोली करते सो जाते थे। पर जब सें यह घटना घटित हुई है तभी से इस क्रम में व्यवधान आ गया। अब सभी लोग रहते भले से एक ही घर में है लेकिन एक साथ बैठकर बात करने खाना खाने व टी वी देखने जैसी बात नहीं हुई है। सब अपने में ही खोये रहते हैं। पापा को देखोतो भले से उपरी तौर पर देखने से नहीं लगता कि उनके उपर इस कार्यवाही का प्रभाव पडा हो पर अंदर से वह भी आहत ही है। जब देखो तब कोई न कोई अपने विभागीय पुस्तक निकालकर पढते रहते हैं या फिर किसी न किसी से मिलने चले जाते हैं। उसी प्रकार मम्मी भी काम न होते हुये भी जब तक सोने का समय नहीं हो जाता तब तक जबरन काम खोजकर करने में अपने को व्यस्त रखने का प्रयास करती है। वह

और उसका भाई तो इस घटना के बाद घर से लगभग निकलना ही बंद कर दिये हैं। अति आवश्यक होने पर ही घर से बाहर जाने का प्रयास करते हैं।

अनिता अपने ख्यालों में खोये यह सब सोंच रही थी उसी समय दूसरे कमरे से उसकी मम्मी बोली. अनिता बेटी मैं नहाने जा रही हूं। वहां फ्रिज में सब्जियां रखी हैए मेरे आते तक काटकर रख देना।

अनिता अपने ख्यालों से बाहर आकर बोली जी मम्मी क्या सब्जी बनाना है?

अनिता की मांॅ करीब आते हुये बोली. देख लो न बेटी जो तुम लोगों को पसंद हो बना लेना। मेरा तो आजकल खाने पीने से मन ही उचट गया है।

अनिता. आपके जैसे ही सभी की स्थिति है मम्मी। रोज खाना बच जाता है। पता नहीं हम सभी की भूख कहां चली गई है?

मॉ. क्यों तुमको और तुम्हारे भाई को क्या हुआ है?् तुम लोग पेट भर खाना खाया करो।

अनिता. मैं और भाई दोनों कोशिश करते हैं मम्मी पर खिलाता ही नहीं है।

मां. नहीं बेटी। अभी तुम दोनों बच्चे हो। घर में क्या हो रहा है क्यों हो रहा है? इन बातों से अपने को दूर ही रखा करो। अरे मैं हूं तुम्हारे पापा हैं जो कुछ होगा उसे हम दोनों संभाल लेंगे। तुम दोनों केवल अपनी पढाई लिखाई पर ध्यान दिया करो।

अनिता. नहीं मम्मी हम लोगों से ऐसा नहीं हो पाता। जब जब पापा और आपके चेहरे को देखते हैं तब तब हम दोनों को भी अंदर से पीडा होती है। जब जड ही कष्ट में हो तो शाखायें कैसे लहलहा सकती है?

मां. बेटी अब इस दो ढाई महिने में तो यह सब कुछ सहने की आदत हो गई है। धीरे धीरे मैं और तुम्हारे पापा इस परिस्थिति से बाहर निकल भी रहे हैं। फिर अब तो चार दिन बाद सुनवाई भी आरंभ हो जायेगी। तुम्हारे पापा बतला रहे थे कि तीन चार सुनवाई के बाद ही मामला खतम हो जायेगा।

अनिता. पर मां मैं तो सुनी हूं कि अदालत में मामला बहुत लंबा समय तक चलता है। कई कई मामले तो वर्षों में भी समाप्त नहीं होती।

मां. हां बेटी। ऐसा होता तो है पर वह मामले की प्रकृति पर निर्भर करता है। तुम्हारे पापा का जो मामला है वह सरल किस्म का है। इसमें ज्यादा से ज्यादा दो तीन माह का समय लग सकता है। फिर अपने पापा के प्रयासों को देख भी रहे हो। दिन रात उसी में लगे हुये हैं। कभी यहां जाओ तो कभी वहां जाओ। कभी इससे मिलो तो कभी उससे मिलो। तुम्हारे पापा बोल रहे थे कि इस विकासखण्ड के सभी शाला प्रबंध समिति के सदस्यगण व प्रधान पाठकों द्वारा निर्णय लिया गया है कि वे सभी तुम्हारे पापा का साथ देंगे। अब ऐसे में तुम्ही सोंचो मामले को लम्बा खींचने का कोई आधार बचता है क्या?

अनिता. मम्मी पर अभी अभी तो मैं पापा और शुक्ला चाचाजी को बात करते सुना था कि प्रधानपाठक लोग सहयोग नहीं कर रहे हैं ?

मां. हां बेटी शुरू में ऐसा ही लग रहा था कि वे लोग सहयोग नहीं देंगे। पर बाद में तुम्हारे पापा और शुक्ला भईया के समझाने पर उन सभी को यह बात समझ में आई कि ऐसी स्थिति किसी के उपर भी आा सकता है और इससे बचने का या सामना करने का एक ही रास्ता है और वह है समूह में रहकर एक दूसरे का सहयोग करना। फिर वे सभी सहयोग के लिये तैयार हो गये हैं।

अनिता. यह तो बहुत अच्छी बात है मम्मी। नहीं तो डर रही थी कि अगर किसी से सहयोग नहीं मिलेगा तब क्या होगा?

मां. हां बेटी। सहयोग नहीं मिलने की स्थिति में मामले की ज्यादा खींचने की संभावना थी। क्योंकि वैसी परिस्थिति में यह व्यक्तिगत मामला जैसा बन जाता और फिर न तो इस पर शासन या प्रशासन के लोग उतनी गंभीरता से ध्यान देते जितनी इसके सामुहिक मामला बनने पर ध्यान देंगे।

अनिता. मम्मी मैं तो भगवान से बार बार प्रार्थना करती हूं कि ज्यादा से ज्यादा जुलाई तक यह मामला समाप्त हो जाये नहीं तो स्कूल कालेज जाने के लिये भी घर से निकलना मुश्किल हो जायेगी।

मां. हां बेटी ऐसा ही होगा। अरे लोग गली मोहल्ले में तो बात करते ही करते हैं भगवान के दरबार को भी नहीं छोडते। अभी अभी कुछ दिन पहले मैं और शुक्ला दीदी पंडितजी के यहां कथा सुनने गये थे तो वहां भी इसी के बारे में चर्चा हो रही थी। कभी कभी तो जब मन खीझ जाता है तो ऐसा लगता है कि इस गांव को छोडकर जब तक मामला खतम नहीं हो जाता तब तक शहर में ही जाकर रह लेते हैं। पर तुरंत मन में यह भी आता है कि इतना बडा कारोबार को छोडकर ओ भी किसी के ताने से डरकर जाना कहां तक उचित होगा।

अनिता. हां मम्मी। इस तरह छोडकर जाना उचित नहीं होगा। समय के साथ ठीक होगा ही।

मां. वाह बेटी। अभी अभी तो बोल रही थी कि अगर जुलाई तक मामला समाप्त नहीं हुआ तो स्कूल कालेज जाना भी मुश्किल हो जायेगा और अभी बोल रही हो कि समय के साथ सब ठीक हो जायेगा।

अनिता. हां मम्मी मैं ऐसा इस कारण बोल रही हूं कि किसी के डर से अपना गांव छोडने का दुख मेरे इस डर से बहुत बडा है कि लोग हमें फिर से ताना मारेंगे। अरे जहां लोगों की ताने दो ढाई महीने तक लगातार सुने हैं वहीं

कुछ दिन और सुन लेंगे। लोगों की जुबान जब थक जायेगी तब अपने आप ताना मारना बंद कर देंगे।

मां. हां बेटी यह हुई न समझदारी की बात। जानती हो तुम्हारे पापा भी इसी बात को बार बार मुझसे कहते रहते हैं कि गीता आज मैं अपने मामले को लेकर इतना जो निश्चित और अडिग दिखाई देता हूं उन सबका आधार तुम्ही लोग हो। अगर तुम लोग अपने मन से मेरा सहयोग नहीं करते मुझे अपनापन नहीं देते तो मैं कब का थक कर टूट गया होता।

अनिता. हां मां ऐसा तो सभी के घर परिवार में होना चाहिये। जब घर परिवार के लोग ही अपनों का साथ नहीं देंगे तब तो अंदर से टूट जाना स्वाभाविक ही है। अब पापा के ही मामले में हम लोग उन्हें जिम्मेदार ठहराते बार बार बोलते कि आपने स्कूल का काम ठीक से क्यों नहीं किया या विपत्ति आने के पहले ही उसका कोई रास्ता क्यों नहीं निकला तब सोंचो पापा के उपर क्या गुजरता? फिर अपने पापा के मामले में तो हम जानते ही हैं कि उनका सब काम एक नंबर का होता है और इसके बाद भी अगर कहीं कमी रहने के चलते कुछ कार्यवाही हो गई है तो ऐसा किसी के साथ भी हो सकता था।

मां. हां बेटी इसी कारण मैं भी कभी बाहर की बातों को तुम्हारे पापा से नहीं बतलाई। ठीक है वह समझदार है संयमी है पर जब बार बार यह सुनता की मेरे कारण मेरे घर वाले उन लोगों की ताने सुनते हैं तो धीरे धीरे क्रोध उत्पन्न होता और उससे संयम का जाना निश्चित था। इस प्रकार पूरा मन अशांत रहता और अशांत मन से किया गया कार्य कभी सफल नहीं होता।

अनिता. मां इस बात को मैं भी अनुभव की हूं। आज पापा को इतने लोगों का जो सहयोग मिल रहा है उसका एक मात्र कारण पापा का सुलझा हुआ व्यक्तिव ही है। पापा के स्थान पर कोई दूसरा व्यक्ति होता तो न जाने अब तक कितने लोगों से लड पडे होते।

मां. बेटी यह देखो अभी तक तुम फ्रीज से सब्जी भी नहीं निकाली हो और मुझे भी अपनी बातों में उलझाकर रख दी।

अनिता. तो क्या हुआ मम्मी। बहुत दिन से बहुत सारी बातें मन में उमड घुमड कर आ जा रही थी। आपसे चर्चा करने के बाद मन हल्का हो गया। अब आप देखना जिस सब्जी को मैं पन्द्रह मिनट में काटती उसे अब पांच मिनट में काट देती हूं।

मां. अरे इतना भी जल्दी जल्दी मत करना की सब्जी के बदले उंगली ही कट जाये और फिर पन्द्रह मिनट के बदले पच्चीस मिनट लग जाये।

अनिता. उंगली नहीं कटेगी मम्मी। आप निश्चिंत होकर नहाने जाईये।

अनिता की मां आवश्यक कपडे लेकर नहाने बाथरूम की ओर जाती है और अनिता फ्रीज से पालक और लाल भाजी निकालकर काटने लगती है।

(20)

जिला शिक्षा विभाग के विधि प्रकोष्ठ में पदस्थ सभी अधिकारी व कर्मचारी इन दिनों काफी व्यस्त हैं। यहां तक की कुछ कर्मचारियों की छुटटी भी निरस्त कर दी गई है ताकि माननीय अदालत द्वारा चाही गई दस बिन्दुओं की जानकारी समय सीमा पर बनाई जा सके। हालांकि जानकारी तो केवल दस बिन्दुओं में तैयार किया जाना था पर हर एक बिन्दु की जानकारी तैयार करने में अधिकारियों और कर्मचारियों की पसीना छूट रही थी। कुछ अधिकारियो और कर्मचारियों को तो अपने निर्धारित समय के बाद भी कार्यालय में रूककर काम करना पड रहा था। इससे वे सभी खिन्न थे और उस अधिकारी को मन ही मन कोसते भी थे जिन्होंने तडातड संस्था प्रमुखों की वेतन वृद्धि रोकने का आदेश जारी किया था।

विधि प्रकोष्ठ के प्रभारी अधिकारी श्री योगेश चन्द्राकर सबसे ज्यादा खिन्न थे क्योंकि उन्हें इस काम के कारण ही मई महिने में केदारनाथ धाम जाने की अपनी यात्रा रदद करवानी पडी थी। जब से उन्होंने आरक्षण रदद करवाया था उसी दिन से उनके घर में बवंडर खडा हो गया था। घर में न तो उनसे उनकी पत्नी ह ठीक से बात कर रही थी और न ही बच्चे और यह स्वाभाविक भी था। आजकल नौकरीपेशा लोगों और उनके बच्चों को गर्मी के दिनों में ही तो कहीं आने जाने का अवसर मिलता है। बाकी दिनों तो कार्यालय के काम और बच्चों की पढाई लिखाई के कारण अवसर ही नहीं मिलता। यही सब सोच के चंद्राकर जी ने जनवरी महिने से ही आरक्षण कराकर रख लिया था। पर इधर परिस्थिति ही ऐसी बनी की सब किये कराये पर पानी फिर गया।

आज मई महीने का तीसरा दिन था और दो दिन बाद ही अदालत में सुनवाई आरंभ होनी थी। यदपि विधि प्रकोष्ठ को जानकारी बनाने का कार्य दो

सप्ताह पहले ही मिल चुका था और सभी अधिकारी और कर्मचारी इस पर उसी दिन से जुट गये थे फिर भी जानकारी का न बनना समझ से परे था। विधि प्रकोष्ठ के प्रभारी होने के नाते इन सबकी जिम्मेदारी चंद्राकर जी पर था। इसी कारण उन्हें जैसे ही यह पत्र मिला था वैसे ही अपने अधीनस्थ कर्मचारियों की बैठक लेकर दो टूक शब्दों में कह दिया था कि यह जानकारी समय सीमा पर सही सही मेरे टेबल पर रखा हुआ मिलना चाहिये और तब तक के लिये आप सभी की सभी प्रकार की छुटिटयां रदद की जाती है।

चंद्राकरजी के इस आदेश का कुछ अधीनस्थ कर्मचारियों ने दबी जुबान से विरोध भी किया था पर किसी में इतनी हिम्मत नहीं थी कि खुलकर उनसे कह सके कि सर आप अपना यह आदेश वापस ले लीजिये। आप क्या जानेंगे कि आपके इस आदेश का हमारे व्यक्तिगत जीवन पर कितना गंभीर प्रभाव पडेगा। अपने घर परिवार को हमने जिस समझदारी से इतने दिनों तक चलाया है प्रेम पूर्ण परिस्थिति का निर्माण किया है वह सब एक झटके में ही इस आदेश से छिन्न.भिन्न हो जायेगा। क्योंकि उनमें से ऐसे बहुत से कर्मचारी थे जिन्होंने अपने घर परिवार के लोगों को यह वचन दे रखा था कि इस साल मई महीने में जरूर कहीं घूमने जायेंगे। पर सभी के अरमान मन के अंदर ही दफन होकर रह गये।

श्री रजनीश आचार्य जो कि चन्द्राकर जी का सहायक था आज समय पूर्व ही कार्यालय में आकर अपनी कुर्सी पर बैठ गया था किन्तु काम कुछ नहीं कर रहा था। केवल बैठे बैठे कार्यालय के छत को निहार रहा था। उन्हें इस तरह चुपचाप छत को निहारते देखकर चपरासी घनश्याम प्रसाद ने पूछा. साहब आज कार्यालय जल्दी आ गये?

अपने प्रश्नों का कोई उत्तर न पाकर घनश्याम प्रसाद आचार्यजी के नजदीक जाकर टेबल पर पानी का गिलास रखते हुये पुनः पूछा साहब आज आप जल्दी आ गये?

आचार्यजी. हां घनश्याम आज पहले दिनों की अपेक्षा और ज्यादा काम करना है और किसी भी परिस्थिति में आज दस बिन्दु की जानकारी को पूर्ण करना ही है।

घनश्याम प्रसाद. साहब कुछ खा पीकर आये हैं कि ऐसे ही चले आये हैं?् अगर नहीं खाये होंगे तो बाहर से कुछ नाश्ता ले आता हूं।

आचार्यजी. नहीं घनश्याम ओ घर में रात का खाना बचा हुआ था उसी को गरम करके हल्का फुल्का खापीकर आ गया हूं। अभी जरूरत नहीं पडेगी।

घनश्याम प्रसाद. क्या साहब रात के ठंडा खाना को गरम करके खा लिये। ऐसे में ही तो तबीयत बिगडती है। बच्चों से बोल देते कुछ बनाने के लिये।

आचार्यजी. अरे घनश्याम बच्चे घर में होते तब तो बोलता न।

घनश्याम प्रसाद. क्यों साहब बच्चे कहां चले गये?

आचार्यजी. क्या बतलाउं घनश्याम जब से साहब ने मेरी छुटटी रदद की है तभी से घर में महाभारत छिडा हुआ था। बडे मुश्किल से तो इस साल बाहर घूमने जाने की योजना बनाया था। बच्चे और मीरा कितने खुश थे। पर सब धरा का धरा रह गया। बस इसी बात पर नाराज होकर बच्चों को साथ लेकर अपने मायके चली गई। अब तुम्हीं बतलाओ घनश्याम ऐसे में मुझे गरम खाना कहां से मिलें। आज एक सप्ताह हो गया। यहां से जाने के बाद जो खाना बनाता हूं उसी में से कुछ को फ्रीज में रख देता हूं ताकि सुबह उससे काम चला सकूं। अब दोनों समय खाना तो बना नहीं सकता।

घनश्याम प्रसाद. हां साहब आपके जैसा ही बडे साहब की भी स्थिति है। मैंने स्वयं उन्हें अपनी आंखो से होटल से खाना लेते हुये देखा है। लगता है उनके यहां की मेमसाहब भी मायके चली गई है। नहीं तो बडे साहब कभी बाहर का खाना खाने वालों में से नहीं है।

आचार्यजी. हां घनश्याम इस एक काम ने सबकी व्यव्स्थित जीवन में भूचाल ला दिया है और पता नहीं इसके झटके कब तक महसूस होते रहेंगे।

घनश्याम प्रसाद. कैसा भूचाल कैसा झटका साहब?

आचार्यजी. घनश्याम तुम खुद देख तो रहे हो कैसे इस प्रकरण के कारण यहां काम करने वाले सभी अधिकारी और कर्मचारी दबाव में आ गये हैं। सबको अपना अपना पूर्व निर्धारित कार्यक्रम रदद कर यहां दिन रात काम करना पड रहा है। ऐसे में बडे साहब मैं और सभी के घरों में पत्नी बच्चे नाराज हो गये हैं और यह कोई भूचाल से कम थोडी है और फिर मानलो कुछ दिन बाद बच्चे घर वापस आ भी गये और आयेंगे भी तो पहली वाली बात कहां रहेगी। महीनों नाराजगी में ही दिन रात काटना पडेगा। तो हुआ न यह भूचाल के झटके जैसा।

घनश्याम प्रसाद. हां साहब और एक प्रकार से सोंचो तो उनकी नाराजगी जायज भी है। जिम्मेदार पदों पर बैठे लोगों को घर से बाहर निकलनें का अवसर ही कहां मिलता है और बडी मुश्किल से मिला हुआ अवसर अगर हांथ से निकल जाये तो दुख और गुस्सा का मन में उत्पन्न होना स्वाभाविक ही है।

आचार्यजी. हां घनश्याम तो मैं कब कह रहा हूं कि गलती उनकी है। भाई यही बात तो मैं घर में भी बोला हूं कि परिस्थति ही ऐसी बन गई जिसके कारण हमें अपना यात्रा रदद करना पड रहा है। फिर कभी उचित अवसर देख कर चले जायेंगे। पर मानी ही नहीं। बोलने लगी जानती हूं तुम्हारा वह उचित अवसर कभी नहीं आने वाला है। शादी के दस साल बाद तो यह अवसर मिला था और वह भी हाथ से निकल गया। घनश्याम अभी जो बात तुम मुझसे बोले

न कि जिम्मेदार पद पर बैठे लोगों की कुछ विशेष मर्यादा होती है जिसका पालन न केवल पदधारित व्यक्ति को करना पडता है बल्कि उसके पूरे घर परिवार को भी इसका पालन करना होता है का भी हवाला दिया। लेकिन नहीं मानी तो नहीं मानी। बच्चों को साथ ली और चली गई मायके।

घनश्याम प्रसाद. इसी को कहते हैं साहब करनी कोई करे भरनी कोई भरे। मेरे अनुसार तो यह नाहक की परेशानी उत्पन्न हुई है।

आचार्यजी. नहीं घनश्याम ऐसी बात नहीं है। जब भी कोई अच्छा या बुरा होता है तो उस व्यवस्था से जुडी सभी चीजें प्रभावित होती है। व्यवस्था को हम एकल संदर्भ में नहीं देख सकते। वैसा ही यह प्रकरण भी है। देखने वालों की नजर में यह भले से लगे कि लर्निंग आउटकम्स की प्राप्ति और उस पर की गई कार्यवाही बच्चे और शिक्षक से ही जुडे हैं। पर वास्तविकता में ऐसा नहीं। इससे बच्चे उसका परिवार शिक्षक और उसका परिवार हमारे विभाग के हर अधिकारी और उसका परिवार यहां तक की राज्य सरकार और हमारी न्याय व्यवस्था सभी इससे जुडे हुये हैं और ऐसी स्थिति में सबका प्रभावित होना आवश्यक है।

इससे पहले की घनश्याम प्रसाद कुछ और बोलता उन्हें बडे साहब चन्द्राकर जी के आने का संकेत मिला और वह आचार्य जी से बिना कुछ कहे दूसरे टेबल पर रखे पानी के बांटल को हाथ में रख्कर सीधा चंद्राकर जी के कक्ष में चले गये। बांटल रखकर जैसे ही वह निकल रहा था उसी समय चन्द्रकार जी अपने कक्ष में प्रवेश हुये। सामने घनश्याम प्रसाद को देखकर चन्द्रकार जी बोले. घनश्याम आचार्यजी को तुरंत मेरे कक्ष में भेजो।

घनश्याम प्रसाद. जी साहब।

घनश्याम प्रसाद पुनः आचार्यजी के टेबल के पास आकर खडा होता है। इससे पहले की घनश्याम प्रसाद कुछ बोलता आचार्य जी ने कहा. कुछ कहने की

जरूरत नहीं है घनश्याम। मैं तो साहब के आते ही समझ गया था कि वह आते ही मुझे बुलायेंगे। इसी कारण तुम्हारे जाते ही मैं यह फाईल बाहर निकाल लिया था।

आचार्यजी फाईल हाथ में रखकर चन्द्रकार जी के कक्ष की ओर जाता है और घनश्याम प्रसाद अन्य दिनों की तरह अपने काम में लग जाता है।

0000000000000000000000000000000000000000000

(21)

मई महीने का चौथा दिन था। सुनवाई आरंभ होने में आज का दिन ही शेष था। ग्रीष्मावकाश की छुटटी आरंभ हो गई थी इसलिये शुक्लाजी थोडा देर से सोकर उठते थे। जानकी प्रातःकालीन घरेलू काम को निपटाते निपटाते सोंच रही थी कि मनीष के पिताजी को चाय बनाने के बाद ही उठाउंगी। तभी उसे शुक्लाजी के कमरे से टेबल पर रखे गिलास के गिरने की आवाज सुनाई दी। मन में यह सोचकर की बिल्ली गिरा दी होगी । झटसे अंदर की ओर आई अंदर आकर देखती है कि शुक्लाजी सोकर उठ गये थे और पानी पीने के लिये टेबल पर रखे गिलास उठाते समय पकड ढीली होने के कारण जमीन पर गिर गया था। जानकी अंदर आकर सब कुछ देखकर समझ लेने के बाद बोली मनीष के पिताजी थोडी देर और नहीं सो लेते। मैं चाय बनने के बाद उठा देती। वैसे भी अब कौन सा स्कूल जाना है जिसके लिये समय पर उठना जरूरी है। अब छुटटी में दस पन्द्रह मिनट का उपर नीचे चलेगा ही।

शुक्लाजी. नहीं जानकी तुम तो जानती हो गर्मी का यह छुटटी हम सभी शिक्षकों के लिये बेकार है क्योंकि जब तक केस का निपटारा नहीं हो जाना तब तक किसी भी शिक्षक को चैन नहीं मिलेगा।

जानकी. मनीष के पिताजी मैं तो इतना जानती हू कि किसी और शिक्षक को चैन मिले या न मिले आप और तिवारी जी को नहीं मिलेगा।

शुक्लाजी. नहीं जानकी अब ऐसी बात नहीं है। जब से मैं और तिवारीजी ने मिलकर सभी संस्था प्रमुखो की बैठक ली है और उन सभी के द्वारा हमें सहयोग देने का वचन दिया गया है तब से सभी शिक्षकों की स्थिति मेरी और तिवारीजी जैसे हो गई है

जानकी. उनसे कहा गया कि इसे आप लोग तिवारीजी कश्यपजी या अन्य ऐसे व्यक्ति का ही मामला समझने की भूल मत कीजिये जिनके उपर कार्यवाही हुई है। बल्कि इसे आप शासन बनाम संस्था प्रमुख की नजर से देखने का प्रयास करिये और जब हम इसे शासन बनाम संस्था प्रमुख की नजर से देखेंगे तब हम तिवारीजी या कश्यपजी के जगह पर अपने आप को पायेंगे। सभी संस्था प्रमुखों को हमारी यह बात जंची और सहयोग करने का वचन दिये।

जानकी. फिर भी मैं एक भी बार किसी और संस्था प्रमुख को आपसे या तिवारीजी से मिलने आते नहीं देखी हूं और आप कह रहे हैं कि सहयोग करने का वचन दिये हैं। आजकल वचनों पर भरोसा करने का जमाना नहीं रह गया है मनीष के पिताजी। आप लोग अपने दम पर ही काम करते रहिये।

शुक्लाजी. जानकी मैं तुम्हारी इस बात को मानता हूं कि आजकल के जमाने में वचनों पर ज्यादा भरोसा नहीं करना चाहिये पर सब के सब अपना वचन तोड दें ऐसा भी नहीं होता। पुराने जमाने में जो आदर्श मूल्य और सिद्धांत हमारी सामाजिक व्यवस्था के आधार रहे जिसे हम नैतिक मूल्य कहते हैं आज भी भले से पहले जितनी मात्रा और रूप में मौजूद न हो अपना अस्तित्व बनाये रखे हैं तभी यह संसार चल रहा है।

जानकी जानती थी कि इस तरह बात खींचती चली जायेगी जो उसके ओर शुक्लाजी दोनों के हित में नहीं होगा। क्योंकि उन दोनों के बीच ऐसे कई अवसर आये हैं जिनमें दोनों को ही अपना अपना काम निपटाने में दिक्कत आई है। अत विषय का रूख बदलते हुये जानकी बोली. ठीक है मनीष के पिताजी आपका विभाग है आपके सहकर्मी है उन्हें मुझसे ज्यादा आप ही बेहतर जान और समझ सकते हैं। मुझे आप केवल यह बतलाईये कि जल्दी सोकर आप क्यों उठ गये? कहीं जाना है क्या?् फिर उस हिसाब से तैयारी करूंगी।

शुक्लाजी. नहीं जानकी कहीं जाना तो नहीं है। हां तिवारीजी के घर जरूर जाना है। कल तिवारीजी का फोन आया था। बोल रहाथा शहर से वकील साहब का कुछ संदेश है। हो सकता उसी संदर्भ में कुछ चर्चा करने के लिये आने को कहा हो।

जानकी. अब सुनवाई के एक दिन पहले वकील साहब ने क्या संदेश भेजवाया होगा। अगर संदेश केस से जुडा हुआ होगा तब तो मैं इसे उचित नहीं मानती क्योंकि तैयारी करने के लिये कुछ समय चाहिये की नहीं। फिर सब तैयारी करना वकील का काम है। अगर लोग ही सब काम कर लेते तो फिर वकील ही क्यों लगाते?

शुक्लाजी. तुम भी न जानकी बात को अच्छे ढंग से समझे बिना ही जो मन में आता है बोल देती हो। अरे भाई वह वकील है कोई अंतर्यामी नहीं जिसे कल क्या होगा या किस चीज की जरूरत पड जायेगी पहले से ही पताचल जाये। फिर कोर्ट कचहरी का मामला ऐसा है जिसमें हर पल नई.नई बातों की संभावना बनती जाती है। तुम तो सुनी ही होगी कि कई लोग केस जीतने के बिल्कुल कगार पर होते हैं और अंत में पता चलता है कि किसी एक बात या तथ्य ने पूरे मामले का रूख्ा ही मोड दिया और जिसे केस जीतना चाहिये था वह केस हार जाता है। हमारे वकील साहब भी केस का बडे बारीकी से अध्ययन कर रहे होंगे और इस दौरान उन्हे लगा होगा कि इस बिन्दु पर हमारा जवाब यह होना चाहिये या अमूक बिन्दु पर कुछ और जोडा या घटाया जा सकता है तब फिर से उस पर गहराई से विचार करते होंगे। अब अध्यन करते करते उन्हें लगा होगा कि कुछ बिन्दु ऐसे हैं जिन पर हमसे चर्चा करना आवश्यक है तो कुछ संदेश भेजे होंगे।

जानकी. मैं भी किसी को अंतर्यामी नहीं मानती। पर संभावना भी कोई चीज होती है। बुद्धिमान व्यक्ति तो आज की बात घटना या परिस्थिति से कल की बात

घटना और परिस्थिति का अंदाजा लगा लेते हैं मनीष के पिताजी।

शुक्लाजी. ठीक है जानकी। संभावना पता करने की शक्ति हमें बहुत से प्रतिकूल परिस्थितियों से बचा लेती है और कमोवेश यह हर इंसान में होता है। लेकिन न्यायालयीन संदर्भ में संभावना अपना काम कर ही जाये ऐसा भी नहीं सोंचना चाहिये क्योंकि वहां जो भी बात होती है गतिशील होती है जिसकी स्थिति हर क्षण बदलते रहती है। अब ऐसी स्थिति में कोई भला सटीक संभावना कैसे व्यक्त कर सकता है।

जानकी हंसते हुये बोली. तो चलो आप ही कुछ संभावना व्यक्त कर दीजिये कि वकील साहब ने क्या संदेश भेजा होगा जिस पर बात करने के लिये तिवारीजी ने आपको आने को कहा है?

शुक्लाजी. जानकी जब हम सभी संस्था प्रमुखों के साथ बैठक कर रहे थे तब वहां पर सभी से पूछा गया था कि हमें ऐसे किन किन बिन्दुओं पर ध्यान केन्द्रित करके अपनी तैयारी पूरा करना चाहिये जिससे हमारा पक्ष मजबूत रहे। तब व्यापक विचार विमर्श के उपरांत सभी की सहमति से दस बिन्दु उभर कर हमारे सामने आया था और उसी दस बिन्दु को केन्द्र बनाकर हम लोगों ने अपनी तैयारी भी की है और वकील साहब को भी बतलाये हैं। पर जैसा कि अभी अभी मैंने कहा कि न्यायालयीन प्रकरण से जुडे किसी बिन्दु को हम जितने बार पढेंगे उतनी ही नई नई बातें उसमें से निकलते जाती है। अब वकील साहब को लगा होगा कि उन्हीं दस बिन्दुओं पर हमें कुछ और अतिरिक्त तैयारी की आवश्यकता है तो तैयारी को और पुख्ता करने के लिये संदेश भेजा होगा।

जानकी. आप और तिवारीजी मिलकर यह कर लेंगे?

शुक्लाजी. क्यों हम पर भरोसा नहीं है?

जानकी. नहीं मनीष के पिताजी मेरा यह आशय नहीं है । मैं तो यह कहना चाह रही हूं कि जिस तरह समूह में चर्चा करके सबकी सहमति से दस बिन्दु आप लोग निकाले उसी तरह समूह में ही इस पर और चर्चा करते तो ज्यादा अच्छा होता।

शुक्लाजी. तुम सही कही रही हो जानकी। पर अब सोचो न इन सभी कामों के लिये समय ही कहां बचा है। समूह में चर्चा छेडने पर बहुत समय तो सबकी विचारों को सुनने में ही चला जाता है फिर अभिव्यक्त विचारों में सर्वसम्मत विचार को अलग कर एक विचार बनाने में और समय लगता है। हो सकता है तिवारीजी मेरे साथ साथ किसी और को भी इस बारे में संदेश दिया हो पर इसकी संभावना कम ही दिखरही है।

जानकी. तो आप और तिवारीजी मिलकर ही दस बिन्दु पर काम करेंगे इसी की संभावना ज्यादा है क्यों मनीष के पिताजी।

शुक्लाजी. हां जानकी। मेरा तो यह सिद्धांत ही है। समय और परिस्थिति के अनुसार हमें निर्णय लेना चाहिये। जब हम लोगों के पास पर्याप्त समय था सब के विचारों को महत्व और सम्मान दिये। आज समय नहीं है तो उन्हीं विचारों को आधार बनाकर अपनी क्षमता के अनुसार मैं और तिवारी जी उसे अंतिम रूप देने का प्रयास करेंगे।

जानकी के मन में यह प्रबल जिज्ञासा थी कि आखिर वह दस बिन्दु क्या है जिस पर इस केस का पूरा भविष्य जडा हुआ था? इस समय उसका मन दुविधा की स्थिति में थी। एक बार तो सोचती थी कि लगे हाथ पूछ ही लेती हूं कि यह दस बिन्दु क्या है और इसमें किन किन चीजों को सम्मिलित किया गया है? पर इसके साथ यह भी सोचती थी कि अगर यह बात निकल गई तो पता नही कितने समय में अंत हो और ज्यादा समय लगने का सीधा सीधा

असर उन दोनों के दैनिक कार्यों पर पडता। इसलिये अभी के समय को सही न मानकर जानकी बोली. ठीक है मनीष के पिताजी मैं झटपट चाय बना लेती हूं तब तक आप हांथ मुंह धोकर उठ जाईये। आपको तिवारीजी के यहां भी जाना है।

शुक्लाजी भी जानकी के भावों को जान चुका था कि उसके मन में दस बिन्दु को जानने की प्रबल जिज्ञासा है। पर समय की जरूरत को समझते हुये उन्होंने भी बात आगे नहीं बढाया। चुपचाप बिस्तर से उठा और बाथरूम में जाकर हांथ मुंह धोने लगा। इस बीच पांच मिनट के अंदर ही शुक्लाजी हाथ मुंह धोकर रसोई में रखे कुर्सी पर बैठ गया। जानकी चाय देतु हुये बोली. मनीष के पिताजी अब कम से कम चाय को तो बिना किसी तनाव के आराम से पी लीजिये।

शुक्लाजी. चाय अपने हाथ में लेकर मुस्कराते हुये पीने लगा।

(22)

आज 5 मई था। अदालत में सुनवाई का प्रथम दिन। यदपि सभी को मालूम था कि आज के दिन प्रकरण जज साहब के टेबल पर केवल रखा जायेगा। आज के दिन शासन के तरफ से उनके वकील द्वारा मय दस्तावेज इस बात को रखा जायेगा कि उनकी दृष्टि में लर्निंग आउटकम्स की प्राप्ति हेतु शिक्षक क्यों और कैसे जिम्मेदार हैं तथा प्राप्त नहीं होने की स्थिति में शिक्षकों के उपर की गई कार्यवाही केसे उचित है?

वहीं दूसरी ओर संस्था प्रमुख के तरफ से अपने वकील के माध्यम से इस तथ्य को रखा जायेगा कि लर्निंग आउटकम्स की प्राप्ति हेतु केवल शिक्षक समुदाय ही जिम्मेदार नहीं है।

दोनो पक्षों के द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजों का जज महोदय द्वारा बारीकि से अध्ययन और परीक्षण उपरांत इस पर अंतिम फैसला सुनाया जायेगा। अतः दोनों ही पक्ष जानते थे कि आज केवल केस का प्रस्तुतीकरण होगा और फिर उसके बाद अगली तिथि से सुनवाई आरंभ होगी। हालांकि संस्था प्रमुखों ने अपने वकील के द्वारा जज महोदय के सम्मुख इस बात से संबंधित एक अलग से आवेदन भी प्रस्तुत कराया था जिसमें इस बात का अनुरोध किया गया था कि उनके प्रकरण की सुनवाई जल्द से जल्द पूरा हो।

और हुआ भी यही। जैसे ही जज साहब अपने कुर्सी पर बैठे और न्यायालयीन कार्यवाही आरंभ करने की अनुमति प्रदान की वैसे ही दोनों पक्षों के वकीलों के द्वारा अपने अपने पक्ष में तैयार किये गये दस्तावेज को अपने सम्मुख रखकर कुछ देर देखने के बाद बोला. चूंकि प्रकरण की प्रकृति गंभीर है और इस पर व्यापक अध्ययन और विचार विमर्श की आवश्यकता है इस कारण इसके प्रत्येक बिंदु पर सिलसिलेवार सुनवाई की जायेगी। मैं संस्था प्रमुखों की

इस आवेदन पर भी विचार करने की कोशिश करूंगा कि इसका निराकरण जल्दी से जल्दी हो। अतः यह अदालत अगली सुनवाई की तिथि इस माह की 10 तारीख निश्चित करता है।

अगली सुनवाई की तारीख निश्चित हो जाने पर दोनों पक्ष अदालत से बाहर निकले और अपने अपने गंतव्य की ओर चले गये।

जब से जज महोदय ने दस मई की तारीख निश्चित की थी तब से ही इस प्रकरण के संबंध में ऐसे ऐसे लोगों की भी रूचि बढ गई थी जिन्हें पहले कोई मतलब नहीं था। इसी कारण 10 मई को समय के पहले ही अदालत परिसर में लोगों की भीड इकटठी होनी आरंभ हो गई थी।

समय होने पर सभी लोग अदालत कक्ष में रखे बेंचों और कुर्सियों पर जाकर बैठने लगे। ऐसे लोग जिन्हें बैठने के लिये जगह नहीं मिली थी वे भी वहीं आस.पास खडे होकर प्रकरण की एक एक बात को सुनने और समझने का मन बना लिये थे।

निश्चित समय पर जज महोदय आकर अपने कुर्सी पर बैठते हुये आज की कार्यवाही आरंभ करने की अनुमति प्रदान किये।

अनुमति पश्चात वहीं पास बैठा रीडर महोदय ने प्रकरण को पढते हुये कहा माननीय जज महोदय आज का प्रकरण शासन बनाम संस्था प्रमुख से संबंधित है जिस पर अभी सुनवाई होनी है। इस प्रकरण से संबंधित सारे दस्तावेज मय साक्ष्य आपके सम्मुख रखा हुआ है।

जज महोदय ने अपने सम्मुख रखे दस्तावेज को हाथ में लेते हुये कहा. आज की सुनवाई इस प्रकरण की बिन्दु क्रमांक 1 लर्निंग आउटकम्स क्या है? इसका निर्धारण किस आधार पर और किनके द्वारा किया गया है पर होनी है।

सबसे पहले मैं शासन पक्ष के वकील से सुनना चाहूंगा कि वे इस पक्ष में अपनी बात रखें।

शासन पक्ष के वकील जगन्नाथ प्रसाद जायसवाल ने कहा. माननीय जज महोदय हमारे स्कूलों में प्रवेश लेने व अध्ययनरत बच्चों को एक शिक्षा सत्र के अंत तक कक्षावार विषयवार जिन जिन बातों की जानकारी होनी चाहिये वह ही लर्निंग आउटकम्स कहलाता है। कक्षावार विषयवार लर्निंग आउटकम्स निर्धारण का प्रमुख आधार बच्चों की उम्र को माना गया है और इसका निर्धारण शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने वाले विशेषज्ञ व अनुभवी लोगों के द्वारा किया गया है।

जायसवालजी को सुनते हुये प्रमुख बातों को अपनी डायरी में नोट करने के बाद जज महोदय ने संस्था प्रमुखों के तरफ से नियुक्त वकील कश्यपजी से कहा. आपके अनुसार क्या यह सही है?

कश्यपजी. जज महोदय मैं जायसवाली जी के इस बात को तो मानता हूं कि लर्निंग आउटकम्स कक्षावार विषयवार सीखने से जुडा हुआ है पर इस बात पर मेरी पूर्ण असहमति है कि उम्र ही इसका आधार हो। माननीय जज महोदय हमारे सम्मुख ऐसे कई दृष्टांत है जहां हम लोगों ने देखा और सुना है कि सीखने में उम्र के साथ साथ बहुत से कारकों का योगदान होता है। उसी प्रकार मेरी असहमति इस बात पर भी है कि इसका निर्धारण शिक्षा के विशेषज्ञ और अनुभवी लोगों के द्वारा किया गया है क्योंकि किसी की विशेषज्ञता और अनुभव सभी के लिये समान रूप से उपयोगी हो यह भी संभव नहीं है। जज महोदय जैसे एक ही प्रकार के बीमारी से ग्रसित व्यक्ति जब एक ही डांक्टर से ईलाज कराता है तो जरूरी नहीं है कि सब व्यक्ति उस डांक्टर के ईलाज से ठीक ही हो जाये जबकि उस डॉक्टर की विशेषज्ञता और अनुभव सभी बीमार लोगों के लिये समान है। इसी आधार पर हम कह सकते हैं कि कक्षावार विषयवार लर्निंग आउटकम्स का निर्धारण भले से वह विशेषज्ञ और अनुभवी लोगों के द्वारा ही

क्यों न की गई हो सभी बच्चों के लिये समान रूप से उपयोगी ही हो ऐसा भी नहीं हो सकता।

जज महोदय ने कश्यपजी के द्वारा प्रस्तुत तर्कों में से कुछ प्रमुख बातों को नोट करने के बाद जायसवाल जी से कहा. आपको इस पर कुछ कहना है।

जायसवाल जी. हां जज महोदय मैं इस पर यह कहना चाहता हूं कि बच्चों की मानसिक स्थिति को ध्यान में रखते हुये प्रत्येक कक्षा में प्रवेश के लिये बच्चों की आयु निर्धारित की गई है। इसका सीधा तात्पार्य यह है कि बच्चों की उम्र व उसकी मानसिक स्थिति एक दूसरे से अंतः-संबंधित है। इस अंतः-संबंधिततता के सिद्धांत को ध्यान में रखकर ही कक्षावार विषयवार लर्निंग आउटकम्स का निर्धारण किया गया है। हां मैं इस बात को जरूर मानता हूं कि सीखने में अन्य कारकों का भी योगदान होता है और यह अन्य कारक प्रत्येक बच्चों के लिये अलग अलग हो सकता है। किन्तु प्रमुख कारक तो उम्र ही होता है। उसी प्रकार जहां तक विशेषज्ञ और अनुभव के संबंध में कश्यपजी का दृष्टांत है तो उससे भी मैं सहमत नहीं हूं क्योंकि कश्यपजी ने अपने तर्क में अपवादों की बात की है। माननीय जज महोदय शासन की ओर से जब भी कोई नीति सिद्धांत या योजना पर कार्य किया जाता है तब उसकी प्रभावशीलता की व्यापकता को ध्यान में रखा जाता है न कि उसकी इकाई पर।

जायवालजी के बैठने पर जज महोदय ने कश्यपजी से कहा. क्या आप जायसवाली जी के तर्क से संतुष्ट हुये?

कश्यपजी. नहीं जज महोदय। जायसवालजी के तर्कों में विरोधाभास छिपा हुआ है। जज महोदय अभी अभी जाययवालजी ने कहा कि शासन अपनी नीति सिद्धांत या योजना की प्रभावशीलता को व्यापकता की दृष्टि में देखता है इकाई की दृष्टि से नहीं तो मेरा कहना यह है कि फिर अच्छाई और बुराई या कमियों को भी व्यापकता की दृष्टि से देखा जाना चाहिये। पर इस प्रकरण में कार्यवाही

तो इकाई के आधार पर की गई है जो उचित नहीं है। जज महोदय लर्निंग आउटकम्स प्राप्ति का प्रश्न भी ऐसा ही है। एक स्कूल में बहुत से बच्चे होते हैं। उसमें से कुछ बच्चों के द्वारा लर्निग आउटकम्स नहीं प्राप्त करने की स्थिति में संस्था प्रमुख पर जो कार्यवाही की गई है उसे मैं उचित नही मानता।

जज महोदय ने जायसवाल जी से पूछा. जायसवालजी आपको कुछ और कहना है कि आगे बढें।

जायसवालजी अपनी जगह से उठते हुये कहा. हां जज महोदय मैं केवल यह कहना चाह रहा हूं कि कश्यपजी जिसे संस्था प्रमुखों के उपर कार्यवाही करना बतला रहे हैं वह दरअसल दण्डस्वरूप की गई कार्यवाही न होकर एक सुधारात्मक कदम है। जज महोदय मैं इस बात को मानता हूं कि शासन की नीति सिद्धांत या योजना की प्रभावशीलता व्यापकता के संदर्भ में देखा जाता है किन्तु कमियों के आंकलन का आधार इकाई ही होता है। अगर कमियों के आंकलन उसके फलस्वरूप की गई कार्यवाही या दण्ड का आधार भी व्यापकता ही रखा जाये तो पूरी व्यवस्था ही चरमरा जायेगी। इसी कारण सुधारात्मक कदम के रूप में कार्यवाही इकाई को आधार बनाकर की जाती है ताकि इकाई पर कार्यवाही होने से व्यापकता में सुधार की प्रक्रिया आरंभ हो जाये। दोनों पक्षों को ध्यान से सुनकर प्रमुख बातों को नोट करने के बाद कहा- अब इस संबंध में अगली सुनवाई 15 मई को निश्चित की जाती है।

जज महोदय के द्वारा पांच दिन बाद ही सुनवाई की तारीख मिलने पर सभी संस्था प्रमुख प्रसन्नचित्त मन से अपने अपने घरों की ओर प्रस्थान किये।

(23)

तिवारी जी और शुक्लाजी दोनों एक ही मोटरसायकल पर गांव से शहर सुनवाई के दिन निकले। रास्तें में शुक्लाजी ने पूछा तिवारीजी आपको क्या लगता है सुनवाई जल्दी पूरी हो जायेगी?

तिवारीजी ने कहा. प्रथम दिन के सुनवाई को देखकर तो आशा बंधी है शुक्लाजी की सुनवाई जल्द पूरी हो जायेगी क्योंकि अगर लंबा खींचना होता तो पांच दिन बाद की ही तारीख नहीं मिलती और अगर इसी हिसाब से सुनवाई होती रहे तो ज्यादा से ज्यादा दो ढाई महीने में पूरा हो जायेगा।

शुक्लाजी हां तिवारीजी मैं भी चाहता हूं कि जल्दी से जल्दी इस मानसिक यातना के दौर से मुक्ति मिलें और हम लोग शिक्षा सत्र के आरंभ से ही एक नई उर्जा के साथ बच्चों को पढा सकें।

तिवारीजी. हां शुक्लाजी इसी बात को सोंचकर मैंने जज महोदय के सामने वह प्रार्थना पत्र भी प्रस्तुत करने को कहा था जिसमें जल्द सुनवाई की बात लिखी हुई थी।

शुक्लाजी. हां यार ओ तो जज महोदय ने जैसे ही पांच दिन बाद की तारीख निश्चित किया मैं उसी समय समझ गया था कि जज महोदय ने इस प्रार्थ्ना पत्र पर सहानुभूतिपूर्वक विचार किया है।

तिवारीजी. हॉ शुक्लाजी काश। ऐसा ही नजरिया सभी लोगों का शिक्षकों के प्रति होता। मैं ऐसा इस कारण नहीं कह रहा हूं कि हम लोगों के सहानुभूति पाने के भूखे हैं बल्कि इस कारण कह रहा हूं कि लोगों के नजरिये का सीधा संबंध हमारे मानसिक स्वास्थ्य से जुडा हुआ है। शुक्लाजी मैं तो यह मानता हूं कि शिक्षक के लिये ज्ञानी होना तो आवश्यक है ही बल्कि उससे भी ज्यादा आवश्यक उसका प्रसन्न चित्त होना भी है क्योंकि बिना प्रसन्नता के वह कितना

भी ज्ञानी क्यों न हो बच्चों के सामने अपनी बातों को प्रभावशीलता के साथ रख ही नहीं पायेगा। फिर बच्चो को पढाना ही नहीं होता है अपने कक्षा के एक एक बच्चों को जानना और समझना भी जरूरी होता है।

शुक्लाजी हां तिवारी जी और तनाव से ग्रसित मन में यह बात सरलता से कहां आ पायेगी कि किस बच्चे ने किस विषय में किन किन बिन्दुओं को सरलता से सीखा है और किन किन बिन्दुओं में उन्हें कठिनाई आ रही है। ऐसा होने के पीछे क्या क्या कारण हो सकते हैं और एक शिक्षक इससे कैसे निपट सकता है?

तिवारीजी. हां शुक्लाजी और यही सब आज के सुनवाई में अपने वाली महत्वपूर्ण बिन्दु है। आज की सुनवाई के लिये निर्धारित दूसरा बिन्दु वैयक्तिक भिन्नता ही है।

दोनों को बात करते करते पता ही नहीं चला कि वे कब अदालत परिसर के अंदर दाखिल हो गये थे। सारी क्रियायें अनैच्छिक क्रियाओं की तरह होती रही। मोटरसायकल स्टैण्ड में खडी करने के बाद दोनों अदालत के कक्ष में जाकर उसी स्थान पर बैठ गये जहां पहले दिन बैठे थे। अधिकांश संबंधित लोग अपनी अपनी जगहों पर बैठ चुके थे और प्रतीक्षा केवल जज महोदय के आने की थी।

निर्धारित समय पर जज महोदय कक्ष के अंदर प्रवेश किये। सभी लोगों ने खडे होकर उनका सम्मान किया। जज महोदय सबको इशारे से बैठने का संकेत देकर अपनी कुर्सी पर बैठते हुये रीडर को आज की कार्यवाही आरंभ करने की अनुमति प्रदान किया। रीडर ने आज की सुनवाई हेतु निर्धारित दूसरे बिन्दु को पढकर सुनाते हुये कहा. माननीय जज महोदय आज का बिन्दु जिस पर चर्चा होना है वह है. लर्निंग आउटकम्स का वैयक्तिक भिन्नता से क्या संबंध है?

वैयक्तिक भिन्नता के बावजूद क्या सभी बच्चों में एक समान लर्निंग आउटकम्स का प्रदर्शन संभव है?

रीडर ने निर्धारित बिन्दु पढने के बाद दस्तावेज जज महोदय की ओर बढाया। दस्तावेज अपने हाथों में लेते हुये जज महोदय ने शासन के तरफ से नियुक्त वकील श्री जायसवाल जी से कहा. जायसवाल जी आपको इस बिन्दु पर क्या कहना है?

जायसवाल जी. माननीय जज महोदय जैसा कि प्रथम बिन्दु के सुनवाई के दौरान मैंने अपनी बात रखते हुये कहा था कि लर्निंग आउटकम्स निर्धारण का प्रमुख आधार आयु है। जहां तक वैयक्तिक भिन्नता की बात है तो लर्निंग आउटकम्स के निर्धारण में उसे एक आधार बनाना दुश्कर कार्य होता क्योंकि ऐसे में तो प्रत्येक बच्चे के लिये अलग अलग लर्निंग आउटकम्स निर्धारित करना पडता। जिसे किसी भी परिस्थिति में व्यावहारिक नहीं कहा जा सकता। अतः माननीय जज महोदय लर्निंग आउटकम्स और वैयक्ति भिन्नता में संबंध औसत दृष्टि से है इकाई से नहीं। इसी कारण आंकलन या मूल्यांकनकर्ता द्वारा जब बच्चों में इस बात की जांच की जाती है कि उनमें लर्निंग आउटकम्स आ पाया है कि नहीं तो प्रमुख ध्यान औसत पर होता है इकाई पर नहीं। जैसे एक कक्षा में 40 बच्चें हैं और उसमें से पूछे गये प्रश्न का उत्तर अगर 30 बच्चे जानते हैं तो उस कक्षा के बच्चों में लर्निग आउटकम्स है ऐसा माना जाता है।

इससे पहले की जायसवाल जी अभी कुछ और बात रखते कश्यप जी खडे होते हुये बोले. जज महोदय मैं जायसवाल जी के इस बात से पूर्णतः असहमत हूं कि आंकलन या मूल्यांकनकर्ता द्वारा लर्निंग आउटकम्स प्राप्ति की जांच औसत रूप में की जाती है। जब भी कोई जांचकर्ता किसी भी स्कूल में किसी भी कक्षा में किसी भी विषय में बच्चों का आंकलन और मूल्यांकन करता है तब

उनका पूरा ध्यान एक एक बच्चों अर्थात इकाई के प्रदर्शन पर होता है न कि औसत प्रदर्शन पर।

जायसवालजी. माननीय जज महोदय मैंने इसी कारण आरंभ में ही कहा था कि वैयक्तिक भिन्नता का पूर्णतः पालन करते हुये लर्निंग आउटकम्स का निर्धारण बहुत ही कठिन होगा। फिर जब एक कक्षा के सभी बच्चों की आयु एक समान होती है तो अगर हम बहुत ही सूक्ष्म बातों को छोड दे तो ज्यादातर बातें उनकी लगभग समान ही होती है और यही कारण है कि जांचकर्ता द्वारा बच्चों के आंकलन या मूल्यांकन का आधार औसत को माना जाता है।

कश्यपजी. माननीय जज महोदय मैं अब भी जायसवाल जी के बातों से सहमत नहीं हूं क्योंकि अब प्रश्न यह आता है कि औसत का आधार क्या होगा? जज महोदय यह हम सभी का अनुभव रहा है कि एक ही कक्षा में दर्ज बच्चों का एक ही विषय के प्रश्नों पर अलग अलग औसत हो सकता है जैसे गणित में प्रश्न एक को चालीस बच्चों में से 30 बच्चे हल कर लेते हैं तो वहीं प्रश्न 2 को को केवल पन्द्रह बच्चे हल कर पाते हैं। इस तरह प्रत्येक विषय और प्रत्येक प्रश्न पर लर्निंग आउटकम्स प्रदर्शन भिन्न.भिन्न हो सकता है।

जायसवालजी. माननीय जज महोदय शासन की ओर से इस समस्या के निराकरण का प्रयास किया गया है। यही कारण है कि अगर किसी कक्षा में दर्ज बच्चों में से 75ः बच्चे किसी विषय पर पूछे गये प्रश्नों का उत्तर दे देते हैं तब यह माना जाता है कि उस कक्षा के बच्चों में उस विषय से संबंधित लर्निंग आउटकम्स प्राप्त कर लिये गये हैं और इस प्रकार कश्यपजी का यह कहना कि औसत के निर्धारण में भी कठिनाई आयेगी सही नहीं है।

अब तक जज महोदय दोनों पक्षों द्वारा प्रस्तुत तर्कों को बडे ध्यान से सुन रहे थे। जायसवाल जी के बोलने के बाद जब कश्यपजी कुछ बोलने के लिये खडे नहीं हुये तब जज महोदय ने कहा. कश्यपजी जायसवालजी के बातों से तो

स्पष्ट है कि औसत का निर्धारण कर दी गई है। क्या आपको अब भी ऐसा कुछ लगता है जिसके आधार पर जांचकर्ता शिक्षक समुदाय के साथ अन्याय कर सकता है?

कश्यपजी. माननीय जज महोदय अब मैं आपका ध्यान उन्हीं बातों की ओर ले जाने का प्रयास करूंगा जिनके संबंध में आपने स्पष्ट रूप से माना है कि किसी भी स्कूल के किसी भी कक्षा के किसी भी विषय में 25 प्रतिशत बच्चों में लर्निंग आउटकम्स का प्रदर्शन न होना स्वाभाविक है और इसका कारण केवल वह नहीं है जिसका उल्लेख जायसवालजी ने दिया बल्कि इसका वास्तविक कारण लर्निंग आउटकम्स का वैयक्तिक भिन्नता के सिद्धांतों से पूर्ण् रूप से न जुडा होना है। लेकिन जज महोदय मैं जायसवाल जी से केवल यह जानना चाहता हूं कि क्या आंकलन और मूल्यांकनकर्ता को इस बात की जानकारी नहीं होती और अगर जानकारी नहीं होती तो बिना सही जानकारी के उनके द्वारा कार्यवाही किया जाना क्या गलत नहीं है और अगर जानकारी होती है तब उनके द्वारा कार्यवाही किस आधार पर की जाती है?

जज महोदय ने जायसवाल जी की ओर देखकर पूछा. क्यों जायसवाल जी क्या यह सही है जो कश्यपजी बोल रहे हैं?

जायसवाल जी. माननीय जज महोदय मैं यह मानता हूं कि कश्यपजी की बातों में सच्चाई है। पर यह भी सच है कि शासन की मंशा किसी को भी न तो व्यक्तिगत और न ही सामूहिक रूप से अकारण परेशान करने की है। जहां कोई परेशानी आई भी है या आ रही है तो इसका कारण प्रवृत्तिगत बातें है सिद्धांत या नियम नहीं।

जायसवालजी इतना बोलने के बाद अपनी जगह पर बैठ गये। जज महोदय ने एक नजर घडी पर डाला और कहा. दूसरे बिन्दु पर आज की सुनवाई

यही पूर्ण होती है। सुनवाई की अगली तिथि इसी माह की 20 तारीख को सुबह 11 बजे निश्चित की जा रही है।

जज महोदय से वांछित तिथि पाकर उपस्थित सभी संस्था प्रमुख आपस में एक दूसरे से बात करते हुये कक्ष से बाहर निकले। तिवारीजी और शुक्लाजी दोनों उस स्थान की ओर बढे जहां उनकी मोटरसायकल खडी थी। गाडी के स्टार्ट होते ही गाडी गांव की ओर बढने लगी।

(24)

तीसरे दिन की सुनवाई भी अपने समयपर पूर्ण हो गई। जज महोदय के पूछने पर जायसवाल जी और कश्यपजी ने अपना अपना पक्ष विस्तार से रखा। जज महोदय को जहां भी लगा कि इन बातों को नोट किया जाये उन को उन्होंने नोट भी किया। आवश्यकतानुसार व बातों को और ज्यादा स्पष्ट करने के लिये जज महोदय ने कुछ पूरक प्रश्न भी किये जिसका जवाब दोनों पक्ष के वकीलों ने बडे ही चतुराई से दिया।

सुनवाई संपन्न होने के बाद जब सभी संबंधित पक्ष अदालत परिसर से निकलकर अपने अपने घरों की ओर जाने लगे तभी शुक्लाजी ने तिवारीजी से कहा. तिवारीजी आज तीसरे बिन्दु पर जो सुनवाई हुई उससे तो यही निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पलडा हमारी तरफ झुक रहा है।

तिवारीजी. अभी से यह कहना जल्दबाजी होगा शुक्लाजी क्योंकि अभी केवल तीन बिन्दु पर ही सुनवाई पूरी हुई है। जब तक आधे से ज्यादा बिन्दु पर सुनवाई पूरी नहीं हो जाती तब तक कुछ भी निश्चितता के साथ नहीं कहा जा सकता।

शुक्लाजी. हां तिवारीजी यह बात तो है। पर जिस ढंग से हमारा वकील कश्यपजी बातों को तर्क पूर्ण ढंग से जज महोदय के सामने रखता है उससे मुझे विश्वास है कि जैसे जैसे सुनवाई पूरी होगी पलडा हमारे पक्ष में झुकता जायेगा।

तिवारीजी और शुक्लाजी बात करते करते आगे बढ रहे थे कि उसी समय तिवारीजी के मोबाईल की घंटी बजी। मोबाईल निकालकर देखा तो उसके मामाजी का फोन आ रहा था। मामाजी का नाम देखकर तिवारजी ने कहा. शुक्लाजी मामाजी का फोन है। ऐसा करते हैं यहीं छाया में रूककर आराम से

बात कर लेते हैं उसके बाद ही आगे बढेंगे। नहीं तो आप मेरे मामाजी को जानते ही है कि उनका फोन आये और किसी कारण से तुरंत न उठा पाओ तो पहले जी भर के सुनायेंगे उसके बाद काम की बात करेंगे।

शुक्लाजी. हां तिवारीजी यह बात तो है ही। साथ में एक दूसरी बात जो मैंने मामाजी में गौर किया है वह यह है कि वह सारी बातों को फोन पर ही जान लेना चाहता है। सार से तो उनका काम ही नहीं चलता। अब फोन में कोई सभी बातों को ज्यों का त्यों किसी के सामने कैसे रख सकता है यह भी नहीं सोंचते?

तिवारीजी. हां शुक्लाजी आजकल मोबाईल कंपनी वालों ने भी मुप्त की कई योजनायें चला रखी हैए जिसका फायदा मेरे मामाजी जैसे लोग बखूबी ले रहे हैं।

शुक्लाजी. तिवारीजी इससे पहले की घंटी बजना बंद हो जाये और आपके मामाजी को दो बार फोन लगाना पडे फोन उठा ही लो। नहीं तो दो बार में फोन उठाना मतलब पन्द्रह मिनट और। फिर दोपहर की गर्मी भी बढती जा रही है।

तिवारीजी. हां शुक्लाजी आप सही कह रहे हैं।

तिवारीजी वहीं छाया में एक ओर खडा होकर फोन की उस बटन पर उंगली रखता है जिसके बाद बात होना आरंभ होता है। जैसे ही तिवारीजी बटन दबाकर हैलो कहता है वैसे ही उधर से आवाज आती है. हां भांजे। मैं मामा बोल रहा हूं। बडी देर कर दी फोन उठाने में।

तिवारीजी. जी मामाजी प्रणाम। ओ क्या है अभी अभी तो अदालत कक्ष से बाहर निकले हैं और आप तो जानते हैं कि अदालत में मोबाईल को साइलेंट मोड में रखना पडता है। बस जैसे ही बाहर निकले वैसे ही आपकी काल आने लगी। मामाजी यहां अदालत परिसर में दो चार पेड ही है जिसके छाया में

ज्यादातर लोग खडे हुये है। बस अपने लिये भी छाया खोजकर आपसे तुरंत बात करना आरंभ किया हूं।

मामाजी. हां भांजे मैं सब समझता हूं। पर तुम यह सब छोडो और मुझे आज हुई सुनवाई के बारे में विस्तार से बतलाओ।

तिवारीजी. मामाजी आप तो जानते हैं कि हमारे इस प्रकरण की सुनवाई दस बिन्दुओं पर हो रही है। इसी क्रम में आज तीसरे बिन्दु क्या लर्निंग आउटकम्स की प्राप्ति के लिये केवल शिक्षक जिम्मेदार हैं पर सुनवाई हुई।

मामाजी. तो इस पर शासन के वकील का क्या जवाब था भांजा?

तिवारीजी. मामाजी अब शासन के निर्देशानुसार हम पर कार्यवाही हुई है तो उनका सीधा सीधा कहना यही था कि शिक्षक ही जिम्मेदार है। उनके वकील जायसवालजी ने जज महोदय से कहा कि पालक अपने बच्चो को बडे अरमान के साथ यह सोंचकर स्कूल भेजते हैं कि उनके बच्चे स्कूल में पढाये जाने वाले सभी विषयों केा सीखेंगे और इसके लिये सभी स्कूलों में विषय विशेषज्ञ के रूप में शिक्षकों की न केवल नियुक्ति की जाती है बल्कि समय समय पर उनके ज्ञान को परिमार्जित और परिवर्धित करने के लिये प्रशिक्षण भी दिये जाते है जिस पर शासन का करोडों रूपये खर्च होता है। अब इतना करने के बाद भी अगर बच्चों में लर्निंग आउटकम्स न आ पाये तो स्वाभाविक रूप से शिक्षक ही जिम्मेदार होंगे।

मामजी. तो आप लोगों के तरफ से नियुक्त वकील ने इस पर क्या तर्क प्रस्तुत किया?

तिवारीजी. मामाजी हमारे वकील कश्यपजी ने कहा कि जज महोदय मैं मानता हूं कि लर्निंग आउटकम्स की प्राप्ति में शिक्षकों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है किन्तु यह बात पूर्ण रूप से सही नहीं है कि इसके लिये

केवल शिक्षक समुदाय ही जिम्मेदार हैं। जब शासन की ओर से शिक्षा नीति या सिद्धांतों के कार्यान्यवन में समूह को आधार बनाया जाता है तो उन्हें इस बात पर भी समग्र रूप से ध्यान देना चाहिये कि बच्चों के सीखने में पाठयक्रम की संरचनाए उनका सामाजिक और आर्थिक परिवेश उनके पालको की जागरूकता स्कूलों में उपलब्ध भौतिक और मानवीय सुविधाओं का भी कुछ न कुछ योगदान अवश्य होता है। इस कारण बच्चों में लर्निंग आउटकम्स की प्राप्ति तभी संभव है जब इस व्यवस्था से जुडे सभी कारक अपनी अपनी जगह अपनी भूमिकाओं का निर्वहन करें। अब ऐसे में केवल शिक्षक समुदाय को ही जिम्मेदार मानकर कार्यवाही कर देना उचित नहीं है।

मामजी. वाह भांजे। आप लोगों के तरफ से नियुक्त वकील ने बहुत अच्छा तर्क प्रस्तुत किया है। भाई मान लो एक डांक्टर के पास मरीज ईलाज के लिये जाता है और वह डांक्टर पूर्ण निष्ठा के साथ उसका ईलाज भी करता है और उसके बाद भी अगर वह ठीक न हो तो क्या डॉक्टर अकेला जिम्मेदार होगा?् नहीं वहां पर उस दवाई की गुणवत्ता जो उसे दिया जा रहा है उस मरीज की अपने खान पान के प्रति सावधानी बरतना जिस परिवेश में वह रहता है जो कई बार व नर्स जो डॉक्टर की अनुपस्थिति में उसका देखभाल करते हैं सबकी जिम्मेदारी उसके ठीक होने में होती है। यही स्थिति आप लोगों के लिये है भांजे।

तिवारीजी. पर मामाजी ऐसा होता कहां है? मरीज को अगर कुछ भी हो जाये तो उसकी पूर्ण जिम्मेदारी डॉक्टर पर ही आता है। लोग यही मानकर चलते हैं कि डॉक्टर ने ही ईलाज करने में लापरवाही बरती होगी। उसी प्रकार अगर कोई भी बच्चा किसी विषय में कुछ नहीं जानता तो दोष सीधा सीधा उस विषय के शिक्षक पर आता है और लोग यही कहते हैं कि संबंधित शिक्षक ने कुछ नहीं पढाया होगा जिसके कारण बच्चे नहीं सीखें।

मामाजी. दोनों पक्षों की बातें सुनने के बाद जज महोदय ने क्या कुछ पूरक प्रश्न नहीं किये भांजे?

तिवारीजी. मामाजी वैसे जज महोदय सुनवाई के दौरान ज्यादा बोलते नहीं है। जहां बहुत ही आवश्यक होता है वहीं हल्का फुल्का कुछ टिप्पणी करता है। जैसे आज ही जज महोदय ने जायसवाल जी से कहा. कि क्या आप कश्यपजी के बातों को सुनने के बाद भी अपने इस बात पर कायम है कि लर्निंग आउटकम्स की प्राप्ति के लिये केवल शिक्षक ही जिम्मेदार हैं?

मामाजी. तो जायसवालजी ने जज महोदय से क्या कहा?

तिवारीजी. और क्या कहेगा मामाजी। बोला जज महोदय मैं अब भी अपने बात पर कायम हूं और उसका आधार यह है कि आज भी हमारे समाज में ऐसे बहुत से लोग है जिन्हें स्कूलों की पढाई लिखाई के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है और ऐसे लोग अपने बच्चों को केवल शिक्षकों के भरोसे ही स्कूल में भेजते हैं। ऐसी स्थिति में अगर बच्चे कुछ सीख न पाये तो शिक्षक के सिवाय और किसे जिम्मेदार माना जा सकता है?

मामाजी. भांजे तो जायसवाल जी के इस बात पर कश्यपजी ने कुछ आपत्ति दर्ज कराया कि ऐसे ही उनके बात को मान लिया?

तिवारीजी. आपत्ति दर्ज कराया न मामाजी। कश्यपजी ने कहा. जज महोदय मेरे पूर्व में प्रस्तुत तर्क से यह बात स्पष्ट हो गया था कि लर्निंग आउटकम्स की प्राप्ति में बहुत से कारकों की भूमिका होती है और केवल इस आधार पर की इस व्यवस्था से जुडे कोई पक्ष सक्रिय या जागरूक नहीं है उसे दोषमुक्त कर देना उचित नहीं है।

मामाजी. तो जज महोदय ने क्या कहा?

तिवारीजी. इसके बाद जज महोदय ने कुछ नहीं कहा। बल्कि अगली सुनवाई की तारीख दो दिन बाद का ही दे दिया।

मामाजी. चलो भांजा अच्छा ही हुआ जो जज साहब मामले को जल्दी जल्दी निपटा रहा है। अब अगले बिन्दु पर भी अपनी तैयारी पुख्ता रखना। अगर कहीं भी मेरी सलाह की आवश्यकता होगी तब जरूर पूछना।

तिवारीजी. जी मामाजी जरूर। अच्छा अब फोन रख रहा हूं। गर्मी बढने के पहले घर पहुंचना है।

तिवारीजी फोन जेब में रखते हुये बोला. शुक्ला जी मोटरसायकल आप ही चलाओ।

शुक्लाजी मोटरसायकल अपने गांव की ओर बढा देता है।

0000000000000000000000000000000000000000000

(25)

सुबह सैर के समय रमेश दूसरे दिन की तरह ही उस चैक पर पहले से पहुंच गया जहां से वह मनीष के साथ सैर के लिये जाता था। अन्य दिन जैसे ही वह उस निश्चित स्थान पर पहुंचता उसके थोडी देर बाद ही मनीष वहां आ जाता था। पर आज रमेश को वहां खडे हुये लगभग दस मिनट हो गया था लेकिन मनीष दिखाई नहीं दिया। वहीं पर खडे खडे रमेश सोंचता रहा कि हो सकता है आज कुछ काम से देर से सोया होगा तो समय पर नींद नहीं खुली होगी। वैसे भी गर्मी के दिनों में जगने के समय ही नींद आती है या फिर घर के किन्हीं कामों में उलझ गया होगा।

जब थोडी देर और नहीं दिखा तब मन में यह सोंचकर की मनीष के घर जाकर ही पता करना चाहिये कि वास्तविक कारण क्या है रमेश मनीष के घर की ओर जाने ही वाला था कि उसे दूर से ही मनीष दौडता हुआ आता दिखाई दिया और कुछ ही क्षण में मनीष रमेश के पास आ गया। मनीष को देखकर रमेश ने कहा. यार आज देर कर दी। देखो तो 5ण्15 बजने वाली है। थोडी देर में ही धूप निकल आयेगी और जानते हो गर्मी के दिन का धूप कितना तीखा होता है। बस कुछ देर व्यायाम करने के बाद ही पूरा शरीर और कपडा पसीने से सराबोर हो जायेगा। रमेश जब बोलकर चुप हुआ तब मनीष ने कहा हां यार रमेश देरी के लिये क्षमा चाहता हूं। मैं तो समय पर उठकर तैयार हो गया था पर क्या करोगे उसी समय अम्मा पिताजी से उनके प्रकरण के बारे में पूछना आरंभ कर दी। पिताजी कल अदालत में जो जो हुआ था उसके बारे में बतलाने लगा और मैं भी उसे सुनने में रम गया।

रमेश. यार मनीष तुम अदालत के प्रकरण को समझते हो? मेरा तो कुछ पल्ले ही नहीं पडता।

मनीष. नहीं रमेश ऐसी बात नहीं है कि मुझे पूरा.पूरा सब कुछ समझ में आता ही है। पर हां जब किसी मामले को आरंभ से जानते रहो तो उसे समझना भी कोई कठिन नहीं होता। तुम तो जानते हो कि मैं जिस प्रकरण के बारे में बात कर रहा हूं उसे आरंभ से लेकर अब तक मैंने कई बार सुना है।

रमेश. चलते चलते ही पूछा तो तुम्हारे पिताजी अपने प्रकरण के बारे में क्या बतला रहे थे?् मैं तो उस दिन जब अखबार में आया था उसके बाद से न तो तुमसे और न ही किसी और दूसरे से इसके बारे में चर्चा किया है और देखो मनीष मेरे रूचि नहीं होने का कारण तुम ऐसा बिल्कुल मत समझना कि मुझे तुम्हारे पिताजी के प्रकरण से कोई लेना देना नहीं है। भाई आखिर मैं तुम्हारा दोस्त हूं। जब तुम्हारे मन को दुखी देखता हूं तब मेरा मन भी दुख से भर जाता है। पर जैसा बतलाया न कि मुझे अदालत की कार्यवाही समझ ही नहीं आती और यही कारण है कि रोज मिलने के बाद भी तुमसे उस विषय में बात नहीं करता था।

मनीष. हां यार रमेश तुम्हे इस बारे में अफसोस करने की जरूरत नहीं है मैं तुम्हारी आदतों को बचपन से जानता हूं। तुम्हारे द्वारा एक भी बार इस प्रकरण के संबंध में चर्चा नहीं करना कभी भी मेरे मन में सोंच का कारण नहीं बना। सोच का कारण तब बनता है जब कोई हमसे छलकपट पूर्ण व्यवहार या जिसे हम दिखावा करना कह सकते हैं करते हैं और मेरा दोस्त वैसा नहीं है।

रमेश ने बात बदलते हुये कहा. हां मनीष तुम यह बतला रहे थे कि चाचाजी अपने प्रकरण के संबध में चाचीजी को कुछ बतला रहे थे जिसे सुनने में रम जाने के कारण तुम्हे देर हो गई थी। चाचाजी ने क्या बतलाया?

मनीष. यार रमेश प्रकरण को सही ढंग से समझने के लिये जज महोदय ने जैसे ही प्रकरण अदालत में सुनवाई के लिये स्वीकृत हुआ था वैसे ही दस बिन्दु अपनी ओर से निर्धारित कर दिये थे और उसी दस बिन्दु पर शासन और

शिक्षकों के समूह को अपना अपना जवाब लिखित में अपने समक्ष प्रस्तुत करने को कहा था। शासन की ओर से उनके वकील जायसवाल जी और शिक्षकों की ओर से उनके वकील कश्यपजी ने लिखित में जवाब प्रस्तुत कर दिया है। अब जज साहब उन्हीं जवाबों के आधार पर सुनवाई कर रहा है।

रमेश. यार मनीष मैं एक चीज नहीं समझ पा रहा हूं और वह यह है कि जब जज महोदय के सामने दोनों पक्षों के जवाब लिखित में है तो उस पर सुनवाई करके समय क्यों नष्ट किया जा रहा है? जवाब पढते और अपना निष्कर्ष निकालकर फैसला सुना देते।

मनीष. नहीं मनीष जहां तक मैं सोचता हू जज महोदय का इसके पीछे यह उददेश्य होगा कि वे बहस के दौरान लिखित जवाब के बीच में से उभरने वाले कुछ महत्वपूर्ण प्रश्नों और उसका जवाब भी जानना चाह रहा होगा। देखो मनीष कभी कभी जो विचार मन में होता है उसे न तो हम समग्र रूप से लिखित में प्रस्तुत कर पाते हैं और न बोल ही पाते हैं ।जज महोदय ने प्रकरण के सुनवाई करने का जो तरीका अपनाया है वह बहुत ही अच्छा है । ऐसे में प्रकरण की सारी बातें लिखित और बहस के रूप में जज महोदय के सामने आ जायेगा और उन्हें फैसला लेने में आसानी होगी।

रमेश हां मनीष इस ओर तो मेरा ध्यान ही नहीं गया। एक बात और मनीष जिस ढंग से तुम आज न्यायालयीन कार्यवाहियों के बारे में मुझसे चर्चा कर रहे हो उससे मुझे भी रूचि होने लगी है और इससे पहले की यह रूचि खतम हो जाये तुम मुझे चाचाजी और चाचीजी के बीच होने वाली चर्चा को बतला ही दो।

मनीष. हां रमेश जैसा मैं बतला रहा था जज महोदय के समक्ष दस बिन्दु पर चर्चा हो रही है और कल की सुनवाई बिन्दु क्र 04 अगर लर्निंग आउटकम्स की प्राप्ति हेतु शिक्षक पूर्ण रूप से जिम्मेदार नहीं है तो इसके लिये

और कौन कौन जिम्मेदार है और क्या अन्य लोगों के जिम्मेदार होने से शिक्षकों के विरूद्ध की गई कार्यवाही को गलत ठहराया जा सकता है पर सुनवाई हुई थी।

रमेश. यार मनीष यह बिन्दु तो वाकई दिमाग को चक्कर में डालने वाला है और मैं नहीं समझता कि इस बिन्दु का सही सही जवाब देना दोनों पक्षों के लिये सरल रहा होगा।

मनीष. हां रमेश पिताजी बतला रहा था कि शासन की ओर से नियुक्त वकील जायसवाल जी ने अपने द्वारा पूर्व में प्रस्तुत तर्को को ही फिर से दोहराया। उनका कहना था कि जज महोदय यह बात जरूर सच है कि बच्चों के लर्निंग आउटकम्स प्राप्ति में पालक परिवेश प्रकृति व समुदाय सभी का योगदान होता है लेकिन अगर शिक्षक चाहे तो वह इन सभी विपरीत परिस्थितियों को अनुकूल बनाते हुये बच्चों में लर्निंग आउटकम्स सुनिश्चित कर सकता है । इसके प्रमाण के रूप में उन्होंने ऐसे कई लोगों के उदाहरण प्रस्तुत किये जिनके समक्ष हर परिस्थितियां प्रतिकूल रही और केवल अपनी लगन व शिक्षकों के मार्गदर्शन से अपना स्थान बनाया।

रमेश. हां मनीष यह तो जायसवाल जी ने बहुत अच्छा तर्क प्रस्तुत किया और मैं भी उनकी बातों से पूर्ण रूप से सहमत हूं और मुझे नहीं लगता कि कश्यपजी के पास इस तर्क का कोई जवाब रहा होगा।

मनीष. नहीं रमेश पिताजी भी बतला रहे थे कि जब जायसवालजी ने जज महोदय के सामने अपने तर्को को पूर्व में प्रस्तुत तर्को से थोडा हटकर प्रस्तुत किया तो थोडी देर के लिये शिक्षकों के समूह में सन्नाटा छा गया था। लेकिन जैसे ही कश्यपजी ने अपना तर्क इस पर दिया वैसे ही सभी उपस्थित शिक्षकों के चेहरे पर पुनः खुशी उभर कर आ गई।

रमेश. पर मनीष कश्यपजी ने ऐसी क्या तर्क प्रस्तुत कर दी जिसे सुनकर शिक्षक समूह प्रसन्नत हो गये?

मनीष. कश्यपजी ने कहा. जज महोदय जाययवालजी ने स्वयं यह बात माना है कि बच्चों के लर्निग आउटकम्स प्राप्ति में शिक्षकों के अतिरिक्त अन्य कारको की भी भूमिका होती है। साथ ही उनके द्वारा यह कहना कि अगर शिक्षक चाहे तो वाक्य स्पष्ट नहीं है। जज महोदय क्या जायसवाल जी यह कहना चाहते हैं कि आज के शिक्षक यह नहीं चाहते कि उनके बच्चों में लर्निग आउटकम्स की प्राप्ति हो। अगर जायसवाल जी की मंशा यही है तो यह पूर्ण रूप से पूर्वाग्रह से ग्रसित मानसिकता का परिचायक है और उनकी मंशा यह नहीं है तो इसका सीधा मतलब यह है कि आज के भी शिक्षक अपनी ओर से यह चाहते ही हैं कि उनके बच्चों में लर्निग आउटकम्स की प्राप्ति हो और इसके लिये वे दिन रात योजनायें बनाकर कार्य भी कर रहे हैं और सब कुछ करने के बाद भी अगर बच्चों में लर्निग आउटकम्स नहीं आ पाती तो कहीं न कहीं अन्य कारकों की भूमिकाओं पर भी विचार होना चाहिये। तभी दूध का दूध और पानी का पानी हो पायेगा अन्यथा सबकी भूमिकाओं पर आनुपातिक रूप से विचार किये बिना शिक्षक समूह पर कार्यवाही कर देना किसी भी स्थिति में न्याय संगत नहीं माना जा सकता।

रमेश. यार मनीष सचमुच कश्यपजी ने तो कमाल का तर्क प्रस्तुत किया है। एक बार देखने में तो दोनों तर्को में कोई खास अंतर नजर नहीं आ रहा है। लेकिन प्रस्तुतीकरण के ढंग ने दोनों में एक विशाल अंतर खडा कर दिया है और मैं मानता हूं कि जज महोदय कश्यपजी के तर्को से काफी प्रभावित हुये होंगे।

मनीष. पिताजी बतला रहे थे कि जज महोदय के द्वारा ऐस कोई भी प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की जाती जिससे किसी पक्ष को ऐसा लगे कि वह उनके

पक्ष से प्रभावित हुये हों और सही भी है नहीं तो पक्षपातपूर्ण व्यवहार का आरोप लगता।

रमेश. यार मनीष तुम्हारी बातों को सुनकर तो मेरा भी मन अब कर रहा है कि किसी दिन अदालत में बैठकर न्यायालयीन कार्यवाही को ध्यान से देखें और सुने। अब अगली सुनवाई कब के लिये निर्धारित की गई है?

मनीष. रमेश यही ईच्छा मैंने भी पिताजी के सामने अभिव्यक्त किया था। उन्होंने बोला है कि नौवें या दसवें बिन्दु पर सुनवाई के दिन मेरे साथ चलना और अब जब तुम्हारीं भी यही ईच्छा है तब हम दोनों जरूर चलेंगे।

रमेश और मनीष बात करते करते अब तक उस स्थान पर पहुंच चुके थे जहां रूककर वे दोनों कई प्रकार के शारीरिक व्यायाम किया करते थे। निर्धारित समय तक व्यायाम करने के बाद दोनों पुन सामान्य बातचीत करते अपने अपने घरों की ओर लौटने लगे।

0000000000000000000000000000000000000000000

(26)

आज 25 मई है पांचवे बिन्दु पर सुनवाई की तारीख। जज महोदय जिस तरह से इस प्रकरण को जल्द से जल्द निपटाने की कोशिश कर रहा था उसकी उम्मीद किसी को नहीं थी। शिक्षक समुदाय प्रसन्न था कि चलो नये शिक्षा सत्र के आरंभ तक इस प्रकरण की सुनवाई पूरी हो जायेगी।

अदालत में सभी लोग अपने अपने स्थान पर बैठ चुके थे। थोडी ही देर बाद जज महोदय भी आ गये और प्रकरण की सुनवार्द आरंभ हुई। अपना पक्ष रखते हुये शासन के तरफ से नियुक्त वकील श्री जायसवालजी ने कहा. माननीय जज महोदय जैसा हम सभी जानते हैं कि आज की सुनवाई पूर्व निर्धारित पांचवे बिन्दु क्या बच्चों में लर्निंग आउटकम्स की प्राप्ति समुदाय की जागरूकता व उदासीनता से प्रभावित होता है् पर होनी है।

इससे पहले की जायसवाल जी इस बिन्दु पर अपना पक्ष विस्तार से रखता जज महोदय ने कहा. जायसवाल जी आप अपना पक्ष इस बिन्दु पर तो रखेंगे ही साथ ही साथ आपको यह भी बतलाना होगा कि शासन की ओर से समुदाय को जागरूक करने के लिये क्या क्या तरीके अपनाये गये हैं और अब तक इसमें कहां तक सफलता मिली है?

जज महोदय के बोलने के बाद जायसवालजी ने कहा. जज महोदय यह बात पूर्ण रूप से सत्य है कि किसी भी कार्य की सफलता के लिये उस कार्य से संबंधित सभी पक्षों की सहभागिता व सक्रियता आवश्यक होती है। मैं इस बात से भी इंकार नहीं करता कि बच्चों में लर्निंग आउटकम्स की प्राप्ति समुदाय की जागरूकता से प्रभावित होती है और इसी बात को ध्यान में रखकर शासन की

ओर से समुदाय को जागरूक करने के लिये कई कार्य किये जा रहे हैं जैसे माताओं का उन्मुखीकरण शिक्षक और पालकों की बैठक शिक्षा गुणवत्ता अभियान में जनप्रतिनिधियों को सम्मिलित करना इत्यादि। किन्तु जज महोदय शासन के इन सभी कार्यों को धरातल पर कार्यान्वित करने की जिम्मेदारी शिक्षकों पर ही है। मैं यह नहीं कहता कि सभी स्कूलों के बच्चों में निर्धारित लर्निंग आउटकम्स की प्राप्ति नहीं हुआ है। ऐसे स्कूल जहां के बच्चों में लर्निंग आउटकम्स प्राप्त नहीं हो सका है उससे यही बात प्रमाणित होता है कि वहां पदस्थ शिक्षकों के द्वारा सामुदायिक जागरूकता के लिये शासन की मंशानुरूप कार्यवाही ही नहीं की गई और ऐसा नहीं करना शिक्षकों की उदासीनता को दर्शाता है और इस कारण ऐसे स्कूलों के संस्था प्रमुखों पर की गई कार्यवाही को मैं न्याय संगत मानता हूं।

अब अपना पक्ष रखने की बारी कश्यपजी का था। कश्यपजी ने कहा. जब हम किसी ऐसे कार्यों की सफलता के बारे में बात करते हैं जिसके सफल होने में बहुत सी कारकों की भूमिका होती है ।वहां हम किसी एक कारक को बडा या छोटा नहीं कह सकते क्योंकि जैसे ही किसी भी कारक के संबंध में हमारे मन में यह भावना आयेगी कि यह बडा है या यह छोटा है वहां हमारा मन अपनी सुविधा के अनुसार किसी भी कारक को बडा या छोटा बना सकता है। माननीय जज महोदय जैसे इस प्रकरण में अब तक की हुई चर्चा से यह स्पष्ट होते जा रहा है कि बच्चों में लर्निंग आउटकम्स की प्राप्ति बहुत से कारकों से प्रभावित होती है और ऐसी स्थिति में अगर लर्निंग आउटकम्स की प्राप्ति हो जाये तो किसी एक कारक को उसका पूरा श्रेय दे देना और न हो तो किसी एक कारक को पूर्ण रूप से जिम्मेदार ठहरा देना न्याय संगत नहीं है।

जज महोदय हमारे इस प्रकरण में भी यही हो रहा है। बहुत से कारकों के योगदान होने के बावजूद केवल शिक्षकों को जिम्मेदार ठहराते हुये कार्यवाही की जा रही है।

कश्यपजी के पक्ष सुनने के बाद जज महोदय ने पूछा. तो आपका विचार यह है कि संबंधित सभी कारकों पर कार्यवाही होनी चाहिये?

कश्यपजी . जी नहीं जज महोदय। मेरा अभिप्राय ऐसा नहीं है। मैं केवल इतना कहना चाहता हूं कि इस बात का निर्धारण कौन और किस प्रकार करेगा कि लर्निग आउटकम्स की प्राप्ति में शिक्षकों की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है और शिक्षकों के द्वारा अपनी भूमिकाओं के निर्वहन में उदासीनता बरती गई है?

कश्यपजी को जवाब देते हुये जायसवालजी ने कहा. जज महोदय यह तो शिक्षकों की भर्ती एवं सेवा शर्तों में स्पष्ट रूप से उल्लेखित की गई है कि शिक्षकों के प्रमुख कार्य बच्चों को सीखाना और उनके सीखने के लिये उपयुक्त माहौल तैयार करना है। अगर किसी स्कूल के बच्चे नहीं सीख पा रहे हैं इसका सीधा.सीधा मतलब तो यही निकलता है कि संबंधित स्कूल के शिक्षक द्वारा बच्चों को सीखने के उपयुक्त परिवेश प्रदान नहीं किया गया और इसी से शिक्षकों की उदासीनता भी स्पष्ट हो जाती है।

कश्यपजी. जज महोदय मैं जायसवाल जी के बातों से सहमत नहीं हूं। जायसवाल जी यह कैसे कह सकता है कि शिक्षकों के द्वारा बच्चों को सीखने के लिये उपयुक्त परिवेश प्रदान नहीं किया गया? जज महोदय अगर शिक्षकों के द्वारा स्कूल में उपयुक्त परिवेश प्रदान नहीं किया जाता तो एक भी बच्चे नहीं सीख पाते और जब बच्चों का सीखना उपयुक्त परिवेश प्रदान किये जाने पर निर्भर करता है तब अगर कुछ बच्चे भी सीख पा रहे हैं तो इसका मतलब है कि वहां शिक्षकों के द्वारा सीखने के लिये उपयुक्त परिवेश प्रदान किया गया है और शिक्षक इस संबंध में उदासीन नही है।

जज महोदय मैं यह स्वीकार करते हुये कि सीखने.सिखाने का कार्य शिक्षकों की ही होती है और इसी कारण उनकी भर्ती की जाती है पुन यह कहना चाहता हूं कि इसमें भी कई कारणों जैसे बच्चों की नियमित उपस्थिति स्कूल में

ठहराव शाला में शिक्षकों की संख्या पाठयक्रमों का बच्चो के जीवन से जुडाव की भूमिका होती है और ऐसी परिस्थिति में केवल शिक्षकों को ही जिम्मेदार ठहरा देना उचित नहीं है।

जायसवालजी. जज महोदय शासन का ऐसा कोई भी कार्य नहीं है जिसे एक व्यक्ति द्वारा एक व्यक्ति के लिये किया जाता हो। शासन का हर कार्य तंत्र पद्धति पर ही होता है और उस कार्य की सफलता या असफलता उस पूरे तंत्र से संबंधित कारकों पर निर्भर करती है। इस बात को मैं पूर्ण रूप से स्वीकार करते हुये यह कहना चाहता हूं कि ठीक है एक तंत्र को सफल या असफल बनाने में सभी कारकों की भूमिका होती है किन्तु हर तंत्र का एक केन्द्र बिन्दु या केन्द्रीय कारक होता है जिसके चारो ओर अन्य कारक स्थित होते हैं। शिक्षा रूपी तंत्र में शिक्षक एक केन्द्रीय कारक के रूप में होता है और अन्य सभी कारक उसके चारों तरफ स्थित होते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि अगर शिक्षक सक्रिय जागरूक व क्षमतावान हो तब वह अन्य कारकों बच्चे पालक समुदाय पाठयक्रम शिक्षण विधि को अपने मनोनुकूल बना सकता है । यही कारण है कि लर्निंग आउटकम्स की प्राप्ति के लिये शिक्षकों को जिम्मेदार माना गया है और जज महोदय तंत्र व्यवस्था के सफल संचालन के लिये किसी न किसी पर जिम्मेदारी का निर्धारण तो करना ही होगा।

कश्यपजी. जज महोदय यहां मैं यह कहना चाहता हूं कि ठीक है शिक्षक को इस तंत्र में केन्द्र बिन्दु माना गया है और मैं यह भी मान लेता हूं कि लर्निंग आउटकम्स की प्राप्ति में शिक्षकों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है ।किन्तु यह मानना कठिन है कि तंत्र की सफल संचालन के लिये केवल शिक्षकों को जिम्मेदार ठहरा दिया जाये। जब सफलता सभी कारकों पर निर्भर है तब जिम्मेदारी भी सभी कारकों की होनी चाहिये।

जज महोदय अब तक के पांच बिन्दुओं पर सुनवाई करते करते इतना समझ गया था कि तंत्र व्यवस्था में किसी भी एक पक्ष को जिम्मेदार ठहरा देना सरल काम नहीं है। जज महोदय अब तक यह भी समझ चुके थे कि दोनों ही पक्ष तंत्र व्यवस्था से संबंधित सभी कारकों की जिम्मेदारी अपने अपने पक्ष के लाभ व सुविधा के अनुसार ही निश्चित करना चाहेंगे। अतः जज महोदय ने आज की सुनवाई यहीं पर समाप्त करते हुये कहा. इस प्रकरण में अब अगली सुनवाई 28 मई निश्चित की जाती है। दोनों पक्ष छठवीं बिन्दु लर्निंग आउटकम्स और शाला प्रबंध समिति की भूमिका पर अपनी पूर्ण तैयारी के साथ अदालत में उपिस्थ्त होंगे।

जज महोदय के उठने के बाद जब सभी लोग अदालत कक्ष से बाहर निकल रहे थे तब बरामदे में जायसवालजी और कश्यपजी दोनों एक दूसरे के आमने सामने आ गये। कश्यपजी को अपने सामने पाकर जायसवालजी ने कहा. कश्यपजी आपसे अकेले में कुछ बात करना है।

कश्यपजी. जायसवालजी आपको जो कुछ भी कहना हो यहीं पर कहिये। अगर अकेले में मुझे आपसे बात करते किसी भी शिक्षक ने देख लिया तो अनावश्यक रूप से उनके मन में शंका उत्पन्न होगी।

जायसवालजी. कश्यपजी मैं केवल यह कहना चाह रहा हूं कि प्रकरण को लंबा खींचने से अच्छा है कि आपस में समझौता कर लिया जाये।

कश्यपजी कैसा समझौता जायसवालजी?

जायसवालजी. अगर आप सहमत हो तो मैं शिक्षकों के विरूद्ध जो कार्यवाही की गई है उसे वापस लेने के लिये कह सकता हूं।

कश्यपजी. वह तो वापस लेना ही पडेगा जायसवालजी चाहे आप चाहो या ना चाहो। फिर अगर मैं समझौते के लिये तैयार हो भी जाता हूं तब यह

समस्या का तात्कालिक हल होगा और शिक्षक समुदाय केवल आज के लिये ही नहीं कल के लिये भी लड रहे हैं और इसका स्थायी समाधान केवल अदालत से ही मिल सकता है।

कश्यपजी के स्पष्ट बातों को सुनकर जायसवालजी अपने गाडी की ओर आगे बढ गये। कश्यपजी वहीं रूककर थोडी देर शुक्लाजी तिवारीजी और अन्य शिक्षकों से बात करने लगे।

(27)

29 मई की सुबह तिवारीजी के स्कूल के शाला प्रबंध समिति के अध्यक्ष श्री केदारनाथ कश्यपजी समिति के अन्य सदस्यों के साथ तिवारीजी के यहां बैठे हुये थे। तिवारीजी की बेटी अनिता सभी को चाय और नाश्ता दे रही थी। नास्ता करते करते कश्यपजी ने कहा. तिवारीजी आपको सबसे ज्यादा चिंता कल की सुनवाई की थी। चलो वह भी अच्छे ढंग से निपट गया।

तिवारी ने कहा. हां कश्यपजी यह सब आप लोगों के सहयोग से ही संभव हुआ है। नहीं तो मैं सोंचता था कि हमारे वकील के सारे तर्क धरे के धरे रह जाते अगर आप लोग एक बार भी कह देते की शालेय गतिविधियों में संस्था प्रमुख द्वारा हमसे कभी कोई चर्चा नही की जाती।

कश्यपजी. तिवारीजी मैं तो आपसे उसी समय कह दिया था कि आपको हमारे संबंध में किसी प्रकार की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। फिर हम लोगों ने आपका जो पक्ष लिया है वह अकारण ही नहीं लिया है।हमारे द्वारा आपके पक्ष में जो कुछ भी किया गया वह एक प्रकार से सत्य का साथ देना ही है।

तिवारीजी. हां कश्यपजी आपने देखा नहीं कल कैसे जायसवालजी हमें इसी बात पर घेरने का प्रयास कर रहे थे कि संस्था प्रमुखों द्वारा कैसे शिक्षा के अधिकार अधिनियम के अंतर्गत गठित शाला प्रबंध समिति की उपेक्षा की जाती है। उनके द्वारा जज महोदय के सामने यहां तक कहा गया कि बहुत से स्कूलों में शाला प्रबंध समिति की बैठक साल में मुश्किल से एकाथ बार ही आयोजित की जाती है।

कश्यपजी. हां तिवारीजी जायसवाल जी ने तो अपना पक्ष मजबूत करने के लिये यहां तक कहा कि जज महोदय अगर संस्था प्रमुखों द्वारा निर्देशित समयानुसार शाला प्रबंध समिति की बैठक आयोजित कर उन्हें अपने शाला की संपूर्ण गतिविधियों से अगत कराते और आवश्यक दस्तावेजों पर उनके प्रमाणित हस्ताक्षर कराते तो यह स्थिति ही निर्मित नहीं होती। ओ तो जांचकर्ता अधिकारियों ने जब देखा कि संस्था प्रमुखों द्वारा शिक्षा के अधिकार अधिनियम की बहुत सी बातों की उल्लंघन की गई तब सुधारात्मक उपाय के तहत वेतनवृद्धि रोकने की कार्यवाही की गई। अन्यथा यह कार्यवाही की ही नहीं जाती।

तिवारीजी. और कश्यपजी मुझे डर भी इसी बात को लेकर था कि कहीं जज महोदय ने यह कह दिया कि ऐसे संस्था प्रमुख जिनकी वेतनवृद्धि रोकी गई है वह अपने संस्था की संपूर्ण दस्तावेज जिसमें प्रबंध समिति के अध्यक्ष व सदस्यों का प्रमाणित हस्ताक्षर हों मेरे सामने रखे तब क्या होता? ओ तो भला हो हमारे वकील कश्यपजी का की उन्होंने अपने तर्कों से जज महोदय को इस बात के लिये सहमत कर लिया कि दस्तावेज देखने की अपेक्षा क्यों न उपस्थित समिति के सदस्यों से आमने.सामने ही पूछ लिया जाये और हुआ भी ऐसा ही। जज महोदय ने आप लोगों को अपने सामने बुलाकर पूछा और आप लोगों ने भी सारी बातें सही.सही बता दिये। इससे जज महोदय संतुष्ट हो गये।

कश्यपजी. तिवारीजी जिस समय जज महोदय हम लोगों से पूछ रहे थे और हम लोग जब संस्था प्रमुखों के पक्ष में बात कर रहे थे उस समय आपने जायसवाल जी का चेहरा देखा। अदालत में कल जो कुछ हुआ जायसवालजी को इसकी उम्मीद बिल्कुल नहीं थी। उनहोंने हस्ताक्षर प्रमाणीकरण वाला बात ही इसी कारण उठाया था कि उन्हें यह पूरा भरोसा था कि यहीं वह बिन्दु है जिस पर शिक्षक समुदाय को घेरा जा सकता है। इसी कारण आपको याद होगा जब कल चर्चा की शुरूआत हुई तब जायसवाल जी ने कितना जोर देते हुये कहा था

कि जज महोदय लर्निंग आउटकम्स की प्राप्ति व सत्यापन में शाला प्रबंध समिति की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शाला प्रबंध समिति के सदस्य न केवल प्रतिमाह शाला में आयोजित बैठक में भाग लेते हैं अपितु वे इस अवसर का उपयोग बच्चों के सीखने की गति के आंकलन व मूल्यांकन करने में भी करते है। अगर उन्हें लगता है कि कहीं कोई कमी है तो आवश्यक सुझाव भी देते हैं और शिक्षकों का दायित्व है कि वे सुझावों पर अमल करके बच्चों की लर्निंग आउटकम्स को पाने का प्रयास करें।

तिवारीजी. कश्यपजी मैंने तो अब सोच लिया है कि सत्र के आरंभ से ही प्रतिमाह विदयार्थी विकास सूचकांक को अदयतन स्थिति में रखूंगा। इसके अतिरिक्त कक्षावार विषयवार लर्निंग आउटकम्स का निर्धारण उसके अनुरूप शिक्षण गतिविधि व टी एल एम का चयन सी सी ई के निर्देशों का पालन व इकाई मूल्यांकन से संबंधित सभी दस्तावेजों में न केवल आप लोगों का हस्ताक्षर कराउंगा बल्कि प्रत्येक बच्चे के पालकों से व्यक्तिगत संपर्क करके उन्हें भी बच्चों की वास्तविक स्थिति से अवगत कराउंगा ताकि कल फिर ऐसे स्थिति निर्मित ही न हो। आप तो जानते हैं कि आने वाला समय हम सभी शिक्षकों के लिये कठिन होगा क्योंकि अब शिक्षकों का कार्य व्यवहार की दिशा व दशा दोनों नित्य बदलते जा रहा है। ऐसे में अगर एक शिक्षक केवल यह सोंचे की पढाने के बाद उनके कार्यों की इतिश्री हो गई है तब वह निश्चित रूप से कभी न कभी ऐसे ही कठिन परिस्थितियों में पड सकता है। इससे अच्छा है कि समय रहते सचेत हो जाया जाये।

कश्यपजी. तिवारीजी इस संबंध में तो मेरा कहना यह है कि क्यों न समिति के बैठकों की रूपरेखा में भी थोडा बहुत परिवर्तन करने का प्रयास किया जाये। मेरा कहने का तात्पर्य यह है कि अभी तक बहुत से संस्था प्रमुखों की यह शिकायत रहती है कि बैठक बुलाने पर संस्था प्रमुख आते नहीं है। तो क्यों न बैठक का स्थान परिवर्तन कर बैठक समिति के किन्हीं सदस्यों के घर या

गांव के चैक चैराहों पर रखने का प्रयास किया जाये? इससे शाला प्रबंध सिमति के सदस्य शालेय गतिविधियों के बारे में तो जानेंगे ही साथ में पालक समुदाय भी अपने बच्चों के बारे में जानेंगे ।इससे आगे उनमें स्कूल आकर अपने बच्चो की शैक्षिक प्रगति जानने की रूचि व प्रवृत्ति दोनों का विकास होगा।

तिवारीजी. हॉ कश्यपजी और जज महोदय का इस बिन्दु को सुनवाई के लिये रखने का उददेश्य भी यही है। जैसा अभी तक के विभिन्न चर्चाओं से यह बात स्पष्ट हुआ है कि लर्निंग आउटकम्स की प्राप्ति में बहुत से कारकों का योगदान होता है जिसमें जन समुदाय भी एक कारक है। यह जनसमुदाय विभिन्न रूपों जैसे पालक पंचायत प्रतिनिधि शाला प्रबंध समिति माताओं का समूह व पी एल सी के रूप में हमारे सामने होते हैं। जब तक सभी समूह लर्निंग आउटकम्स की बारिकियों को नहीं समझेंगे तब तक वे लोग इसकी महत्ता को भी समझ नहीं पायेंगे। अतः यह आवश्यक है कि इस संबंध में व्यापक प्रचार प्रसार हो।

कश्यपजी. हॉ तिवारीजी मेरा भी ऐसा ही सोचना है और इस प्रकरण के बाद मुझे ऐसा नहीं लगता की एक भी संस्था प्रमुख द्वारा इसमें किसी भी प्रकार की कोताही बरती जायेगी। ओ कहावत है न कि दूध का जला छाछ भी फूंक कर पीता है वही बात अब शिक्षक समुदाय पर लागू होगी। इस प्रकरण के बाद सभी शिक्षकों के मन में यह बात निरंतर गूंजती रहेगी कि अगर उनके द्वारा अपने निर्धारित दायित्वों के निर्वहन में तनिक भी उदासीनता दिखाई गई तो उसका खामियाजा उन्हें तत्काल भोगना पड सकता है । मैं नहीं सोंचता कि ऐसा एक भी संस्था प्रमुख होगा जो जान बूझकर ऐसी परिस्थिति बनाने की ओर आगे बढेगा क्योंकि मैंने स्वयं यह अनुभव किया है कि शिक्षक समुदाय में इस घटना का व्यापक प्रभाव पडा है। अब वे पुनः शारीरिक और मानसिक यातना के दौर में जाना नहीं चाहेंगे।

तिवारीजी. हां कश्यपजी इस प्रकरण से भले मानसिक कष्ट मिला हो लेकिन इसका एक सकारात्मक प्रभाव यह भी हुआ है कि अब शिक्षक समुदाय जागरूक व सक्रिय हो गये हैं।

कश्यपजी. अच्छा तिवारी जी कल बहस के अंतिम चरण में मैं अदालत कक्ष से बाहर निकल गया था ।इस कारण अब कब सुनवाई होगी इस बारे में नहीं सुन पाया था। पहले तो सोंचा था कि अन्य लोगों से पूछ लूंगा। पर बात ही ऐसा निकल जाता था कि पूछ ही नहीं पाया।

तिवारीजी. अब अगली सुनवाई 31 मई हो है कश्यपजी। इसमें सातवीं बिन्दु शालाओं में सतत अवलोकन् निरीक्षण की क्या व्यवस्था है् और क्या इससे लर्निग आउटकम्स की प्राप्ति प्रभावित होती है् इस पर सुनवाई होनी है?

कश्यपजी. इस बिन्दु पर तो हमारी कोई भूमिका मुझे नजर नहीं आती।

तिवारीजी. नहीं कश्यपजी। इस बिन्दु पर भी समिति की भूमिका है। पर इसके लिये आप लोगों को अदालत में रहना जरूरी नहीं है। अपने वकील को इस बिन्दु पर जब हम लोग जानकारी दे रहे थे उस समय उन्हें बतलाया गया था कि शाला अवलोकन निरीक्षण का कार्य समिति के द्वारा भी दिया जाता है।

कश्यपजी. ठीक है तिवारीजी। अब हम लोग चलते हैं। आगे जो कुछ भी होगा फोन से अवगत कराते रहेंगे।

तिवारीजी सभी को ससम्मान बिदा करने के बाद अपने बैठक कक्ष में आकर बैठ जाता है। जैसे जैसे प्रकरण की सुनवाई आगे बढते जा रहा है वैसे वैसे तिवारजी राहत महसूस करते जा रहा है। तिवारीजी को लगता है कि एक बहुत बडी लडाई जीतने के वह करीब आ गया है।

(28)

सुबह की सैर से आते समय मनीष दौडते हुये घर में प्रवेश किया। अनने हाथ में रखे अखबार को लहराते हुये मनीष बोला- अम्मा, अम्मा आज के अखबार में दिया है।

मनीष का यह व्यवहार जानकी को थोडा अजीब लगा, क्योंकि इसके पहले किसी भी बात को लेकर मनीष ने ऐसा उतावलापन का व्यवहार प्रदर्शित नहीं किया था। इसके पहले क्या लगभग प्रतिदिन वह ही अखबार लेकर घर आता था और घर में शुक्लाजी के कमरे के टेबल उपर रख देता था। पर आज ऐसा अखबार में क्या खबर आ गया कि मनीष न केवल दौडते हुये आया बल्कि हांफते हांफते हाथ में रखे अखबार को दिखाते हुये कहने लगा कि आज के अखबार में आया है।

जानकी मनीष से बोली- अरे बेटा आखिर बात क्या है? क्या चीज आज के अखबार में आया है जिसको बतलाने के लिये इतना अधीर हुये जा रहे हो। थोडा सांस भी ले लो कि ऐसे ही हांफते हांफते अखबार पढकर बतलाओगे।

अपनी अम्मा की बात सुनकर थोडा संयमित होते हुये मनीष बोला- अम्मा, अम्मा कल जो अदालत में सुनवाई हुआ था उसके बारे में आज के अखबार में बहुत लंबा चौडा लेख दिया हुआ है।

अच्छा अब उस प्रकरण के सुनवाई की बातें अखबार में भी आने लगी। मुझे भी तो दिखाओ जितना लंबा चौडा दिया हुआ है जानकी बोली।

अपनी अम्मा को अखबार का वह पृष्ठ जिस पर इस प्रकरण के संबंध में लिखा हुआ था जो खोलकर दिखाते हुये मनीष ने कहा- यह देखों अम्मा “लर्निग

आउटकम्स और शाला अवलोकन/निरीक्षण" पर अदालत में हुई व्यापक सुनवाई/ इस शीर्षक से खबर दिया हुआ है।

जानकी मनीष के हाथ से अखबार लेकर पूरी खबर उपर से नीचे तक देखने के बाद अखबार मनीष को देते हुये बोली- अच्छा बेटा अब जरा पढकर भी सुना दें क्या क्या लिखा है। और हां जरा आराम से पढना। नहीं तो कुछ भी पढने के लिये बोलो तो एक्सप्रेस बन जाते हो। कहीं रूकते ही नहीं।

मनीष आंगन में ही अपने अम्मा के बगल में बैठकर पढना आरंभ किया- कल दिनांक 31 मई को सातवीं बिन्दु "शालाओं में सतत अवलोकन/निरीक्षण की क्या व्यवस्था है? और क्या इससे लर्निंग आउटकम्स की प्राप्ति प्रभावित होती है पर सुनवाई हुई। जज महोदय के कहने पर अपना पक्ष रखते हुये शासन के तरु से नियुक्त वकील श्री जायसवालजी ने कहा कि न केवल लर्निंग आउटकम्स की प्राप्ति सुनिश्चित करने हेतु अपितु विभिन्न शालेय गतिविधियों के सफल कार्यान्वयन हेतु शासन द्वारा शाला अवलोकन/निरीक्षण की एक सशक्त प्रणाली विकसित की गई है। इसके अंतर्गत शालाओं का समूह बनाकर संकुल केन्द्र की स्थापना की गई है, जहां दो कर्मचारी/अधिकारी संकुल समन्वयन/संकुल प्रभारी इसी उददेश्य से रखे गये हैं। इनके द्वारा प्रत्येक माह प्रत्येक शाला का अवलोकन / निरीक्षण कर कमियों को सुधारने का प्रयास किया जाता है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक शाला में गठित शाला प्रबंध समिति के सदस्य भी शाला अवलोकन/निरीक्षण का कार्य करते हैं। विभाग के उच्च अधिकारियों द्वारा भी यह कार्य सुनिश्चित किया जाता है।

जायसवाल जी ने अपना पक्ष रखते हुये आगे कहा- जज महोदय ने तक लर्निंग आउटकम्स की प्रापित और शाला अवलोकन/निरीक्षण के बीच में सांबध का है तो मैं यह मानता हूं कि इन दोनों के बीच सीधा सीधा संबंध है क्योंकि

अवलोकन/निरीक्षणकर्ता अपने अवलोकन/निरीक्षण के दौरान बच्चों की अकादमिक स्थिति पर प्रमुखता से ध्यान केन्द्रित किया जाता है।

कुछ पल रूकते हुये मनीष् ने कहा- अम्मा ठीक तो पढ रहा हूं न कि थोडा और आराम से पढूं।

जानकी बोली- हां हां बेटा ठीक ही पढ रहे हो और अगर कहीं पर समझ नहीं भी आयेगी तो तुम्हारे पिताजी से समझ लूंगी। ठीक है अम्मा अब आगे सुनो कहते हुये मनीष ने पढना शुरू किया- जायसवालजी के द्वारा अपना पक्ष रखेन के बाद शिक्षकों के वकील श्री कश्यपजी ने अपना पक्ष रखते हुये कहा कि-जज महोदय यह सही है कि अवलोकन/निरीक्षण की एक सशक्त प्रणाली बनाई गई है लेकिन यह केवल कागजों में ही है, व्यवहार में नहीं। मैं यह भी मानता हूं कि संकुलों में पदस्थ संकुल समन्वयक द्वारा प्रत्येक माह प्रत्येक शाला का अवलोकन किया जाता है किन्तु वह अवलोकन अन्य दृष्टि से किया जाता है, अकादमिक दृष्टि से नहीं। वहीं स्थिति शाला प्रबंध समिति के सदस्यों और विभाग के अन्य उच्च अधिकारियों की अवलोकन/निरीक्षण की है। अगर नियत कर्मचारियों/अधिकारियों द्वारा समय पर अकादमिक दृष्टि से अवलोकन/ निरीक्षण किया जाता, तब यह स्थिति निर्मित ही नहीं होती क्योंकि इससे शिक्षकों को इस बात की जानकारी सतत रूप से होती रहती की उनके शाला के कितने बच्चों में लर्निंग आउटकम्स का प्रदर्शन अपेक्षानुरूप नहीं हो रहा है और इसके लिये उनहें अब और क्या क्या करना होगा।

इस पर अपनी असहमति जताते हुये जज महोदय ने कश्यपजी से पूछा- तो क्या आप यह कहना चाह रहे हैं कि किसी दूसरे के द्वारा बतलाये जाने से ही शिक्षक यह जानेंगे कि उनके स्कूल के कितने बच्चों में अपेक्षित लर्निंग आउटकम्स का प्रदर्शन नहीं हो रहा है? और अगर ऐसी स्थिति है तब इसे किसी भी दृष्टि से सही नहीं कहा जा सकता।

जज महोदय को जवाब देते हुये कश्यपजी ने कहा- नहीं जज महोदय, मेरा कहने का तात्पर्य यह नहीं है कि शिक्षक समुदाय अवलोकन/निरीक्षणकर्ता के बतलाने से ही जानते हैं। मैं यह कहना चाह रहा हूं कि अगर किसी कार्य की समीक्षा एक से अधिक लोगों के द्वारा किया जाये तब उस कार्य की कमियों और अच्छाईयों पर ज्यादा प्रकाश पडता है जो शिक्षकों के लिये एक प्रकार से पुनर्बलन का कार्य कर सकता है। अकेले कार्य करने से कभी कभी महत्वपूर्ण बिन्दुकर्ता के ध्यान में आने से छूट जाता है जो आगे उनके लिये हानिकारक होता है जैसे इस प्रकरण में हुआ है।

कश्यपजी की बातों को गंभीरतापूर्वक सुनने के बाद जज महोदय ने जायसवालजी से पूछा- क्या आप इस बात से पूर्ण रूप से आश्वस्त है जो भी अवलोकन/निरीक्षणकर्ता शालाओं में जाते हैं उनके द्वारा अकादमिक बिन्दुओं पर बच्चों व शिक्षकों से चर्चा की जाती है?

जज महोदय को जवाब देते हुये जायसवालजी ने कहा - नहीं जज महोदय ऐसा करने का सभी संबंधित कर्मचारियों/अधिकारियों को उच्च कार्यालय से निर्देश/आदेश है और इसी संदर्भ में उनसे यह आशा की जाती है कि वे सभी ऐसा ही करते होंगे।

अब तक शुक्लाजी भी उठकर कमरे से बाहर निकलकर जानकी और मनीष के पास आकर बैठ गये थे और मनीष जिस ढंग से अखबार पढ रहा था, उसे सुन भी रहा था। जैसे ही मनीष ने जायसवाल जी के कहे अंतिम शब्द करते होंगे को पढा शुक्लाजी ने कहा- मनीष बेटा अब अखबार को वहीं पर रख दे क्योंकि इसके आगे क्या हुआ उसे मैं बतलाउंगा।

शुक्लाजी के द्वारा बीच में टोकते हुये मनीष को चुप कराना जानकी को अच्छा नहीं लगा। वह बोली भी कि क्या मनीष के पिताजी हम दोनों कितने ध्यान से पढ और सुन रहे थे। बीच में आकर सब मजे में पानी फेर दिये। थोडी

देर और सोये रहते तो क्या होता? कितनों बार बोल चुकी हूं कि मेरे उठाये बिना मत उठा करो। पर मानते ही नहीं। अरे गर्मी की छुटटी है कुछ तो अपने मन से करने दिया करें। पर नहीं। न खुद आराम करेगा और न दूसरों को आराम करने देंगे। सही है मनीष के पिताजी आप न अपनी आदत से बाज नहीं आयेंगे।

मनीष ने अपनी अम्मा को चुप कराते हुये कहा- अम्मा, पिताजी को बतलाने दो न। वह स्वयं अदालत कक्ष में सुनवाई के समय था। उनके स्वयं के आंखो देखा बतलाने और अखबार की खबर के आधार पर जानने में जमीन आसमान का फर्क होगा।

जानकी- ठीक है मनीष के पिताजी बतलाईये फिर आगे क्या हुआ?

शुक्लाजी- हां तो मैं यह बतलाने वाला था कि जैसे ही जायसवालजी ने कहा कि सभी कर्मचारी/अधिकारी ऐसा ही करते होंगे तो जज महोदय ने उन्हें टोकते हुये कहा- "करते होंगे कि करते हैं"। जायसवाल जी मुझे इसका स्पष्ट जवाब चाहिये। जज महोदय के ऐसा पूछने पर जायसवालजी के पास कोई स्पष्ट जवाब नहीं था। वह केवल इतना भर कह सका कि जज महोदय शाला की संख्या के अनुपात में अवलोकन/निरीक्षणकर्ता अधिकारियों कर्मचारियों और अधिकारियों की संख्या कम है। उन्हें विभाग के अन्य आवश्यक कार्य भी करने होते हैं। ऐसी परिस्थिति में अवलोकन/निरीक्षणकर्ता द्वारा शाला में उन्हें जैसा और जितना समय उपलब्ध होता है उसके अनुसार अकादमिक पक्षों पर ध्यान दिया जाता है।

जायसवाल जी के स्पष्टीकरण के बाद जज महोदय ने पुन: पूछा कि जायसवालजी आप इस बात पर कहां तक आश्वस्त हैं कि शाला में पदस्थ शिक्षक केवल पढाने का कार्य करते हैं अन्य कार्य नहीं? इस पर जायसवालजी

ने कुछ नहीं बोलने पर जज महोदय ने अगली सुनवाई की तारीख दो जून निश्चित करते हुये प्रकरण की सुनवाई समाप्त की।

जैसे ही शुक्लाजी ने बतलाना बंद किया वैसे ही मनीष ने पूछा पर पिताजी जायसवालजी का कुद नहीं बोलना, जज महोदय को अच्छा नहीं लगा होगा? उन्हें कुछ तो बोलना था।

शुक्लाजी- हां बेटा बोलना तो था। पर बोलता तभी न जब कुछ जवाब होता। सब जानते हैं कि शिक्षक केवल पढाता ही नहीं है अन्य कई कार्य भी करते हैं और ऐसी पिरिस्थिति में लर्निंग आउटकम्स की प्राप्ति प्रभावित तो होगी ही। आगे आठवीं बिन्दु पर सुनवाई भी इसी पर है। "लर्निंग आउटकम्स की प्राप्ति और शिक्षकों के गैर अकादमिक कार्य।"

शुक्लाजी अपना अंतिम वाक्य बोलते- बोलते खडा हो गया था और जानकी जो अब भी बैठी हुई थी, को देखकर बोला- मनीष की अम्मा अब चाय पानी पिलाओगी भी की सब को दोबारा सुनोगी।

जानकी बिना कुछ बोले चाय बनाने के लिये रसोई की ओर चली जाती है।

(29)

गांव के पान ठेला चैक में कुछ लोग बैठे हुये थे। उनमें जुगलकिशोर और मनोहर भी था। उसी समय मनोहर के घर के बगल में रहने वाला दिलहरण रजक आया और मनोहर के पास बैठते हुये कहा. मनोहर भाई कल तुम कहां चले गये थे् कई बार बच्चों को घर भेजकर पता करवाया पर तुम घर पर थे ही नहीं? बहुत जरूरी काम था। आज सुबह फिर बच्चे को भेजा तो पता चला कि तुम बस्ती के तरफ निकले हो। खोजते.खोजते आ रहा था तो पता चला की तुम यहां बैठे हो। थोडा बहुत घर पर भी रह लिया करो।

दिलहरण को मनोहर जवाब देता इससे पहले ही जुगलकिशोर ने कहा क्यों मनोहर को तुमसे पूछकर सब काम करना पडेगा क्या? वह कब घर में रहता है कब नहीं रहता है कब कहां जाता है कब कहां आता है इसकी जानकारी मांगने वाले तुम कौन होते हो?

अपने सामान्य बात पर इस तरह के व्यंग्यात्मक जवाब से आहत दिलहरण ने कहा. जुगल मैं तुमसे पूछ रहा हूं क्या? अरे तुमसे कुछ पूछना तो दूर मैं तो तुम्हारे नजदीक बैठना भी नहीं चाहता। जब देखो तब किसी को भी कुछ भी बोल देता है। यह तो गांव है जुगल इस कारण तुम्हारा यह व्यवहार चल जाता है नहीं तो दूसरे जगह जाकर ऐसे ही मुंह चलाते न तब पता चलता।

दोनों के बीच बात बढने की संभावना को ताडते हुये मनोहर ने कहा. छोडो न दिलहरण भाई। जुगल तो ऐसे ही बोलते रहता है। तुम बतलाओ की किस काम के कारण मुझे खोज रहे थे?

दिलहरण भी जुगल की बातों से ध्यान हटाते हुये कहा. यार मनोहर महरौली गांव से तुम्हारे भाई सोहन के लिये रिश्ते का खबर आया है। बस उसी सिलसिले में चर्चा करना था।

मनोहर ने कहा. दिलहरण भाई अब तो पानी बरसात का दिन आने वाला है। इस कारण उन लोगों से कह देना की दीपावली के बाद बात आगे बढायेंगे। अभी कुछ नही हो सकता।

मनोहर को समझाते हुये दिलहरण ने कहा. मनोहर भाई मैं तो कहता हूं अच्छे ढंग से सोंच लो। अच्छा घर परिवार है। पता नहीं उतने दिन तक इंतजार करेंगे भी की नहीं। फिर अभी भी समय है। चाहोगे तो तैयारी हो जायेगी।

दिलहरण को पुनः मना करते हुये मनोहर ने कहा. नहीं भाई इतने कम समय में मैं अकेला आदमी भला कैसे तैयारी कर पाउंगा? रोज रोज ईधर उधर आना जाना भी तो करना पडेगा न।

दिलहरण ने कहा. अरे वेसे भी तुम घर में रहते कहां हो? यह केवल कल की बात नहीं है जब भी तुमको पता करो बस एक ही जवाब मिलता है कि वह घर में नहीं है। कभी बस्ती तरफ निकले रहते हो तो कभी शहर की ओर। कल भी शहर ही गये थे?

मनोहर. हां दिलहरण भाई कल शहर ही गया था।

दिलहरण. क्यों?

मनोहर. अरे तुम भी तो सुने होगे न कि हमारे गांव के शिक्षक तिवारीजी की वेतन वृद्धि रोक दी गई है जिसे शिक्षक समुदाय द्वारा अदालत में चुनौती दी गई है। कल उसी प्रकरण में सुनवाई था। मेरे भी मन में ईच्छा उत्पन्न हुआ कि क्यों न अदालत में बैठकर सीधा बहस सुना जाये।

दिलहरण. तुम भी न मनोहर भाई बडा अजीब इंसान हो। मैं मानता हूं कि कुछ मामले लोगों के लिये जानने लायक होता है और जानना भी चाहिये। लेकिन तब जब अपने पास समय हो। यह नहीं कि अपना जरूरी समय नष्ट कर ऐसी बातों पर ध्यान दिया जाये। अभी भाई की शादी के लिये बोल रहे थे कि समय नहीं है और कल वहां अदालत में बैठकर दिन भर यूं ही नष्ट कर आये।

बीच में कूदते हुये जुगल ने कहा. दिलहरण तुम मनोहर के बडे हितैषी बन रहे हो।

जुगल की यह बात दिलहरण के लिये बर्दास्त के बाहर हो रहा था। मन में सोंचा की अगर कुछ जवाब देता हूं तो लडाई झगडा ही होगा। इससे अच्छा है यहां से चला जाये। दिलहरण वहां से बिना कुछ बोले चुपचाप अपने घर की ओर चले गये।

दिलहरण के जाने के बाद जुगल ने कहा. और मनोहर तुम वैसे तो मुझे दिन भर खोजते रहते हों और कल शहर जाने की बारी आई तो पूछा भी नहीं। अकेले निकल गये?

मनोहर. पहले मन में ख्याल आया था जुगल की तुमको भी साथ ले चलूं। पर बाद में सोंचा की दोनो को एक साथ देखकर शुक्लाजी मन में सोचेंगे की देखो ये दोनों तमाशा देखने यहां तक आ गये। पिछले बार तुम्हे याद तो होगी न कितना सुनाया था हम दोनों को।

जुगल. तुम्हें शुक्लाजी की चिंता थी मेरी नहीं।

मनोहर अरे यार जुगल नाराज क्यों होते हो? जिसे अदालत में बैठकर सुनते उसे मेरे मुंह से सुन लो।

जुगल. ठीक है मनोहर अब कोई दूसरा विकल्प तो है नहीं। सुनना तो तुम्हीं से पडेगा।

मनोहर. यार जुगल अब इस प्रकरण का समापन नजदीक है। कल आठवीं बिन्दु लर्निंग आउटकम्स की प्राप्ति और शिक्षकों के गैर अकदामिक कार्यों पर बहस हुई थी। अब केवल दो बिन्दु शेष है जिस पर सुनवाई होनी है। कल अदालत में कुछ लोग बोल रहे थे कि नौवें और दसवे बिन्दु पर एक ही दिन चर्चा होने की संभावना है। इस तरह 16 जून को स्कूल खुलने के पहले प्रकरण का समापन हो जायेगा।

जुगल. मैं यह नहीं समझ पा रहा हूं कि आखिर जज महोदय को इस प्रकरण को इतना जल्दी जल्दी निपटाने की क्या जरूरत है? जैसे अन्य सब मामले पांच दस साल चलता है वैसे ही इसे भी चलने देना था। तब तो शिक्षकों को कुछ सबक मिलती और बच्चों को ठीक से पढाते ।

मनोहर. इसी बात का तो शिक्षकों के वकील कश्यपजी ने विरोध किया था। उन्होंने कहा कि जज महोदय शिक्षकों से इतना ज्यादा गैर अकादमिक कार्य कराये जाते हैं कि उन्हें शिक्षा के अधिकार अधिनियम में उल्लिखित दिन और घंटे अध्यापन कार्य के लिये मिल नहीं पाता और ऐसी स्थिति में अगर बच्चों में लर्निंग आउटकम्स की प्राप्ति नहीं हो पाती तो शिक्षक कैसे जिम्मेदार हुआ।

जुगल. मनोहर कश्यपजी के तर्को में कोई दम नहीं है क्योंकि हम सभी अब यह जान गये हैं कि शिक्षा के अधिकार अधिनियम के लागू होने के बाद शिक्षकों से कोई भी गैर अकादमिक कार्य नहीं कराये जाते। क्या जज महोदय ने इसपर कश्यपजी को कुछ नहीं कहा?

मनोहर. जुगल जज महोदय ने तो कुछ नहीं कहा। पर हां शासन के तरफ से नियुक्त वकील जायसवालजी ने इस पर आपत्ति दर्ज कराते हुयेकहा कि

जज महोदय जब से आरटीई लागू हुआ है तब से शिक्षकों को कुछ राष्टीय महत्तव के कार्यों के अतिरिक्त अन्य कार्यों में जिसे गैर अकादमिक कार्य कहा जा सकता हैे संलग्न नहीं किया जाता। इस कारण कश्यपजी का यह कहना सही नहीं है कि शिक्षकों को निर्धारित दिन और घंटे अध्यापन कार्य के लिये नहीं मिल पाते।

जुगल. मनोहर जायसवालजी ने बिल्कुल सही जवाब दिया और मैं समझता हूं कि जज महोदय भी इससे सहमत हुये होंगे।

मनोहर. हां जुगल जायसवालजी के जवाब सुनने के बाद जज महोदय ने कश्यपजी से पूछा क्यों कश्यपजी आप जायसवालजी के बातों से सहमत है? इस पर कश्यप जी ने कहा कि जज महोदय यह केवल सिद्धांत की बात है कि राष्ट्रीय महत्व के कार्यों के अलावा अन्य कार्यों में शिक्षकों को नहीं लगाया जायेगा। पर वास्तविक रूप में ऐसा होता कहां है। फिर आये दिन कुछ न कुछ चुनाव की प्रकिया जारी रहती ही है। कभी पंचायत की कभी नगर पंचायत की कभी विधानसभा की तो कभी लोकसभा निर्वाचन की। फिर आजकल आये दिन स्कूलों में विभिन्न प्रकार की जागरूकता से संबंधित रैलियों संगोष्ठियों और कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है और इन सभी कार्यों से अकादमिक दिन और घंटे प्रभावित होते ही हैं।

जुगल. पर मनोहर निर्वाचन कार्य को छोड दें तो कश्यपजी का यह कहना सही नहीं है कि शालाओं में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों से अकादमिक दिन और घंटे प्रभावित होते हैं। मैं मानता हूं कि इन कार्यक्रमों का सीधा संबंध पढने लिखने से नहीं होता पर इन कार्यक्रमों से बच्चों में जागरूकता का विकास होता है जो कहीं न कहीं उनके अकादमिक उपलब्धि को सकारात्मक दिशा में प्रभावित करता है।

मनोहर. तुम सही कह रहे हो जुगल और यही बात कश्यपजी ने थोडा परिवर्तन के साथ जज महोदय से कहा कि जज महोदय जब बच्चों में लर्निंग आउटकम्स की प्राप्ति की जांच की जाती है तब जांचकर्ता द्वारा यह देखा जाता है कि बच्चे में विषयवार लर्निंग आउटकम्स का प्रदर्शन कहां तक हो रहा है। उनके द्वारा यह नहीं देखा जाता कि बच्चे विभिन्न क्षेत्रों में कितना जागरूक हुये हैं।

जुगल. तो मनोहर तुम्हे क्या लगता है अंत में क्या होगा?

मनोहर. यार अब तक की सभी बिन्दुओं पर जो सुनवाई हुई है और जैसी जानकारी मुझे मिली है उससे तो यही लगता है कि शिक्षकों का पलडा भारी है और इसी कारण जज महोदय इसे जल्दी से जल्दी निराकृत भी करना चाह रहा है।

जुगल. अच्छा अब अगली सुनवाई की तारीख कब का है?

मनोहर. अगली सुनवाई की तारीख दस जून निश्चित किया गया है।

जुगल. फिर उस दिन भी अकेले मत निकल जाना।

मनोहर. नहीं जुगल इस बार दोनों चलेंगे।

चैक पर बैठे सभी लोग जुगल और मनोहर की बातों को बडे ध्यान से सुन रहे थे। जैसे ही मनोहर ने जुगल से कहा कि इस बार दोनों चलेंगे वैसे ही लोग एक एक कर अपने घरों की ओर जाने लगे। जुगल और मनोहर वहीं बैठकर कुछ देर और बात करते रहे।

0000000000000000000000000000000000000000000000

(30)

दूसरे दिन की अपेक्षा मनीष आज जल्दी प्रातरूकालीन सैर करके घर वापस आ गया था। जिस समय वह घर वापस आया उस समय उसकी अम्मा चाय बना रही थी। मनीष को जल्दी घर आया देखकर जानकी बोली. अरे मनीष आज जल्दी कैसे लौट आये। क्यों रमेश नहीं गया था क्या साथ में?

आंगन में रखे कुर्सी पर बैठते हुये मनीष ने कहा नहीं अम्मा रमेश भी गया था पर आज हम दोनो को शहर जाना है इस कारण जल्दी आ गये। शहर जाने की तैयारी करनी है?

क्यों शहर क्यों जाना है? क्या कुछ आवेदन वगैरह करना है? जानकी मनीष को चाय देते हुये बोली।

नहीं अम्मा तुम भी न हर बात को जल्दी भूल जाती हो। अरे जानती नहीं आज दस जून है और आज तिवारी जी व अन्य शिक्षकों से संबंधित प्रकरण की सुनवाई होनी है। आज से कुछ दिन पहले मैं और रमेश ने निश्चित किया था कि आखिरी सुनवाई के दिन हम भी चलेंगे। मनीष ने चाय पीते पीते कहा।

जानकी बोली. अरे बच्चों का वहां क्या काम है? अभी से दुनियादारी में मत पडो बेटा। पढने लिखने में ध्यान लगाओ।

मनीष. नहीं अम्मा आज तो हम लोग जायेंगे ही। मैंने तो सुना है कि हमारे गांव से बहुत से लोग आज जाने वाले हैं।

जानकी. हां और कोई जाये न जाये ओ मनोहर और जुगल तो जरूर जायेंगे। अगर ओ दोनो नहीं गये तो फिर गांव भर ढिढोंरा कौन पीटेगा?

दोनों मां बेटे की बातचीत सुनकर शुक्लाजी भी अपने कमरे से उठकर आंगन में आकर बैठ गये। चाय का कप हाथ में लेते हुये कहा. अरे अब मनीष और रमेश बच्चे कहां रह गये हैं जानकी। दोनों कालेज में पढ रहे हैं। यही वह समय है जब कुछ कुछ दुनियादारी भी सीखनी चाहिये।

जानकी. तुम दोनो बाप बेटे मेरी बात कब सुने हो जो आज सुन लोगे। जिसको जहां जाना है वहां जाओ। मुझे केवल यह बतला दो कि खाने में क्या बनाना है?

खाने की बातें बतलाकर शुक्लाजी और मनीष दोनो अपने नित्य कार्यो में लग गये। ईधर जानकी भी रसोईघर में खाना बनाने के काम में जुट गई। निश्चित समय पर खाना खाने के बाद मनीष रमेश के साथ व शुक्लाजी तिवारीजी के साथ शहर की ओर रवाना हुये।

आज अदालत कक्ष खचाखच भरा हुआ था। जिसकी उम्मीद थी और जिसकी उम्मीद नहीं थी ऐसे लोग भी आज की कार्यवाही देखने आये हुये थे। यहा तक की तिवारीजी के मामाजी भी अपने कुछ साथियों के साथ वहां आये हुये थे। अदालत कक्ष में जज महोदय के प्रवेश करते ही सभी लोगों ने खडे होकर अभिवादन किया और जज महोदय के अपने स्थान पर बैठते ही सभी लोग अपने अपने स्थान पर बैठ गये। जज महोदय से अनुमति मिलने के बाद आज के लिये निर्धारित बिंदु पर चर्चा आरंभ करते हुये शासन के तरफ से नियुक्त वकील श्री जायसवाल जी ने कहा. जज महोदय आज के लिये दो बिन्दु. लर्निंग आउटकम्स की प्राप्ति सामूहिक जिम्मेदारी है अथवा व्यक्तिगततथा सभी बच्चों में लर्निग आउटकम्स की प्राप्ति कैसे सुनिश्चित की जा सकती है् पर होनी है? इस संबंध में मेरा कहना यह है कि यदपि कक्षावार विषयों का अध्यापन अलग.अलग शिक्षकों के द्वारा किया जाता है और अलग अलग शिक्षक ही उन विषयों में लर्निंग आउटकम्स की प्राप्ति के लिये

जिम्मेदार होते हैं तथापि सभी शिक्षक निर्धारित अवधि में अपने दायित्वों का निर्वहन कर रहे हैं अथवा नहीं यह देखना उस संस्था के संस्था प्रमुख की जिम्मेदारी होती है। सामुहिक जिम्मेदारी के सिद्धांत के अंतर्गत अगर किसी संस्था में किसी व्यक्ति के द्वारा अपना कार्य नहीं किया जाता तब भी उस व्यक्ति के कार्यों के लिये जिम्मेदार उस संस्था के प्रमुख को ही माना जाता है क्योंकि किसी संस्था के किसी व्यक्ति द्वारा अपने दायित्वों का निर्वहन न करना यह तभी संभव होता है जब उस संस्था के प्रमुख उस व्यक्ति के कार्यों के प्रति उदासीनता बरतें। जज महोदय इस कारण व्यक्तिगत जिम्मेदारी होने के बावजूद भी सामूहिक जिम्मेदारी के सिद्धांत के अंतर्गत संस्था प्रमुखों पर जो कार्यवाही की गई है वह सही है।

इसी प्रकार लर्निंग आउटकम्स की प्राप्ति सुनिश्चित करने के लिये विभागीय तंत्र को विकसित और मजबूत किया जा रहा है जिसमें समाज में जागरूकता पाठक्रमों में संशोधन शिक्षकों की विषयवार भर्ती व प्रशिक्षण तथा अवलोकन व निरीक्षण की प्रक्रिया की निरंतरता इत्यादि सम्मिलित है।

जायसवालजी के द्वारा अपना पक्ष रखने के बाद कश्यपजी ने कहा. जज महोदय चाहे कोई भी व्यवस्था हो उस व्यवस्था से संबंधित कार्यों को करने के लिये अलग अलग व्यक्ति होते हैं। यहां तक की कई कार्यों को करने के लिये अलग से विशेषज्ञ व्यक्तियों की नियुक्ति की जाती है। अब ऐसी परिस्थिति में जहां कार्यों को करने के लिये विशेषज्ञ व्यक्ति की आवश्यकता हो उसी कार्य को सामान्य लोगों से गुणवत्तापूर्ण संपन्न कराने की सोचना भी गलत है। जैसे स्कूलों में अलग अलग विषय के लिये अलग अलग विषय विशेष शिक्षक की आवश्यकता होती है। अब अगर गणित विषय का अध्यापन अन्य विषय समूह के शिक्षकों से कराया जाये और उस पर यह अपेक्षा की जाये की उस विषय की गुणवत्तापूर्ण लर्निंग आउटकम्स की प्राप्ति हो तब यह सोचना भी गलत है और केवल इस आधार पर की संस्था प्रमुखों द्वारा शिक्षकों पर निगरानी नहीं रखी

गई सामुहिक जिम्मेदारी के सिद्धांत का पालन करना भी गलत ही है। जब कार्य व्यक्तिगत आधार पर किये गये हों तब कार्यवाही भी व्यक्तिगत होनी चाहिये।

इसी प्रकार लर्निंग आउटकम्स की प्राप्ति सुनिश्चित करने हेतु जब तक व्यवस्था से जुडी सभी पहलुओं को अपेक्षानुरूप विकसित व मजबूत न कर दिया जाये तब तक किसी भी प्रकार की कार्यवाही को मैं उचित नहीं मानता।

जज महोदय अंत में मैं यही कहना चाहूंगा कि अभी तक दस बिन्दुओं पर शिक्षक समुदाय के द्वारा मेरी ओर से जो जो बातें आपके समक्ष रखी गई है उस पर आप गंभीरता से विचार करते हुये सबसे पहले अब तक के की गई सभी कार्यवाही को शून्य घोशित करने की कृपा करें और आगे भी इस आधार पर कोई कार्यवाही न की जाये इसे भी सुनिश्चित करें।

अपनी बात रखने के बाद कश्यप जी अपने जगह पर आकर बैठ गये। उनके बैठते ही अदालत कक्ष में सन्नाटा छा गया। सभी के मन में यही बात चल रही थी कि दोनों पक्षों को सुनने के बाद पता नहीं जज महोदय अपना क्या अभिमत बना पाते हैं। सभी की आंखे बंद थी और मन ही मन कुछ लोगों को छोडकर यही प्रार्थना कर रहे थे कि जीत उन्हीं की हो। जैसे ही जज महोदय ने बोलना शुरू किया सभी का ध्यान उन्हीं की ओर केन्द्रित हो गया। जज महोदय ने कहा दोनों पक्षों की सुविधाओं को ध्यान में रखते हुये इस प्रकार की सुनवाई दस बिन्दुओं पर केन्द्रित कर दी गई थी। दोनों पक्षों के द्वारा इन दस बिन्दुओं पर अपना अपना पक्ष अपने अपने दृष्टिकोण के अनुसार रखा गया। दोनों पक्षों को सुनने के बाद मैं यह निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि किसी भी बिन्दु पर किसी एक पक्ष द्वारा प्रस्तुत तर्क न तो पूर्ण रूप से सही है और ही पूर्ण रूप से गलत। कहने का तात्पर्य यह है कि प्रत्येक बिन्दु पर दोनों पक्षों के द्वारा प्रस्तुत तर्कों में कुछ न कुछ सच्चाई अवश्य है। ऐसी परिस्थिति में यह

नहीं कहा जा सकता कि शासन द्वारा शिक्षकों पर जो कार्यवाही की गई है वह सही है या गलत। इस प्रकार के प्रकरण में सही अथवा गलत का निर्धारण तभी किया जा सकता है जब प्रकरण से संबंधित हर बातें स्पष्ट हो जो कि इस प्रकरण में नहीं है।

अतः यह अदालत शासन को यह निर्देश देती है कि वह इस प्रकरण में आये सभी भ्रमपूर्ण परिस्थिति को स्पष्ट बनाने के लिये प्रयास करें और इसके लिये अलग अलग प्रकार के समिति बनाकर कार्य करें । साथ ही यह भी निर्देश देती है कि जब तक समिति द्वारा अपनी अनुशंसा स्पष्ट शब्दों में अदालत के सामने नहीं रखा जाता तब तक शिक्षकों के उपर की कार्यवाही को तत्काल शून्य घोशित करें।

इसी प्रकार शिक्षक समुदाय को भी यह अदालत निर्देश देती है कि व्यवस्था से संबंधित कुछ अस्पष्ट बातों का जानबूझकर अपने हित में लाभ लेने का अनावश्यक प्रयास न करते हुये अपने जिम्मेदारियों कापूर्ण लगन से निर्वहन करें।

इसके लिये यह अदालत दोनों पक्षों को अपना प्रदर्शन सही साबित करने के लिये 6 माह का समय देता है और तब तक इस प्रकरण पर अपना फैसला सुरक्षित रखता है।

जज महोदय के उठने के बाद जब शिक्षकों का समूह कक्ष से बाहर निकला तब अधिकांश शिक्षकों के मन में एक ही प्रश्न घूम रहा था कि हम जीते या हारे? समूह में कुछ ऐसे भी शिक्षक थे जिन्हें फैसला सुरक्षित रखे जाने का अर्थ भलीभांति मालूम था। जब सभी शिक्षक कक्ष से बाहर निकलकर प्रांगण में आये तब उन्हीं में से एक ने अपने वकील कश्यपजी से पूछा. कश्यपजी जज महोदय के फैसले को हम किस रूप में देखें। अपनी जीत या हार?

कश्यपजी. जज महोदय के फैसले में एक बहुत ही गुढ रहस्य छिपा हुआ है और वह दोनों पक्षों के लिये यह है कि अगर दोनों पक्षों में से कोई भी पक्ष अपना कार्य अस्पष्टता के साथ करेंगे तब उनकी जीत भी हार में बदल जायेगी और अगर दोनों पक्ष अपना अपना कार्य लगन व निष्ठा के साथ करेंगे तब हार भी जीत हो जायेगी।

अभी फिल हाल तो आप लोग यह मानकर चलिये की फैसला हमारे पक्ष में आया है क्योंकि एक तो इस फैसले से अब तक जो कार्यवाही हुई वह तुरंत रदद हो गया और दूसरा यह की अब यह शासन का कार्य है कि वह समिति के माध्यम से अस्पष्ट बिन्दुओं को स्पष्ट करें।

कश्यपजी के बातों से आश्वस्त होने पर सभी शिक्षकों के चेहरों पर प्रसन्नता की लहर दौड गई और अब उनमें से ऐसा कोई भी नहीं था जो वहां थोडी देर भी और रूकना चाहता हो। सबके मन में यही ईच्छा हो रही थी कि वे कितना जल्दी अपना घर पहुंचे और अपने परिवार के साथ इस आनंद को बांटे। सभी की गाडी अपने अपने घरों की ओर रप्तार के साथ बढने लगी।

(31)

गांव में सुबह से ही तिवारीजी के घर के पास बैंड बज रहा था। बच्चे बैंड की धुन में नाच रहे थे। लोग एक एक कर तिवारीजी के यहां जाकर उन्हें जीत की बधाई दे रहे थे और तिवारीजी उन्हें चाय नाश्ता कराके विदा करते जा रहे थे। तिवारीजी के घर का माहौल ऐसा था जैसे किसी की शादी हो रही हो।

शुक्लाजी भी जानकी और मनीष के साथ तिवारीजी के यहां जाने के लिये निकले। शुक्लाजी के लिये तिवारीजी के यहां जाना जरूरी नहीं था क्योंकि वे दोनों तो अदालत कक्ष के बाहर ही फैसला सुनाते ही एक दूसरे को जी भर के बधाई देते हुये आपस में गले मिल चुके थे किन्तु आज का जाना तो जानकी और मनीष के जिदद के कारण हो रहा था। दोनों कल रात से ही शुक्लाजी को बोल चुके थे कि जैसे ही सुबह होगी वे सब तिवारीजी के यहां चलेंगे। शुक्लाजी अपने तरफ से बोला भी था कि इतनी जल्दी क्या है? फिर कभी चले चलेंगे पर जानकी नाराज होते हुये बोली थी. मनीष के पिताजी आप परिस्थिति की नजाकत को समझते ही नहीं। अरे पुरूषों का क्या है? आप लोग तो जहां कहीं भी मिले वहीं औपचारिकता पूरी कर लेते हैं। पर हम महिलायें ऐसे ही औपचारिकता पूरी नहीं कर सकते। इसके लिये हमें घर जाना ही पडेगा और ओ भी समय पर। आप नहीं जानते आप लोग चाहे लाख बार मिल लो पर जब तक घर की महिलायें आपस में नहीं मिल लेती तब तक मिलने का कोई महत्व ही नहीं होता। जानकी की बात सुनकर शुक्लाजी ने भी चलने के लिये हामी भर दी।

शुक्लाजी अपने परिवार के साथ जिस समय तिवारीजी के यहां पहुंचा उस समय वहां आने जाने वालों की काफी भीड थी। शुक्लाजी तो तिवारीजी के पास जाकर बैठ गये और जानकी तथा मनीष अंदर कमरे की ओर चले गये।

लोगों का आना जाना लगा रहा और शुक्लाजी भी लोगों को चाय नाश्ता देने में तिवारीजी का हाथ बटाने लगा। थोडी देर बादवहां मनोहर और जुगल भी आये। तिवारीजी ने उन दोनों को आदर सहित बैठाया और नाश्ते का प्लेट मंगाकर उन्हें दिया। नाश्ता करते करते मनोहर ने तिवारीजी से कहा. चलो तिवारीजी आप लोगों के कष्ट का दिन बीत गया।

तिवारीजी. हां मनोहर यह तीन चार माह का समय कैसे कटा है इसे हम लोग ही जान सकते हैं।

मनोहर. हां तिवारीजी पर एक बात ध्यान में रखना की आगे भी ऐसी परिस्थिति पुन निर्मित न हो क्योंकि इस प्रकरण में शुरू से लेकर अंत तक मैंने महसूस किया है कि जज महोदय ने काफी उदारता दिखाई है और कही इसकी पुनरावृत्ति होती है तब सख्त सजा मिलेगी यह मानकर चलो।

इससे पहले की तिवारीजी कुछ बोलता जुगल ने कहा. मनोहर भाई अभी पूरा फैसला भी नहीं आया है। अभी तो फैसला सुरक्षित है। पता नही कल क्या हो जाये?् पर तिवारीजी एक बात तो मैं अवश्य कहूंगा अभी से यह सब ताम झाम नहीं करना था। अंतिम फैसला आने के बाद यह सब कुछ होता तब ज्यादा आनंद मिलता। तिवारीजी को जुगल की यह बात अच्छो तो नहीं लगा पर जवाब भी नहीं दिया।

तिवारीजी को शांत बैठा देखकर मनोहर ने कहा. तिवारीजी आप लोगों के इस प्रकरण ने पूरे शिक्षक समुदाय और गांव वालों को एक कर दिया। चलो कम से कम यह एक बच्छी बात तो हुई।

तिवारीजी. हां मनोहर यह प्रकरण मेरे लिये बहुत बडा सबक लेकर आया। इससे बहुत कुछ सीखने को मिला। वैसे देखा जाये तो हमारे जीवन में घटित होने वाली हर घटना हमें कुछ न कुछ सकारात्मक संदेश दे जाती है। जरूरत है तो बस उन संदेशों को पहचानने और समझने की। अगर हम उन संदेशो को

समझ गये तो समझो जीवन धन्य हो गया और अगर न समझे तो जीवन ईधर.उधर की बातों में व्यर्थ ही कट जायेगा।

इससे पहले कि तिवारीजी अपनी बात पूरी कर पाता शुक्लाजी वहां बैठते हुये कहा. तिवारीजी काश। सभी लोग यह बात समझ पाते तो यह जीवन न जाने और कितना सुंदर हो जाता।

मनोहर और जुगल दोनों शुक्लाजी का अभिप्राय समझ गये थे और उस क्षण उन्हें लगा कि शुक्लाजी सच कह रहें हैं। अपने अपने कुर्सी से उठते हुये दोनों एक साथ तिवारीजी से बोले. अच्छा तिवारीजी अब जाने की अनुमति दें और आप सभी शिक्षक समुदाय को एक बार पुनः इस जीत की हार्दिक शुभकामना।

दोनों के जाने के बाद शुक्लाजी और तिवारीजी वहीं बैठे.बैठे 16 जून से आरंभ होने वाली शिक्षा सत्र की आवश्यक तैयारी पर बात करते रहे। इस बीच अब लोगों का आना.जाना भी कम हो गया था। भीतर से जानकी और मनीष दोनों बाहर निकलकर शुक्लाजी को घर चलने का ईशारा कियें। शुक्लाजी तिवारीजी से गले मिलकर अपने घर की ओर रवाना हुए।।

बैंड अब भी बज रही थी। बच्चे अब भी नाच रहे थे। जैसे जैसे सूरज की रोशनी बढती गई वैसे वैसे शिक्षक समुदाय के मन में खुशियां भी बढती गई।

।। समाप्त ।।